हज़रत
यूसुफ़

हज़रत यूसुफ़

क़ैद से महल तक

आर. बख़्त

hazrat yūsaf. qaid se mahal tak

Hazrat Yusaf. From Prison to the Palace

by R. Becht
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

तआरुफ़

हमारी नज़र से शाज़ो-नादिर ही कोई ऐसी किताब गुज़री है जिसका मुसन्निफ़ तारीख़ के ख़ुश्क वाक़ियात में ज़िंदगी फूँकने और हमारे सामने जीती-जागती तस्वीर पेश करने में कामयाब हुआ हो। ताहम यह किताब इसी क़िस्म की एक कामयाब और क़ाबिले-तारीफ़ काविश है।

हज़रत यूसुफ़ के हालाते-ज़िंदगी की तफ़सीलात तौरेत की पहली किताब पैदाइश के बाब 25 ता 50 में दर्ज हैं।

लरज़ाख़ेज़ आग़ाज़

एक बड़ा क़ाफ़िला वस्ती कनान में शहर सिकम की जानिब रवाँ-दवाँ था। क़बीले के पुर-वक़ार सरदार हज़रत याक़ूब की निगाहें क़ाफ़िले के अनगिनत भेड़-बकरियों, गधों और ऊँटों पर लगी थीं ताकि सफ़र में कोई ख़लल पैदा न हो। गधों और बैलगाड़ियों पर सवार बाल-बच्चे भी बराबर उनकी नज़र में थे। क़ाफ़िले में उनके ग़ुलाम और नौकर-चाकर भी शामिल थे जिनकी तरबियत पर उन्हें नाज़ था। और अब तो वह उनके घराने का एक हिस्सा बन चुके थे। इसके अलावा उनके दस बड़े बेटे भी उनके शरीके-सफ़र थे। बाप की उन पर कड़ी नज़र रहती थी क्योंकि वह बिलकुल अपनी माओं पर गए थे। जवानी में भी उनकी आपस में नहीं बनती थी। सरदार ने सरद आह भरी। उन्होंने तो कभी दो बीवियों और दो हरमों की ख़्वाहिश बल्कि तसव्वुर भी नहीं किया था। लेकिन हालात ने कुछ ऐसा रुख़ इख़्तियार किया कि उन्हें मजबूरन यह सब कुछ देखना पड़ा।

शाम के साय गहरे होने लगे। थका-माँदा सूरज धीरे धीरे पहाड़ की चोटियों की ओट में छुपने लगा। सारी फ़िज़ा शफ़क़-रंग होती गई। क़ाफ़िला अब भी रवाँ-दवाँ रहा। चेहरों पर तमन्नाओं, उमंगों और वालिहाना मुसर्रतों की चमक फूटने लगी थी। उनके क़दम आबाओ-अजदाद की उस सरज़मीन पर पड़ रहे थे जिसके ख़्वाब वह बरसों से देखते आए थे।

“अम्मी जान! यह वही रास्ता है ना जहाँ से बड़े दादा-ाब्बू (हज़रत इब्राहीम) भी आए थे?” यह आवाज़ हज़रत याक़ूब के छोटे बेटे हज़रत यूसुफ़ की थी। “उनके भी बहुत-से रेवड़, ग़ुलाम और ख़ैमे वग़ैरा थे ना? उनके लिए तो यह अजनबी मुल्क था लेकिन बाबा तो यहीं पैदा हुए। मैं और आप पहले यहाँ कभी नहीं आए। ज़रा सोचिए अम्मी जान! बड़े दादा-ाब्बू ने अपना पहला ख़ैमा सिकम में ही गाड़ा था। इसी सरज़मीन पर जहाँ से आज हम गुज़र रहे हैं!”

हज़रत याक़ूब ऊँट पर सवार उस बैलगाड़ी के पास से गुज़रे जिस में उनकी पहली बीवी लियाह सवार थी। उसके साथ उनकी इकलौती बेटी दीना भी बैठी थी। दोनों अपनी लौंडी ज़िलफ़ा से बातें करने में मसरूफ़ थीं। ज़िलफ़ा हज़रत याक़ूब की हरम थी। ज्योंही दीना की नज़र बाप पर पड़ी वह हाथ हिलाते हुए बोली, “अब्बा! पड़ाव जल्दी ही डालेंगे ना?”

बाप ने बड़ी शफ़क़त से हाँ में सर हिलाया। अपनी नौजवान बेटी को देखकर उन्हें एहसास हुआ कि वह कितनी ख़ूबसूरत है। साथ ही

निस्वानी आवाज़ें उभरीं, “सिकम में शापिंग करने का कितना मज़ा आएगा!”

हज़रत याक़ूब की दाया दबोरा के लिए यह सफ़र बड़ा तकलीफ़दिह था। कुछ उम्र का तक़ाज़ा, कुछ रास्ते की तवालत और ना-हमवारी। मुसलसल झटकों से उसका जोड़ जोड़ दुख रहा था। हज़रत याक़ूब ने उसके चेहरे पर करब के आसार देखते हुए बड़ी मुहब्बत से उसकी हिम्मत बँधाई। दबोरा ने क़ाफ़िले के पेशवा के चेहरे पर निगाह डाली तो एक ज़िंदा-दिलाना मुसकराहट उसके लबों पर फैल गई। वह आज भी उसे वही नन्हा-मुन्ना-सा याक़ूब लगा जिसे वह कभी डाँटती और कभी प्यार से सीने से लगा लिया करती थी। जिसे उसने अपनी गोद में खिलाया था। यह उसकी तरबियत ही का नतीजा तो था कि उँगली पकड़कर पाँव पाँव चलनेवाला वही मुन्ना आज इतने बड़े क़ाफ़िले का सालार था। वह बड़ी थकावट से काँपती हुई उँगली उठाकर थरथराती आवाज़ में बोली, “मेरी जान! हम आज फिर अपने वतन की ज़मीन पर चल रहे हैं। तुम्हें कैसा लगता है बेटे?”

“बहुत अच्छा! बहुत ही अच्छा माँ! यह वही जगह तो है जहाँ अल्लाह चाहता है कि हम रहें। लेकिन असल चीज़ यह ज़मीन नहीं है जिसके हम वारिस होंगे बल्कि ज़िंदा ख़ुदा की वह रिफ़ाक़त जो हमें हासिल होगी।”

हज़रत याक़ूब की यह बातें सुनकर बूढ़ी आँखें चमकने लगीं। कल का वह कोमल-सा बच्चा आज कैसी हिकमत की बातें कर रहा था।

सिर्फ़ दबोरा ही जानती थी कि उसकी ज़िंदगी में अल्लाह ने कितना बड़ा इनक़लाब पैदा किया है। अब वह पहला-सा याक़ूब नहीं रहा था बल्कि निहायत सुलझा हुआ नेक-फ़ितरत जवान था जिससे अल्लाह राज़ी था। उसने एक सरद आह भरी, "मेरे बच्चे! मैं तो इतना जानती हूँ कि यह मेरा आख़िरी सफ़र है। ख़ुदा का शुक्र है कि मैंने मरने से पहले कनान की सरज़मीन एक बार फिर देख ली है।"

हज़रत याक़ूब ने बुढिया की हिम्मत बढ़ाई, "अब तो आराम करने का वक़्त आ गया है। बस ज़रा सिकम से बाहर कुछ ज़मीन ख़रीद लूँ तो फिर वहीं अपने ख़ैमे गाड़ लेंगे।"

यह सुनकर दबोरा की आँखें हैरत से फटी की फटी रह गईं। वह सोचने लगी, "यह याक़ूब ख़ुदा के वादे पूरे होने का इंतज़ार नहीं कर सकता जो अभी से ज़मीनें भी ख़रीदना शुरू कर दीं?"

हज़रत याक़ूब की बातों की भनक हज़रत यूसुफ़ के कानों में भी पड़ गई थी। उन्होंने बैलगाड़ी में ही ज़ोर ज़ोर से उछलना चीखना शुरू कर दिया, "बाबा! बाबा! जब आप ज़मीन ख़रीदने सिकम जाएँगे तो मैं भी आपके साथ ज़रूर चलूँगा।"

हज़रत याक़ूब के पहलौठे बेटे रूबिन ने अपने छोटे भाई को खा जानेवाली नज़रों से घूरा, "अब्बा के पास तुम्हारे साथ सर खपाने के अलावा भी करने को बहुत-से काम हैं।"

हज़रत यूसुफ़ और उनकी माँ राख़िल रूबिन की आवाज़ सुनते ही सहम गए। उनके वुजूद में सरद लहर दौड़ गई। हज़रत याक़ूब राख़िल को दिलो-जान से चाहते थे। लेकिन उनकी यही मुहब्बत राख़िल की ज़िंदगी का अज़ाब बनकर रह गई थी। उसे सरदार की मंज़ूरे-नज़र होने की बड़ी भारी क़ीमत अदा करना पड़ी थी।

राख़िल ने सोचा, "मेरा अपनी बड़ी बहन लियाह से रवैया कितनी मरतबा ग़ैरहमदर्दाना रहा है। और फिर जब लियाह से एक के बाद एक बेटा पैदा हुआ तो अपने बाँझपन पर कुढ़ कुढ़कर मेरी ज़िंदगी कितनी तलख़ हो गई। इस करब ने मुझे कितना बेबस कर दिया। मैं मायूस होकर अल्लाह के दर पर कितनी मरतबा झुक गई, रोई, गिड़गिड़ाई और सच्चे दिल से दुआएँ माँगती रही। तब अल्लाह को मुझ पर रहम आ गया और मुझे एक चाँद-सा बेटा अता किया—हज़रत यूसुफ़!"

इस बच्चे की पैदाइश ने उसकी ज़िंदगी ही बदल डाली थी। वह मग़रूर, शाकी, कीनापरवर और दिलगीर राख़िल अब संजीदा, साबिर, मुख़लिस और ज़िंदादिल राख़िल बन चुकी थी। उसने अपना दिल रब के हुज़ूर खोलकर रख दिया था।

राख़िल ने सोचा, "यूसुफ़ की पैदाइश के वक़्त इंतहाई तकलीफ़ की घड़ी में लियाह ने कितनी मुहब्बत से मेरा साथ दिया। लियाह जो मेरी बड़ी बहन, मेरा अपना ख़ून है। मैं कितनी नादान थी। मैं एक हीरे को सिर्फ़ इसलिए पत्थर समझकर ठुकराती रही कि वह मेरी सौत थी। हसद

ने मुझे अंधा कर दिया था। अब जो मेरी आँखें खुलीं तो मैंने जाना कि लियाह तो मेरे हक़ में फ़रिश्ता है। ख़ैमाबस्ती का सारा इंतज़ाम जिस महारत से वह सँभाले हुए है किसी और के बस का रोग नहीं।"

लेकिन अफ़सोस सद अफ़सोस! नफ़रत का जो बीज सालों के मुसलसल झगड़ों के बाइस बोया जा चुका था अब हज़रत याक़ूब के बेटों के दिलों में परवान चढ़ रहा था। उन्हें अपने बाप का राख़िल और चहेते बेटे यूसुफ़ के साथ ख़ैमे में रहना एक आँख न भाता था, जब कि राख़िल फिर उम्मीद से थी।

रूबिन बुड़बुड़ाता हुआ अपने भाई शमाऊन के पास आया। "देखा तुमने! जुमा जुमा आठ दिन पैदाइश को हुए और साहिबज़ादे के लिए अब्बा ने एक उस्ताद भी रख लिया है। बड़े बेटे की तालीमो-तरबियत का ख़याल नहीं आया और कल के इस छोकरे की पढ़ाई की इतनी फ़िकर।"

शमाऊन ने प्यार से थपथपाते हुए उसे राम करना चाहा "ओहो! उस्ताद रख लिया तो क्या हुआ। भई पढ़ लेने दो उसे। हाँ एक बात सुनो, अब्बा की ज़मीन ख़रीदनेवाली बात सुनकर सच मुझे भी बड़ी ख़ुशी हुई है। इसका मतलब है कि हम सिकम में रहेंगे। है ना?"

जब क़ाफ़िला सिकम के क़रीब पहुँच गया तो सब की ख़ुशी का कोई ठिकाना ही न था। हज़रत याक़ूब ने वहीं रुक जाने का फ़ैसला किया और शाह-बलूत के एक दरख़्त की तरफ़ इशारा करते हुए बोले, "जब

मेरे दादा इब्राहीम हारान से आए थे तो उन्होंने इसी जगह अपने ख़ैमे गाड़े थे। यहीं उन्होंने एक मज़बह बनाया और ज़िंदा ख़ुदा की परस्तिश की थी।"

हज़रत यूसुफ़ की नज़रें सिकम के दोनों जानिब वाक़े बड़े बड़े पहाड़ों पर गड़ी थीं। वह उनकी बुलंदी से बहुत मरऊब हो रहे थे। आख़िर वह बोल ही पड़े, "बाबा! क्या दादा अब्बा ने इन पहाड़ों को भी देखा था? कितने बड़े बड़े पहाड़ हैं। बाबा! वह देखो, इतने बड़े बड़े पहाड़ तो ख़ुदा ही बना सकता है। है ना बाबा?" उनकी आँखों में संजीदगी झलकने लगी थी। बाप की तरफ़ देखते हुए बोले, "मैं भी अल्लाह से बहुत प्यार करता हूँ। ...लेकिन वह तो मझसे कभी भी बात नहीं करता।"

बच्चे की बातें सुनकर हज़रत याक़ूब का दिल ख़ुशी से भर गया। उन्हें अपने बेटे पर बेतहाशा प्यार आया और उसका माथा चूमते हुए कहा, "तुम अल्लाह से बातें करना चाहते हो? अगर वाक़ई ऐसा है तो वह ज़रूर तुम्हारी ज़िंदगी में आ जाएगा। बेटे, ख़ुदा में तुम्हें सब कुछ मुहैया होगा।"

"सच बाबा?" हज़रत यूसुफ़ बेसाख़्ता अपने बाप से लिपट गए।

अभी क़ाफ़िले ने दम भी न लिया था कि मक़ामी लोगों का हुजूम उनके गिर्द आ खड़ा हुआ। वह इन अजनबियों को हैरत से तकने लगे। हुजूम की तजस्सुस-भरी निगाहें नए आनेवालों का जायज़ा लेती रहीं। सवालों की बौछाड़ उन पर पड़ गई। सिकम के बारे में मालूमात हासिल

की गईं और बाहमी दिलचस्पी के उमूर पर गुफ़्तगू शुरू हुई। इतने तवील और थका देनेवाले सफ़र के बाद गप-शप में ख़ासा लुत्फ़ आ रहा था। ख़ुसूसन ज़नाना तबक़े की ख़ुशी का तो कोई ठिकाना ही न था। जब से उन्होंने शहर में बिकनेवाले बुंदों, हारों, दोपट्टों और शालों के बारे में सुना था सारी ख़ैमाबस्ती में गुफ़्तगू का बाज़ार गरम था।

हज़रत याक़ूब ने यूसुफ़ का हाथ थाम रखा था। उनके छह बड़े बेटे उनके पीछे पीछे चले जा रहे थे। बापदादा की सरज़मीन पर उनके क़दम बड़े फ़ख़्र से पड़ रहे थे। हज़रत याक़ूब के वहमो-गुमान में भी न था कि मुसर्रत के इन चंद लमहों के पीछे कैसा तूफ़ान छुपा हुआ है।

सिकम के बड़े बूढ़ों ने शहर के दरवाज़े से इन अजनबियों को बड़े मशकूक अंदाज़ में देखा।

हज़रत याक़ूब और उनके बेटों ने एहतरामन झुकते हुए कहा, “तुम पर सलामती हो।”

“देवता तुम पर रहम करें,” जवाब मिला।

“मुझ पर एक इनायत कर दीजिए। मेरे हाथ शहर से बाहर की कुछ ज़मीन फ़रोख़्त कर दीजिए ताकि मैं वहाँ अपने ख़ैमे गाड़ सकूँ।”

एक डाढ़ीवाले बुज़ुर्ग ने नज़र डालते हुए पूछा, “ऐ अजनबी! तुम हो कौन?”

“मैं बिलकुल ही अजनबी नहीं हूँ। मेरे दादा हज़रत इब्राहीम ने पहले भी सिकम के बाहर अपने ख़ैमे गाड़े थे।” यह बात कहते हुए हज़रत याक़ूब का सर फ़ख़्र से तन गया।

“मेरा बूढ़ा बाप इसहाक़ हबरून में रहता है। मैं दूर अपने मामूँ के पास हारान में रहता था और अब घर लौटकर जा रहा हूँ। मेरा जुड़वाँ भाई एसौ अदोम में अपने बा-रसूख़ घराने के साथ रहाइश-पज़ीर है।”

वह लोग उसकी बातों से बहुत मुतअस्सिर और मरऊब हुए। उन में से एक दो तो ज़िंदा ख़ुदा की इबादत करनेवाले इब्राहीम के बारे में जानते भी थे। डाढ़ीवाले बुज़ुर्ग ने हज़रत इसहाक़ के मुताल्लिक़ भी सुन रखा था—वह इसहाक़ जो कि अमन के अलम-बरदार थे। एक मरतबा उनके कुएं में इत्तिफ़ाक़न रेत भर दी गई थी, तो भी उन्होंने झगड़ा नहीं किया था। क़सबे के बुज़ुर्गों के तरजुमान ने उनसे दरियाफ़्त किया, “क्या तुम भी इब्राहीम के ख़ुदा की परस्तिश करते हो?”

“हाँ! बेशक! हम भी उसी के ख़ादिम हैं।” हज़रत याक़ूब की आवाज़ में एतक़ाद की पुख़्तगी थी।

तरजुमान ने धीरे से कहा, “हर शख़्स समझता है कि सिर्फ़ उसका अपना देवता ही अच्छा है।” फिर ठंडी साँस खींचकर बोला, “लेकिन जब इन देवताओं की मदद की ज़रूरत होती है तो सब के सब चुप साध लेते हैं। इन सब पर हमारी फ़रियाद का कुछ असर नहीं होता।”

हज़रत यूसुफ़ की आँखें अपने बाप पर जमी हुई थीं जिन्होंने ज़ोर से सर हिलाकर कहा, "बुज़ुर्गो! जिस ख़ुदा की परस्तिश मैं करता हूँ वह ज़िंदा है। वह कलाम करता है। वह मेरे दादा इब्राहीम से हमकलाम हुआ। उसने मेरे बाप इसहाक़ से कलाम किया और ख़ुद मझसे भी।"

लोगों की दिलचस्पी उनकी बातों में बढ़ने लगी। "ऐ मुअज़्ज़ज़ सरदार, तशरीफ़ रखिए और आप नौजवान भी इसे अपना ही घर समझें।" फिर तरजुमान हज़रत याक़ूब की तरफ़ झुकते हुए बोला, "जब अल्लाह आपसे कलाम करता है तो कैसा लगता है?"

हज़रत याक़ूब को इस सवाल का जवाब देने में मुश्किल पेश आ रही थी। आख़िर उन्होंने तसलीम करते हुए कहा, "इसे बयान करना तो बहुत ही मुश्किल है लेकिन एक बात ज़रूर है कि जब अल्लाह किसी से हमकलाम होता है तो इससे उसकी पूरी ज़िंदगी मुतअस्सिर होती है। इनसान जान जाता है कि अल्लाह ही वह वाहिद हस्ती है जो उसके दिल की बात को समझता है। उसे इनसान से मुहब्बत है। वह उसकी फ़िकर करता और हर लिहाज़ से उसकी बेहतरी चाहता है।"

हज़रत याक़ूब ने देखा कि उनका एक एक लफ़्ज़ हज़रत यूसुफ़ के दिल में उतर रहा है। फिर वह बड़े एतमाद से कहने लगे, "ख़ुदा पाक है। जो उसकी इताअत करना चाहता है उसके लिए ज़रूरी है कि वह ख़ुद को पूरी तरह उसके सपुर्द कर दे ताकि वह उसकी ज़िंदगी को बदले।"

इस पर वह बुज़ुर्ग ना-गवारी से कहने लगे, “बस, बस! हमें इससे कोई वास्ता नहीं। हमारा ईमान है कि देवताओं ने इनसान को फ़ितरतन निहायत कमज़ोर बनाया है। इसलिए हम जैसे-तैसे ज़िंदगी गुज़ार लेते हैं।”

हमोर के बेटों से ज़मीन हासिल करने में हज़रत याक़ूब को कुछ मुश्किल पेश न आई। सिकम के बादशाह ने जो ज़मीन का मालिक था उनकी बहुत मदद की। इस वक़्त तक रात हो गई थी। लिहाज़ा उन्होंने ख़ैमे गाड़ लिए और औरतें खाना पकाने में मसरूफ़ हो गईं। रात की तारीकी में लपकते शोलों का मंज़र बड़ा दिलफ़रेब था।

लियाह अपनी लौंडियों के साथ लज़ीज़ खाने पकाने में मसरूफ़ थी। इतना अरसा फ़ारिग़ रहने के बाद उसे काम करने में बहुत लुत्फ़ आ रहा था। दीना और ज़िलफ़ा चक्की में गंदुम पीस रही थीं। उतने में राख़िल और उसकी लौंडी बिलहाह ने दूध बिलोकर मक्खन निकाल लिया था। खानों की मिली-जुली ख़ुशबू ने हज़रत यूसुफ़ की भूक को और चमका दिया था।

दीना ने मुसकराते हुए कहा, “छोटे भैया, मुझे छुपाकर ही तुम्हें खाने को कुछ देना पड़ेगा। अगर तुम्हारे भाइयों ने अपने से पहले तुम्हें खाते देख लिया तो वह तो तुम्हारी पिटाई कर देंगे।”

लियाह ने चुपके से ख़ुश्क खजूरें उसकी हथेली में थमा दीं। “इनसे तुम्हारी भूक कुछ कम हो जाएगी।”

हज़रत यूसुफ़ को अपनी ख़ाला से बहुत मुहब्बत थी। वह उसे इस क़दर चाहते थे कि उसकी चुंधी आँखें भी उन्हें बहुत अच्छी लगती थीं। खजूरें लेकर वह बहुत ख़ुश हो गए और शुक्रिया अदा करते हुए उछलते-कूदते बाहर निकल गए। उन्होंने लियाह को यह कहते सुना, “राख़िल, बहुत प्यारा बच्चा है तेरा। तूने बहुत अच्छी तरबियत की है इसकी। बड़ा होकर कुछ बनेगा यह। और अब इसके बाप की तरबियत इसकी शख़्सियत में मज़ीद निखार पैदा करेगी। कौन जाने तेरा बेटा क्या से क्या बन जाए।”

लियाह ने सरद आह भरी और फिर अपने उजड और बदतमीज़ लड़कों के बारे में सोचने लगी।

इतने में हज़रत यूसुफ़ की आवाज़ सुनाई दी, “माँ, मैं दबोरा के पास जा रहा हूँ।”

दबोरा के ख़ैमे में रौशन चराग़ की किरनें छिन छिनकर छत पर पड़ रही थीं। हज़रत यूसुफ़ ने बड़े मुहतात अंदाज़ में धीरे से पुकारा ताकि उसकी आवाज़ सुनकर बुढिया कहीं डर न जाए, “मैं हूँ—यूसुफ़।”

इतने तवील सफ़र के बावुजूद दबोरा के चेहरे पर थकावट के कोई आसार न थे। यह देखकर यूसुफ़ की हिम्मत बढ़ी और शरमाकर बोला,

“दबो! मुझे उस वक़्त के बारे में बताओ जब आप पहली बार कनान में आई थीं।”

इस सवाल से झुर्रियों-भरे चेहरे पर एक उदास-सी मुसकराहट फैल गई। वह वक़्त उसे एक बीता हुआ ख़्वाब मालूम होने लगा। उसने अपने ख़ुश्क होंटों पर ज़बान फेरी। “उस वक़्त जानते हो मैं बिलकुल जवान थी—बिलकुल जवान और हसीन—और हारान में तुम्हारी दादी रिबक़ा की दाया थी। रिबक़ा निहायत ख़ूबसूरत लड़की थी। बस अब मैं तुम्हें क्या बताऊँ! जो सफ़र हमने तुम्हारे परदादा हज़रत इब्राहीम के वफ़ादार ख़ादिम इलियज़र और उसके साथियों के हमराह किया वह क्या सफ़र था! हम सीधे हबरून की तरफ़ चल पड़े।”

हज़रत यूसुफ़ मचल उठे, “मैं भी उसी रास्ते से आया हूँ ना, है ना? किसी दिन हम दादा इसहाक़ से मिलने हबरून भी जाएँगे।”

“बहुत समझदार है मेरा मुन्ना। दुख तो इस बात का है कि तुम्हारी दादी-अम्माँ रिबक़ा इस दुनिया से जा चुकी हैं। वह तुमसे मिलकर कितनी ख़ुश होतीं! ... जब हम ऊँटों पर सवार यहाँ पहुँचे तो शाम का वक़्त था और फिर अचानक दूर खेतों में तुम्हारे दादा इसहाक़ आहिस्ता आहिस्ता चलते नज़र आए। उन्हें देखते ही तुम्हारी दादी जान गई कि यह आदमी कौन होगा। उसने झट से चादर लेकर अपने चेहरे को ढाँप लिया। तुम्हारे दादा-दादी शादी के बाद बहुत ख़ुश रहते थे। लेकिन बीस बरस तक उनके हाँ कोई बच्चा न हुआ। उन्होंने अल्लाह से मिन्नत की

कि उन्हें औलाद दे। पता है मुन्ने, ख़ुदा बड़ा रहीम है। वह अपने लोगों को बड़े बड़े तोह्फ़े देने में ख़ुशी महसूस करता है। उसने उन्हें भी दो जुड़वाँ बेटे अता किए—एसौ और याक़ूब।"

हज़रत यूसुफ़ एकदम संजीदा हो गए और दबोरा से पूछने लगे, "पता है मेरा नाना लाबन बुतों को पूजता है जो न सुनते हैं न देखते हैं। वह तो कुछ भी नहीं कर सकते।" फिर वह उसकी तरफ़ झुके और सरगोशी करते हुए कहने लगे, "किसी से कहना नहीं ... मालूम है माँ ने नाना जी का पसंददीदा बुत चुरा लिया था और सफ़र में अपने साथ ले आई थी? न जाने नाना जी को कैसे पता चल गया। याद है कितने ग़ुस्से में थे वह? और बुत लेने के लिए वह किस तरह हमारे पीछे आए थे?"

दबोरा ख़ौफ़ज़दा-सी हो गई। "क्या कहा, वह बुत तुम्हारी माँ ने चुराया था? और देखो तुम्हारे बाप ने उस वक़्त क़सम खाकर कहा था कि जिसके पास से वह बुत मिलेगा उसे जान से मार दिया जाए। आख़िर तुम्हारी माँ ने उसे ऐसी कौन-सी जगह पर छुपाया कि तलाश के बावुजूद वह न मिला?"

यूसुफ़ ने अपना मुँह उसके कान से लगाते हुए कहा, "माँ ने वह बुत ऊँट की काठी में छुपाया हुआ था। जब नाना जी उसे ढूँडते ढूँडते माँ के पास आए तो उसने बहाना कर दिया और काठी पर बैठी रही। लेकिन दबो, अल्लाह तो जानता है और फिर उसने अब्बा को क़सम खाते भी सुना है तो क्या ... क्या माँ को मरना होगा ... बताओ ना? अच्छी

दबो, वह बुत तो अभी तक माँ के पास है। वह कहती हैं कि यह मैंने सिर्फ़ इसलिए पास रखा है कि यह मुझे घर की याद दिलाता रहेगा।"

दबोरा ने गहरी साँस भरकर जवाब दिया, "अल्लाह तुम्हारी माँ पर रहम करे! हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वह बुतपरस्तों के घराने से है। उसे बहुत कुछ सीखना पड़ा। लेकिन उसने ख़ुदा को जान लिया है और अब वह पहले से काफ़ी बदल चुकी है!"

यह कहकर उसने नन्हे यूसुफ़ को अपने साथ चिमटा लिया और बड़े प्यार से उसके ख़ूबसूरतो-मुलायम बालों में उँगलियाँ फेरते हुए बोली, "यूसुफ़ बेटा! देखो, तुम अपने बाप के रास्ते पर चलना। वही सीधा रास्ता है।"

चंद दिनों के बाद हज़रत याक़ूब ने एक क़ुरबानगाह बनाई और अपने सारे घराने के साथ मिलकर वहाँ ज़िंदा ख़ुदा की परस्तिश की। वह अल्लाह से प्यार करते थे। इसलिए ज़रूरी था कि उनके घरवाले भी उसको जान लेते और उससे मुहब्बत करते। जब वह देखते कि उनका बेटा यूसुफ़ ख़ुदा की तरफ़ किस क़दर राग़िब है तो बहुत ख़ुश होते। लेकिन बड़े बेटों को देखकर वह मायूस हो जाया करते थे।

उस दिन मौसम बहुत ख़ुशगवार था। ठंडी ठंडी हवा चल रही थी जो राख़िल के घने स्याह बालों से अठखेलियाँ करती जाती थी। हज़रत याक़ूब उसके पास बैठे उसे फूलों के गजरे गूँधते हुए देख रहे थे। उसकी नरमो-नाज़ुक उँगलियाँ बड़ी महारत से फूल पिरो रही थीं। जैसे ही हज़रत

याक़ूब की नज़र अपने बेटे पर पड़ी वह बड़े प्यार से पुकारे, “यूसुफ़, इधर तो आओ! देखो तुम्हारी माँ क्या कर रही है। अरे आओ ना! देखो फूलों को बिलकुल वैसे ही पिरो रही है जैसे जवानी में पिरोया करती थी अपने बाप के घर में भेड़ें चराते हुए।” माज़ी का रूमान-परवर समाँ उनकी आँखों में नाच रहा था।

हज़रत यूसुफ़ ने अपनी माँ को देखा और दौड़ते हुए उसकी तरफ़ लपके। माँ ने अपनी ममता-भरी बाँहें फैला दीं, “आओ मेरी जान!” और सीने से लगाकर प्यार करने लगी।

यूसुफ़ वालिदैन को इकट्ठे देखकर मचल गया, “माँ! सब के छोटे छोटे भाई हैं। बाबा! मेरा भाई क्यों नहीं है? आप मुझे भी भाई ला दीजिए ना!”

“तुम्हें भी ज़रूर भाई मिलेगा” बाप ने बेटे को तसल्ली देते हुए कहा। “बस कुछ देर इंतज़ार करो, बहन आ जाएगी या भाई ... कैसा है मुन्ने?”

याक़ूब की आँखें राख़िल की आँखों से टकराईं और फिर उसने शरमाकर आँखें नीचे कर लीं।

हज़रत यूसुफ़ ने अपने बाप का हाथ छुड़वाया, अपनी माँ को चूमा और यह कहते हुए भाग गए, “मैं सबको यह ख़बर सुनाऊँगा ... ज़रूर सुनाऊँगा ...!”

जब वह भागे चले जा रहे थे तो उन्हें दबोरा की बात याद आई। वह सोचने लगे, "मेरा यह भाई भी तो अल्लाह की तरफ़ से एक तोहफ़ा होगा।" अब तो वह ख़ुशी से फूले न समाते थे। बेसाख़्ता उनके मुँह से निकला, "ख़ुदाया! प्यारे भैया के लिए बहुत बहुत शुक्रिया। मैं वादा करता हूँ कि हमेशा उसका बहुत ख़याल रखूँगा।"

ज़िंदगी मामूल के मुताबिक़ गुज़रती गई। हर तरफ़ सुकून ही सुकून था। हर चेहरा मसरूर, हर रूह आसूदा, कि अचानक ही एक मुसीबत टूट पड़ी। दीना चंद औरतों के साथ सिकम गई तो वहाँ के शहज़ादे की नज़र उस पर पड़ गई। वह पहली ही नज़र में उस पर आशिक़ हो गया और ज़बरदस्ती उसे अपने महल में ले गया।

यह वाक़िया हज़रत याक़ूब के घराने के लिए सानिहा से कम न था। ख़ैमाबस्ती में मौत की-सी ख़ामोशी तारी हुई। लियाह ने रो रोकर अपनी आँखें लाल-बोटी कर रखीं और राख़िल की समझ में न आया कि वह किस तरह से बहन की ढारस बँधाए।

हज़रत याक़ूब के होंटों पर गोया मुहर लग गई थी। उनकी निगाहें बार बार ख़ैमे के दरवाज़े से टकराकर लौट आती थीं। उन्हें अपने बेटों का इंतज़ार था जो अभी खेतों से नहीं लौटे थे। आख़िर वह अकेले करते भी क्या ...। जब वह आ गए तो गरम ख़ून, जवानी का जोश और इस पर ग़ैरतो-इज़्ज़त का मसला! सूरते-हाल मालूम होते ही वह आतिशफ़िशाँ

पहाड़ की तरह फट पड़े। उनकी आँखों में ख़ून उतर आया। सर पर वहशत सवार थी कि इतने में बादशाह की आमद की ख़बर आ पहुँची। वह चंद बड़ों से मुलाक़ात का ख़्वाहिशमंद था ताकि अपने बेटे और दीना के ब्याह की बात पक्की कर सके। सारी ख़ैमाबस्ती पर सन्नाटा तारी था। मामूली-सा ग़लत क़दम किसी बड़े नुक़सान का पेशख़ैमा बन सकता था।

बादशाह बा-इख़्तियार और मोतबर शख़्सियत का मालिक था। फिर भी वह अपने बेटे की मुहब्बत से मग़लूब होकर उसकी पसंद की लड़की का हाथ माँगने अजनबियों के ख़ैमे में ख़ुद चलकर आया था। अपनी आमद के मक़सद का इज़हार करते हुए उसने हज़रत याक़ूब को बताया कि उसका बेटा दीना को शिद्दत से चाहता है। वह उसके महल में निहायत सुखी रहेगी और एक लड़की को इससे ज़्यादा और क्या चाहिए! यहाँ तक कि उसने दीना की शादी के लिए हज़रत याक़ूब का मुतालबा जानने की ख़्वाहिश का इज़हार भी किया।

हज़रत याक़ूब झुँझला उठे। अल्लाह ने बुतपरस्तों में शादी-ब्याह रचाने से मना फ़रमाया था। दूसरी तरफ़ उनकी बेटी दीना की ख़ुशियाँ थीं जिन्हें वह ठुकराना नहीं चाहते थे। इसके अलावा वह यह भी जानते थे कि ख़ुदा के बग़ैर ज़िंदगी कोई ज़िंदगी नहीं होती। अभी वह इसी शशो-पंज में मुब्तला थे कि उनके बेटे बोल पड़े, “आलीजाह! हम अपनी बहन का हाथ ऐसे शख़्स के हाथ में नहीं दे सकते जो ना-मख़तून हो। पहले

आप सिकम के मर्दों का ख़तना करवा दीजिए। फिर हमारी किसी भी लड़की को ब्याह सकते हैं और हम भी आपकी लड़कियों से शादियाँ कर लेंगे।"

यह शर्त बड़ी ख़ुशी से क़बूल कर ली गई। ताहम तीसरे रोज़ जब सब मर्द दर्द से कराह रहे थे और निहायत तकलीफ़ में मुब्तला थे तो दीना के भाई शमाऊन और लावी सिकम में दाख़िल हुए। चूँकि वह लोग उन्हें अपना दोस्त समझते थे इसलिए उन्हें घर घर दाख़िल होने में कोई रुकावट पेश न आई। उनके एतमाद का फ़ायदा उठाते हुए उन्होंने हर घर के मर्दों को तलवार से क़तल कर डाला। फिर फ़तह के नशे में चूर वह अपने दूसरे भाइयों को भी ले आए और मिलकर सारे शहर में लूट-मार मचा दी। यह सब कुछ इतनी जल्दी हो गया कि ख़ैमाबस्ती को कानों-कान ख़बर न हुई कि क्या हुआ है। सब भाई अपने ऊँट दौड़ाए जाते और ख़ुशी से चिल्ला रहे और क़हक़हे लगा रहे थे। फिर लूटी हुई भेड़-बकरियों और दीगर मवेशियों की आवाज़ें सुनाई दीं जो औरतों और बच्चों की चीख़-पुकार और आहो-बुका के अलावा थीं। ख़ैमाबस्तीवालों को अपनी आँखों पर यक़ीन न आया।

हज़रत याक़ूब के बेटों ने न सिर्फ़ सिकम को लूटा बल्कि वहाँ की औरतों और बच्चों को भी इग़वा कर लिया। यह सब कुछ देखकर हज़रत याक़ूब ग़ुस्से में आपे से बाहर हो गए। वह बेटों पर बरस पड़े, "तुमने यह क्या किया? मेरे नाम को बट्टा लगा दिया। डबो दिया है मेरा नाम तुमने।

हमारी तादाद ही कितनी है! मक़ामी लोग हमें आसानी से शिकार कर सकते हैं। और फिर ... फिर तुमने अल्लाह की भी तौहीन की है। मेरे सीने में छुरा घोंपा है तुमने!"

शमाऊन ने चिल्लाकर जवाब दिया, "अपनी बेटी की आबरूरेज़ी का इंतक़ाम लेना तुम्हारा काम था।" फिर उसने दीना को बाप की तरफ़ धक्का देते हुए नफ़रत से कहा, "यह रही तुम्हारी बेटी। तुम बुज़दिल हो ... हाँ हाँ, बुज़दिल हो तुम।"

ख़ैमाबस्ती पर ख़ौफ़नाक तारीकी छा गई ... एक घंबीर तारीकी ... जैसे सब मौत के फ़रज़ंद हों!

दुख का सफ़र

वह रात बड़ी भारी थी। मायूसी फ़िज़ा में रची हुई थी। रूह का बोझलपन और दिल का करब हज़रत याक़ूब को कुचले जा रहा था। उनके क़दम मिनमिनके हो रहे थे। अपने आपको बड़ी हिम्मत से समेटकर वह ख़ैमे से बाहर निकल आए। गहरी ख़ामोशी, बेज़ारकुन सन्नाटा। दूर दूर तक न कोई बंदा-बशर, न पत्तों की सरसराहट। जैसे सारा आलम उनकी उदासी में तहलील हो चुका हो। क्या कहीं गोशाए-अमन ... जाए-पनाह ... सायाए-आफ़ियत? हाय! कुछ भी तो नज़र नहीं आ रहा था। वह भारी क़दमों से क़ुरबानगाह की तरफ़ खिंचे चलने लगे। ज़हन में यह ख़याल बैठ गया था कि इतना कुछ हो जाने के बाद अल्लाह मुझे ज़रूर छोड़ देगा। इस ख़याल के आते ही वह निढाल होकर मज़बह पर गिरे और बड़ी अज़ियत में पुकार उठे, "ऐ ख़ुदा! ऐ क़ुद्दूस और महीब ख़ुदा! मैं ख़ुद को तेरे रहमो-करम पर छोड़ता हूँ क्योंकि तू हमेशा अपने बंदों पर फ़ज़ल करता है। तूने इब्राहीम की औलाद के लिए कितने बड़े बड़े

मनसूबे बना रखे हैं, लेकिन मेरे बेटों ने हर चीज़ पर पानी फेर दिया है। हमने तुझे नाराज़ किया है। यक़ीनन तू हम में से ऐसी क़ौम नहीं पैदा करेगा जो सारी दुनिया के लिए बरकत का बाइस हो। हमने तेरे पाक नाम की तहक़ीर की है। ऐ ख़ुदा! मेरी तक़सीर माफ़ फ़रमा। ऐ मेरे रब! मुझे तर्क न कर। तेरी मुहब्बत और शफ़क़त के साय में रहने के बाद तेरे बग़ैर मैं हरगिज़ न जी सकूँगा।" रोते रोते हज़रत याक़ूब की हिचकी बँध गई। शिद्दते-ग़म से उनका पूरा जिस्म थर-थर काँप रहा था। वह काफ़ी देर तक रब के हुज़ूर औंधे मुँह पड़े रहे। मायूसी और बेबसी ने उन्हें इस हद तक मग़लूब कर रखा था कि उन में उठकर चलने की सकत तक न थी। ख़ुदा क़ादिरे-मुतलक़ के हुज़ूर में एक दुखी बाप अपने ग़मज़दा दिल के साथ मातम कर रहा था।

क़ुरबानगाह पर अचानक उनके थकावट से चूर जिस्म पर कपकपी तारी हो गई। उन्हें अल्लाह की पाक हुज़ूरी का पूरी तरह एहसास हो चला था। अचानक उन्हें महसूस हुआ कि अल्लाह का दिल भी अहले-सिकम के दुख और याक़ूब के बेटों की संगदिली पर अफ़सुरदा है। हज़रत याक़ूब की मायूसी सुकून और इतमीनान में बदल गई। वह जान गए कि अल्लाह मुझे हरगिज़ नहीं छोड़ेगा। वह सच्चा और क़ादिर है और अपना अहद कभी नहीं तोड़ सकता। फिर उन्होंने ख़ुदा की आवाज़ सुनी, "उठ, बैत-एल जाकर वहाँ आबाद हो। वहीं अल्लाह के लिए जो

तुझ पर ज़ाहिर हुआ जब तू अपने भाई एसौ से भाग रहा था क़ुरबानगाह बना।"

अल्लाह उनके साथ कितने तहम्मुल का मुज़ाहरा कर रहा था। इतना कुछ कर गुज़रने के बावुजूद वह सब्र से सब कुछ बरदाश्त कर रहा था। अपने बड़े लड़कों में हज़रत याक़ूब को अपनी जवानी की पुरानी फ़ितरत का अक्स नज़र आता था। सच है वक़्त अपनी कहानी दोहराता है और बाज़ औक़ात अपना माज़ी एक भयानक हक़ीक़त बनकर हाल की दीवार बन जाता है। वह सोचने लगे, "क्या माज़ी का आसेब कभी भी मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा? क्या मैं उम्र भर इसी क़ैद में रहूँगा? कब तक ... आख़िर कब तक क़ुदरत मुझे आईना दिखाती रहेगी?" उनका ज़हन इन ख़यालात में उलझा हुआ था, लेकिन इसके बावुजूद अल्लाह की हुज़ूरी और रिफ़ाक़त के फ़रहतबख़्श एहसास से वह काफ़ी देर तक महज़ूज़ होते रहे।

फिर वह हिम्मत करके उठे और लड़खड़ाते हुए राख़िल के ख़ैमे की तरफ़ चल दिए। उनका दिल कमाल इतमीनान से लबरेज़ था। बेचारी लियाह ... उसके दिमाग़ पर तो पहले ही दीना के साथ होनेवाली ज़्यादती की वहशत सवार थी। इस पर तुर्रा यह कि उसके बेटों ने इस नई हरकत से उसकी ज़िल्लत में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया था। हज़रत याक़ूब दबे पाँव ख़ैमे में दाख़िल हुए ही थे कि एक गधे की भरपूर आवाज़ ख़ामोश फ़िज़ा में गूँजने लगी। चराग़ की मधम रौशनी ज़ाहिर कर रही

थी कि राख़िल और यूसुफ़ अभी तक जाग रहे हैं। पास ही चारपाई पर लेटे हुए उनके बेटे ने पूछा, "बाबा! अब तो आप नाराज़ नहीं हैं ना?" उसकी मुतलाशी निगाहें अपने बाप के चेहरे पर गड़ी थीं। "क्या अल्लाह आपसे हमकलाम हुआ?"

हज़रत याक़ूब ने अपने बाज़ू उनके कंधों के गिर्द हमायल कर दिए और राख़िल की चारपाई पर बैठते हुए उस पर एक नज़र डाली। राख़िल की मुतजस्सिस निगाहें अपने ख़ावंद की निगाहों से टकराईं तो वह मुसकराते हुए बोले, "मेरी जान! अल्लाह का शुक्र है कि कम अज़ कम एक तो ख़ुदा की सूझ-बूझ रखता है। इस पर कुछ तुम्हारा असर पड़ा है।"

हज़रत यूसुफ़ अपनी चारपाई पर जाने को पलटे तो उनके बाप ने बड़े प्यार से कहा, "चलो बेटा! अब सो जाओ। शब बख़ैर! हम जल्द ही बैत-एल रवाना हो जाएँगे।"

हज़रत यूसुफ़ का मुँह खुला का खुला रह गया, "बाबा! ख़ुदा ने बैत-एल जाने को कहा है क्या?"

"हाँ, अल्लाह ने ही कहा है। शाबाश, चलो अब सो जाओ।"

"शब बख़ैर बाबा!" और हज़रत यूसुफ़ अपनी चारपाई पर लेटते ही ख़्वाबों की हसीन वादी में खो गए।

हज़रत याक़ूब फिर राख़िल की तरफ़ मुतवज्जिह हुए और उसके बालों में उँगलियाँ फेरने लगे। दरअसल वह दिन भर की शदीद बेचैनी

को अपने प्यार-भरे जज़बात के इज़हार से कम करना चाहते थे जिसने राख़िल को परेशान और निढाल कर रखा था। हज़रत याक़ूब अपनी बीवी के क़रीब बैठ गए और अपने मज़बूत हाथों से आँखों को ढाँप लिया। राख़िल ने आगे को झुककर उन्हें देखा। उसे तशवीश हुई कि ख़ुदा नख़्वास्ता ख़ावंद की तबीयत तो ख़राब नहीं। लेकिन जब उन्होंने गहरी साँस भरकर अपनी बीवी से बातें करना शुरू कीं तो उसकी जान में जान आई। उन्होंने कहा, "रहीमो-करीम ख़ुदा मझसे हमकलाम हुआ है। मुझे यक़ीन है वह हमें हरगिज़ नहीं छोड़ेगा। इससे पहले कि हम बैत-एल को रवाना हों मैं चाहता हूँ कि हम में से हर एक अपने आपको पाक करे।"

अब हज़रत याक़ूब ने संजीदा लहजे में अपनी बात जारी रखी, "याक़ूब के साथ बसनेवालों को जान लेना चाहिए कि उसका ख़ुदा मुक़द्दस और ग़यूर ख़ुदा है। वह हरगिज़ बरदाश्त नहीं करेगा कि हमारी उस मुहब्बत को जो हम उसके लिए रखते हैं कोई और छीन ले।"

राख़िल रोने लगी, "हमारा क्या बनेगा? जब मक़ामी लोगों में इस क़तलो-ग़ारत की ख़बर फैलेगी तो वह तो हमें हलाक कर डालेंगे। मुझे तो रह रहकर यूसुफ़ का ख़याल आता है। वह तो अभी बहुत छोटा है ... और तुम्हारे बेटों की ख़ूनख़्वार नज़रें हर वक़्त मेरा पीछा करती रहती हैं, हर जगह मुझे घूरती रहती हैं। सारी शाम मुझे तो यही डर लगा रहा कि उन में से एक न एक ज़रूर आकर मेरी गरदन उड़ा देगा। उफ़ मेरे ख़ुदा!

आख़िर मेरे बाप ने क्या सोचकर हम दोनों बहनों को एक ही शख़्स से ब्याह डाला? यह सब लड़ाई-झगड़े इसी बात का नतीजा हैं। यह सब हमारा अपना किया-धरा है।"

हज़रत याक़ूब ने बड़े दुख से सर हिलाया। "मैंने तो पहले ही तुम्हारे बाप से सिर्फ़ तुम्हारा हाथ माँगा था। इतनी मुहब्बत थी मुझे तुमसे कि तुम्हें हासिल करने के लिए जो सात बरस मैंने तुम्हारे बाप की ख़िदमत की वह चुटकी बजाते में गुज़र गए। सात साल का तवील अरसा यों लगा जैसे एक दिन हो। लेकिन नतीजे में तुम्हारा धोकेबाज़ बाप तुम्हारी जगह लियाह को मेरे ख़ैमे में छोड़ गया। और शादी की उस रात जब राज़ फ़ाश हुआ तो क्या क्या बहाने थे जो उसने न बनाए। बेचारी लियाह! उसके लिए यह सब कुछ बरदाश्त करना कितना मुश्किल था।"

हज़रत याक़ूब ने राख़िल के रुख़सारों पर बहते आँसुओं को पोंछते हुए बात जारी रखी, "मैं बेटों के लिए भी तो अच्छा नमूना न बन सका। अल्लाह उन्हें राहे-रास्त पर लाए।"

राख़िल के ज़मीर ने उसे झंझोड़ा और उसने अपने ख़ावंद के सामने इक़रार करते हुए कहा, "यूसुफ़ के बाबा! अपने बाप का बुत आज तक मेरे पास है। मुझे माफ़ करना लेकिन सच तो यह है कि जब मैं इस ख़तरनाक सफ़र पर रवाना हुई थी तो ज़िंदा ख़ुदा पर मेरा ईमान इतना पुख़्ता न था, इसलिए मैंने इस बुत को साथ ले लिया था। लेकिन अब अल्लाह की शफ़क़त और फ़ज़ल और उस पर तुम्हारे कामिल ईमान

को देखकर मुझे उसकी क़ुदरत और अज़मत का पूरा यक़ीन हो गया है। मैं जान गई हूँ कि यह बत सिर्फ़ पत्थर का एक टुकड़ा है। यक़ीन मानो! अब मैं इसे अपने पास नहीं रखूँगी।"

इतने में हज़रत यूसुफ़ की चारपाई से रोने की आवाज़ उभरी। हज़रत याक़ूब ने फ़ौरन पलटकर उन्हें देखा। "बेटा यूसुफ़! क्या हुआ?"

राख़िल ने अपने ख़ावंद के बाज़ू को धीरे से छुआ। "अरे यह तो नन्हा इराम है, असीरों का छोकरा। यूसुफ़ से उसकी यह क़ाबिले-रहम हालत बरदाश्त नहीं होती, इसलिए रात को उसे अपनी चारपाई पर अपने साथ ही सुला लेता है।"

राख़िल ने ताली बजाकर साथवाले ख़ैमे से बिलहाह नामी लौंडी को पुकारा जो पहले ही इस शोर से घबराकर जाग चुकी थी। उसके चेहरे पर तशवीश के आसार नुमायाँ थे। लेकिन जब उसे यह इल्म हुआ कि उसे सिर्फ़ इराम को सँभालने के लिए बुलाया गया है तो उसने सुख का साँस लिया। चूँकि इराम हज़रत यूसुफ़ के साथ चिमटा हुआ था इसलिए दोनों लड़के बिलहाह के साथ दूसरे ख़ैमे में चले गए।

डेरे में ग़म के साय बजाए छुटने के और गहरे होते जा रहे थे। लगता था यह जल्द ढलनेवाले नहीं। उन असीरों के करख़्त और नाख़ुश चेहरे जिन्हें उनके मक़ाम से उखेड़ लिया गया था और हौलनाक यादें जो उनके दिलो-दिमाग़ पर छाई हुई थीं उस ख़तरे की मुसलसल याद दिला रही थीं जो कि ख़ैमाबस्ती पर मंडला रहा था।

हज़रत याक़ूब ने अपने बेटों की ख़ूब ख़बर ली, लेकिन वह बद-ख़सलत सब कुछ सुनकर भी टस से मस न हुए। रात भर ही में उनका जोश ठंडा पड़ चुका था और ख़ुद-एतमादी से यकसर महरूम हो चुके थे। ऐसे में ज़ाहिर है उनकी हत्तल-मक़दूर यही कोशिश रही थी कि वह अपने बाप की नज़रों से बचे रहें। ताहम ज्योंही उनकी नज़र नाश्ते के मौक़े पर अचानक अपने बाप पर पड़ी उन्होंने महसूस किया कि वह काफ़ी हद तक अपने जज़बात पर क़ाबू पा चुके हैं। बाप के चेहरे पर अभी तक वह अज़म दिखाई दे रहा था जो उस सुबह नज़र आया था जब वह दरयाए-यब्बोक़ के घाट से वापसी पर लंगड़ाते हुए अपने ख़ैमे में दाख़िल हुए थे। उस वक़्त हर तरफ़ यह ख़बर आग की तरह फैल गई थी कि हज़रत याक़ूब की अल्लाह के फ़रिश्ते के साथ कुश्ती हुई है। जब उनका सरदार वापस लौटा था तो वह लंगड़ाकर चल रहा था, लेकिन उनके चेहरे से शाहाना जलाल टपक रहा था। एक ख़ास राज़ उनका इहाता किए हुए था। उम्मीद-भरी नज़रें हज़रत याक़ूब के चेहरे पर गड़ी थीं। उन्हें यक़ीन था कि अगर अल्लाह बुज़ुर्ग के साथ है तो यक़ीनन हमें भी कुछ नहीं होगा।

हज़रत याक़ूब के दिलो-दिमाग़ में अब तक हलचल मची हुई थी। भौंएं तनी हुई थीं। उन्होंने अपने घराने को मुख़ातिब करके उन्हें उनके जुर्म की संगीनी का एहसास दिलाया। उनकी संजीदा निगाह अपने बेटों पर जाकर रुक गई जो शर्म से अपनी निगाहें ज़मीन में गाड़े खड़े थे।

उनको देखते ही सीने की आग भड़क उठी और वह पूरी क़ुव्वत से गरजे, "हम ... हम तो गए गुज़रे हैं। सिर्फ़ अल्लाह ही हमें बचा सकता है। चूँकि उसके मुक़द्दस नाम की तौहीन हुई है इसलिए लाज़िम है कि हर एक आजिज़ी इख़्तियार करे। उसके हुज़ूर ख़ुद को झुका दे। यक़ीनन वह हम पर रहम करेगा। अब तुम सब तौबा करो। ख़ुद को पाक करो। नए कपड़े पहनो और अपने सब तावीज़-गंडे और बुत मेरे पास लाओ ताकि मैं उन्हें दफ़न कर दूँ। जल्दी करो क्योंकि अब हमें मज़ीद देर नहीं करनी चाहिए बल्कि बैत-एल को कूच करना है।"

हज़रत यूसुफ़ ने देखा कि उनकी बहन दीना जो आज़ाद हिरनी की तरह चौकड़ियाँ भरा करती थी कितनी बदल गई है। बिलहाह के साथ वह भी बड़े दुख के साथ अपने कानों के मँदरों को देख रही थी जिन में देवताओं की नन्ही नन्ही मूर्तियाँ बनी हुई थीं। ताहम सबने हज़रत याक़ूब के हुक्म की तामील की। ख़ैमाबस्ती में उस वक़्त अजीब अफ़रा-तफ़री का आलम पैदा हुआ। हर तरफ़ संदूक़ और डिब्बे खोलकर मतलूबा चीज़ें ढूँडी गईं। फिर एक बलूत के दरख़्त के पास लोगों की लंबी क़तार लग गई जो अपनी बारी के इंतज़ार में खड़े हुए। हज़रत यूसुफ़ बड़ी संजीदगी से यह सब मंज़र देखते रहे। लोगों ने अपने मूर्तियोंवाले मँदरे, तावीज़-गंडे और हर क़िस्म के बुतों को बलूत के दरख़्त के नीचे खुदे गढ़े में फैंके।

जब हज़रत यूसुफ़ ने देखा कि उनकी माँ राख़िल ने भी अपने बाप के बुत को उस गढ़े में फैंक दिया है तो उनकी आँखें ख़ुशी से चमक उठीं। वह उछलते-कूदते अपनी माँ के पीछे भागे, "माँ! बुत को फैंक देना बड़ा मुश्किल लगा होगा? है ना?" लेकिन फिर उसकी तवज्जुह हटाने के लिए कहने लगे, "मुझे वह बातें बताओ ना माँ, जब आप हारान में बकरियाँ चराया करती थीं!"

राख़िल ने उनके भोले-भाले चेहरे को देखकर मुसकराते हुए जवाब दिया, "मुझे घर से बाहर रहना बहुत अच्छा लगता था। और अपनी बँसरी बजाने का तो बहुत ही मज़ा आता था!"

"माँ! आप तो अब भी बहुत अच्छी धुनें बजा लेती हैं। पता है मुझे और बाबा को आपकी बँसरी सुनना बहुत अच्छा लगता है। और माँ! आपके कुत्ते भी तो आपकी भेड़-बकरियों को हाँक लाया करते होंगे? है ना माँ?"

"हाँ बेटे! तुम ठीक कहते हो। यह कुत्ते मेरी बड़ी मदद किया करते थे। मुझे ख़ासकर भेड़ के बच्चों की देख-भाल करना बहुत अच्छा लगता था।" राख़िल ने उन्हें प्यार से चिमटा लिया और कहा, "जल्द ही ख़ुदा हमें एक मुन्ना देगा। हम अब उसे प्यार किया करेंगे। ठीक है ना?"

जब सब लोग अपने अपने बुतों से छुटकारा हासिल कर चुके तो हज़रत याक़ूब ने क़ाफ़िले को कूच का हुक्म दिया और वह तेज़ी के साथ सिकम से बैत-एल की तरफ़ रवाना हो गए। क़बीले के बाज़ अफ़राद

का ख़याल था कि ऐसा करना कुछ इतना ज़रूरी न था। क़ाफ़िले के मुहाफ़िज़ भी जान गए थे कि जब से इन लोगों ने तौबा की है तब से कनान के लोगों पर इनकी अजीब-सी हैबत तारी हो चुकी है। इसी लिए उन्हें यक़ीन था कि अब वह उनका पीछा करने की जुर्रत नहीं करेंगे।

बैलगाड़ी में हज़रत यूसुफ़ भी अपनी माँ के साथ सवार थे। उनके नन्हे-से ज़हन में बहुत-से सवाल उभर रहे थे। वह बार बार अपनी माँ से पूछते, "माँ! हम दादा से मिलने हबरून कब जाएँगे? आप दादा जान को जानती हैं ना?"

राख़िल ने नफ़ी में सर हिलाया, "नहीं। मैं उन्हें नहीं जानती। लेकिन इतना जानती हूँ कि हम जल्द ही उनके पास जाएँगे। अब तो वह बहुत बूढ़े हो चुके हैं। तुम्हारे बाबा तो उन्हें मिलने के लिए बीस बरस से तड़प रहे हैं।" हज़रत यूसुफ़ फिर अपनी माँ से लिपट गए।

आख़िरकार मनज़िलें तय करता, रास्ते की मुश्किलात बरदाश्त करता, चढ़ते सूरज और ढलती शामों के हसीन मनाज़िर की मसाफ़तें समेटता वह कारवाँ बैत-एल आ पहुँचा। शिद्दते-जज़बात से हज़रत याक़ूब के आँसू निकल पड़े। उन्होंने अपने बेटे यूसुफ़ को वह पत्थर दिखाया जिसे उन्होंने बीस बरस पहले एक रात तकिये के तौर पर इस्तेमाल किया था। उन्होंने इक़रार करते हुए फ़रमाया, "जब मैं हारान की तरफ़ भाग रहा था तो बहुत उदास था। बिलकुल तनहा, बेकस, बेसहारा। ऊपर से मेरा भाई एसौ मेरे ख़ून का प्यासा था। वह मुझे जान से मार

डालना चाहता था। इसके अलावा मैं अपने बूढ़े अंधे बाप को निहायत दुखी और मायूस छोड़कर आया था, क्योंकि मैंने उसके एतमाद को ठेस पहुँचाई थी। मैंने बुरी तरह से अपने बाप का दिल तोड़ा था। लेकिन जानते हो इस बेचारगी के आलम में पहली बार अल्लाह मुझ पर ज़ाहिर हुआ।"

इस ज़िक्र के साथ ही उनकी आवाज़ में एक पुरमुसर्रत खनक-सी आ गई। वह इस पत्थर के पास अदब से बैठ गए और हज़रत यूसुफ़ से बोले, "यहाँ, बिलकुल इसी जगह एक सीढ़ी बन गई थी जो सीधी आसमान तक जाती थी। और उस सीढ़ी पर जानते हो यूसुफ़, फ़रिश्ते उतरते चढ़ते थे। उस वक़्त अल्लाह ने मुझे यक़ीन दिलाया कि "मैं तुझे बरकत दूँगा। तेरे साथ रहूँगा और तुझे सहीह-सलामत वापस घर लाऊँगा। मैं तुझसे एक क़ौम पैदा करूँगा और तू सब क़ौमों के लिए बरकत का बाइस होगा।"

हज़रत याक़ूब के बड़े बेटे भी खड़े यह सब बातें सुन रहे थे। लेकिन उनके चेहरे हर क़िस्म के जज़बात और तअस्सुरात से आरी थे जब कि हज़रत यूसुफ़ घुटनों के बल होकर ग़ौर से इस जगह को देख रहे थे। फिर उन्होंने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाते हुए पूछा, "बाबा! क्या ख़ुदा की आवाज़ बहुत ही प्यारी है? अगर अल्लाह मुझे कुछ करने को कहेगा तो मैं ज़रूर करूँगा।"

हज़रत याक़ूब मुसकरा दिए, "मेरे बच्चे! यही सहीह जज़बा है। एक वक़्त था कि मैं जानता तक न था कि अल्लाह की मुहब्बत कितनी अज़ीम चीज़ है। अगर ख़ुदा तुम्हारे साथ है तो तुम्हारे पास सब कुछ है। जब मैंने अल्लाह से वादा किया कि मैं अपनी तमामतर मिलकियत का दसवाँ हिस्सा उसे दूँगा तो मैं अपने आपको बहुत बड़ा सख़ी समझता था।" इस ख़याल के आते ही हज़रत याक़ूब ने तंज़िया क़हक़हा लगाया। "लेकिन अल्लाह तो इनसान का सब कुछ चाहता है। उसका पूरा वुजूद चाहता है। उसका जिस्म, उसकी जान, उसकी रूह, सब कुछ।"

फिर उन्होंने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ वहाँ एक मज़बह बनाना शुरू किया। हज़रत यूसुफ़ अपने बाप को अल्लाह के हुक्म की तामील करते देखते रहे। उस ख़ुदा के हुक्म की जिसने मुसीबत में उनकी मदद की थी। उस ख़ुदा के हुक्म की जो हर जगह जहाँ कहीं हज़रत याक़ूब गए उनके साथ रहा। उन्होंने मिलकर अल्लाह की परस्तिश की।

हज़रत यूसुफ़ के दिल पर इस वाकिये का गहरा असर हुआ। ख़ास तौर पर इसलिए कि अल्लाह ने एक बार फिर बाप से हमकलाम होकर उनके साथ अपने अहद को नए सिरे से बाँधा है।

बैत-एल में क़ाफ़िले का पड़ाव बड़ा पुरसुकून और फ़रहतबख़्श रहा। वहाँ हज़रत याक़ूब की देरीना ख़्वाहिश की तकमील हुई। यूसुफ़ के दिल में बाप के ईमान के हैरतअंगेज़ तजरिबात देखकर ज़िंदा ख़ुदा से मुहब्बत उभर आई।

सब अहले-क़ाफ़िला मसरूर और मुतमइन थे कि अचानक मातम और आहो-बुका की दर्दनाक आवाज़ों से फ़िज़ा का सुकून दरहम-बरहम हो गया। दबोरा चल बसी थी। उसकी मौत के बाद सबको महसूस हुआ कि उसने पूरे घराने में कितना मरकज़ी किरदार अदा किया था। औरतें अपने बाल नोचकर और सीनाकोबी करके बैन करने लगीं, "ऐ बहन दबोरा! तुम कहाँ चली गईं! देखो तो तुम्हारा ख़ैमा कितना ख़ाली ख़ाली लग रहा है। हाय हाय! तुम्हारी प्यार-भरी आवाज़ अब कभी भी डेरे में सुनाई नहीं देगी।"

सबसे ज़्यादा सदमा हज़रत यूसुफ़ को हुआ जिन्हें दबोरा से बहुत प्यार था। वह बुढिया तो उनकी ख़ास दोस्त रही थी। वह अपने दिल की सारी बातें उससे कह लेते थे। क्या क्या क़िस्से न सुने थे उन्होंने दबोरा से। उनकी सिसकियाँ साफ़ सुनाई दीं जब कि हज़रत याक़ूब की कैफ़ियत और भी संगीन थी। दबोरा उनकी भी दाया रही थी जिसने उन्हें माँ का प्यार दिया था। वह बेटे की तरह उसका एहतराम करते थे। उसकी नेकियाँ याद कर करके उनका दिल ख़ून के आँसू रोता रहा। ऐसे में अचानक उन्हें अपने बूढ़े बाप का ख़याल आया। "कहीं ख़ुदा न करे ... उफ़ मेरे ख़ुदा ... मेरा बाबा भी तो इतना ही बूढ़ा है। ऐसा न हो कि मुलाक़ात से पहले ही वह भी इस जहान से रुख़सत हो जाए।"

लिहाज़ा ज्योंही मातम के दिन पूरे हुए तो उन्होंने फ़ौरन हबरून की तरफ़ कूच करने पर ज़ोर दिया। बड़े पुरसुकून सफ़र के दौरान अब

क़ाफ़िला उस पहाड़ी पर चढ़ने लगा जिस पर बैत-लहम का क़दीम क़सबा वाक़े था। उस मुक़द्दस सरज़मीन पर चलते हुए उनकी ख़ुशी की इंतहा न थी कि अचानक क़ाफ़िले को रुक जाने को कहा गया। लियाह परेशानी के आलम में चिल्लाने लगी कि किसी दाया का इंतज़ाम किया जाए, राख़िल दर्दे-ज़ह में मुब्तला है। लियाह से अपनी बहन की यह हालत देखी न जाती थी। बेबसी और बेचैनी के आलम में उसके होशो-हवास ठिकाने नहीं थे, क्योंकि हज़रत यूसुफ़ की पैदाइश के वक़्त भी बहुत मुश्किल पेश आई थी। लिहाज़ा उन्हें राख़िल की जान की फ़िकर थी।

हज़रत याक़ूब ने मामले की नज़ाकत को भाँपते हुए फ़ौरन ख़ैमा लगवाया। इतने दिलेर और शेरदिल होने के बावुजूद वह अपनी बीवी की तकलीफ़ के ख़याल से काँप उठे। राख़िल की चीख़ें दिलों को चीरे डालती रहीं। हज़रत यूसुफ़ ख़ौफ़ से सहमे हुए अपने बाप से चिमटे रहे। उन्होंने डरते डरते पूछा, "बाबा! क्या दबोरा की तरह माँ भी चल बसेगी? ख़ाला लियाह और दूसरी औरतें बहुत परेशान हैं। लगता है माँ की हालत काफ़ी ख़राब है।"

बाप बेटा बड़ी बेबसी से ख़ैमे की तरफ़ देखते रहे। अचानक लियाह निकल आई। उसने उन्हें आने का इशारा किया। लेकिन इससे पहले कि वह ख़ैमे में पहुँचते आहो-बुका और चीख़-पुकार का ऐसा शोर उठा कि सब के दिल दहल गए। लियाह की आँखों से आँसू फूट निकले।

उसने हज़रत याक़ूब के हाथों में कपड़े में लिपटा बच्चा थमाते हुए कहा, "सरताज! लीजिए आपका बेटा! राख़िल ने इसका नाम बिन-ऊनी रखा था यानी मेरी मुसीबत का बेटा।"

हज़रत याक़ूब ने अपनी चहेती बीवी के अनमोल तोह्फ़े को सीने से लगा लिया और प्यार-भरे जज़बात से मग़लूब होकर पुकार उठे, "नहीं नहीं, इसका नाम बिनयमीन होगा यानी दहने हाथ या ख़ुशक़िस्मती का बेटा।"

फिर हज़रत याक़ूब ने नन्हे बिनयमीन को यूसुफ़ की बाँहों में दिया और हिचकियाँ लेते हुए कहा, "इसका ध्यान रखना। यह तुम्हारा अपना और बड़ा क़ीमती भाई है।"

तब ख़ूबसूरत, जवाँ-साल राख़िल को दफ़नाया गया। माँ की मैयित को देखकर हज़रत यूसुफ़ को महसूस हुआ कि मेरी दुनिया बिखरकर रह गई है। माँ ख़ानदान की सालिमियत की ज़ामिन होती है। उसके मिटते ही ज़िंदगी के तमाम निज़ाम दरहम-बरहम हो जाते हैं और ख़ूबसूरत रंग बिखरकर हयात को बेलुत्फ़ कर देते हैं। हर तरफ़ कुहराम मच गया। हज़रत यूसुफ़ के हस्सास ज़हन पर यह बात नक़्श हुई कि जवान हो या बूढ़ा सबको एक न एक दिन इस दुनिया से रुख़सत होना है। मेरे परदादा इब्राहीम क़सदन ख़ैमों में रहते थे ताकि यह बात न भूली जाए कि असल घर आसमान पर अल्लाह के साथ है। दादा इसहाक़ और

बाप याक़ूब भी ख़ैमों ही में रहते हैं। लेकिन यह ख़ैमे उनके मुस्तक़िल घर नहीं हैं। आख़िर यह ज़िंदगी है क्या? एक निहायत बातिल चीज़।

जुदाई का सदमा कितना शदीद होता है! हज़रत यूसुफ़ को अपनी माँ की क़ब्र को तनहा छोड़कर आना पड़ा, उस जगह को जहाँ उनकी अज़ीज़तरीन हस्ती की बाक़ियात दफ़न थीं। अब उनकी माँ राख़िल उनकी ज़िंदगी से बिलकुल जा चुकी थी। कितनी तलख़ हक़ीक़त है यह मौत भी! न चाहते हुए भी वह सब कुछ देखना पड़ता है जिसका इनसान में हौसला तक नहीं होता।

अब हज़रत यूसुफ़ की ज़िंदगी का मरकज़ो-मेहवर उनकी ख़ाला लियाह बन गई जो माँ की जगह लेने की पूरी कोशिश करती रही। और अब हज़रत यूसुफ़ अपना सारा प्यार अपने गोल-मटोल से भैया बिनयमीन पर निछावर करने लगे। तो भी उनके दिल में अभी तक एक ख़ला-सा रहा, इसलिए वह हमेशा अल्लाह को जानने के मुतलाशी रहे। उनके बाबा बड़ी ख़ुशी से अल्लाह से मुताल्लिक़ अपने तजरिबात के बारे में अपने बेटे को बताते रहे। इस तरह वक़्त गुज़रने के साथ साथ बाप बेटा एक दूसरे के बहुत ही क़रीब होते गए।

आख़िर वह दिन भी आ पहुँचा जिसका मुद्दत से सबको इंतज़ार था। वह दिन जो हज़रत याक़ूब की हसरतों की तकमील का दिन था। वह दिन जो हज़रत यूसुफ़ के ख़्वाबों की ताबीर का दिन था। वह दिन जो बिछड़े हुए बाप बेटों की मुलाक़ात का दिन था। हाँ, वह अज़ीम दिन

जब क़ाफ़िला आख़िरकार अपने आबाई इलाक़े हबरून की सरज़मीन में दाख़िल हुआ। उनका बड़ी गरमजोशी से इस्तक़बाल किया गया। लोगों ने हज़रत याक़ूब को बताया, "तुम्हारा बाप बहुत बूढ़ा हो चुका है। वह तो कब का मर चुका होता, लेकिन इस दिन की आरज़ू ने उसे अभी तक ज़िंदा रखा है।"

हज़रत याक़ूब अपने बिछड़े बाप के ख़ैमे में तनहा गए, बिलकुल उसी तरह जैसे अरसा पहले वह उस में दाख़िल हुए थे। फिर घुटनों के बल गिरकर गिड़गिड़ाए और रोए, "बाबा! मुझे माफ़ कर दो, बाबा! मैं ख़ुदग़रज़ी में अंधा हो गया था। मैंने तुम्हें धोका दिया। एक अंधे बाप को धोका दिया। उसे यह यक़ीन दिला दिया कि मैं याक़ूब नहीं एसौ हूँ। मैं हर क़ीमत पर पहलौठे की बरकत हासिल करना चाहता था। मैं जानता था कि मैं इसका हक़दार नहीं हूँ इसलिए यह नाजायज़ तरीक़ा इख़्तियार किया। लेकिन अल्लाह ने मुझे ढूँड निकाला। मैं तुम्हारा गुनाहगार हूँ बाबा। मुझे माफ़ कर दो।"

हज़रत इसहाक़ ने काँपते हाथों से अपने बेटे के आँसू पोंछ डाले। उनकी हस्सास उँगलियाँ उनके चेहरे के ख़ुतूत को छूने लगीं। बसारत से महरूम आँखों की बीनाई लाग़र हाथों की उँगलियों में उतर आई थी। उन्होंने पहचान लिया कि यह वही खोया हुआ बेटा याक़ूब है जो बीस बरस पहले बिछड़ने के बाद मुझे आज मिल गया है। ख़ुदा ने मुझे वह बेटा लौटा दिया है जिसे ख़ुद क़ादिरे-मुतलक़ ने बरकत दी है। बाप काँपती

हुई मगर ख़ुशीआमेज़ आवाज़ में बोले, "उठो बेटा और सुकून से बैठ जाओ। मुझे बताओ कि अल्लाह ने तुम्हें कैसे ढूँड निकाला?"

हज़रत इसहाक़ कितने ख़ुश थे कि आख़िरकार वह बेटा वापस मिल गया है जो मेरा-सा ईमान रखता है। क्योंकि बड़े बेटे एसौ को अल्लाह का बिलकुल ख़याल नहीं रहा था।

दोनों बाप बेटा अपनी बातों में इतने महव हो गए कि उन्हें पता न चला जब हज़रत यूसुफ़ ख़ैमे में दाख़िल हुए। वह अपने बाप और दादा की बातें बड़े ग़ौर से सुनने लगे।

"हारान से वापसी पर जब हम दरयाए-यब्बोक़ पर पहुँचे तो मेरी हिम्मत जवाब दे चुकी थी। मुझे डर था कि एसौ हम सबको हलाक कर डालेगा। मेरे मुहाफ़िज़ों को इल्म हो गया था कि वह चार सौ सिपाहियों के साथ पहले ही घर से रवाना हो चुका है। एसौ से मिलने से पहले मुझे अल्लाह के हुज़ूर आने की ज़रूरत शिद्दत से महसूस हुई, ताकि अपने माज़ी के ग़लत तौर-तरीक़ों से तौबा करके रब से अपना रिश्ता उस्तुवार करूँ। बाबा! यक़ीन मानिए, मेरा जी चाहता था कि मैं बिलकुल अकेला हो जाऊँ। पस मैंने सब लोगों हत्ता कि अपने ख़ानदान को भी यब्बोक़ पार करवा दिया। आप तो जानते हैं कि इस जगह पर दरिया के पानी का इतना शोर होता है कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती। इससे मैं कुछ घबरा-सा गया। फिर मैंने पुकारकर अल्लाह से कहा, 'ऐ ख़ुदा! ऐ ख़ुदा! मैं हाज़िर हूँ। तू जैसा सुलूक मझसे करना चाहता है कर ले।'

अचानक क्या देखता हूँ कि कोई शख़्स मुझे गरेबान से पकड़ रहा है। मेरे लिए इसके सिवा और कोई चारा न था कि मैं भी उसके साथ गुथ जाता। मेरा हरीफ़ मुझे मार डालने के दरपै था। जब लड़ाई ख़तरनाक हद तक बढ़ने लगी तो मुझे मालूम हुआ कि मैं तो रब के फ़रिश्ते से कुश्ती लड़ रहा हूँ। फिर मैं जान गया कि अब मुझे अपने माज़ी को पीछे छोड़ना होगा। ख़ुदा चाहता है कि या तो मैं पूरी तरह से ख़ुद को उसके सपुर्द कर दूँ या फिर बिलकुल छोड़ दूँ। वह मुझे बदलना चाहता है। बाबा! मैं आपको बता नहीं सकता कि जब यह लड़ाई घंटों जारी रही तो मुझ पर क्या गुज़र रही थी। मैं तो सिर्फ़ इतना जानता था कि मुझे उसको जाने नहीं देना। मैं उसे थामे रहना चाहता था। जब सुबह होने लगी तो उसने मेरी रान पर मारा जिससे मेरा पट्ठा खिच गया। अब मैं उससे और ज़्यादा चिमट गया। जब उसने कहा, 'मुझे जाने दे' तो मैंने अपने फूले हुए साँस के साथ उसकी मिन्नत की, 'मैं तुझे उस वक़्त तक नहीं जाने दूँगा जब तक तू मुझे बरकत नहीं देगा।' बाबा! फिर ... फिर उसने मुझे बरकत दी, लेकिन इससे पहले उसने मझसे मेरा नाम पूछा। मैंने बड़ी शर्मसारी से उसे बताया 'याक़ूब' (एड़ी पकड़नेवाला)। लेकिन उसने बड़ी प्यार-भरी आवाज़ में मझसे कहा, अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं बल्कि इसराईल यानी 'वह अल्लाह से लड़ता है' होगा। क्योंकि तू अल्लाह और आदमियों के साथ लड़कर ग़ालिब आया है।"

हज़रत इसहाक़ की आँखें नम हो गईं। “ठीक है। अल्लाह ने तुम्हें ढूँड निकाला। तुम बिलकुल बदल गए हो। काश तुम्हारी माँ यह सब कुछ सुनने के लिए आज ज़िंदा होती!”

हज़रत याक़ूब को यों लगा जैसे उनके बूढ़े बाप की ज़िंदगी का मक़सद पूरा हो गया हो। ज्योंही उन्होंने बात ख़त्म की हज़रत इसहाक़ ने बड़े इतमीनान से दम दे दिया। एसौ और याक़ूब ने उन्हें हज़रत इब्राहीम, सारा और रिबक़ा की क़ब्रों के पास ही दफ़ना दिया। अगरचे दोनों भाई बड़े चैनो-आराम के साथ रहते थे, लेकिन उन में कोई बाहमी दिलचस्पी न थी। हज़रत याक़ूब ने अपनी ज़िंदगी अल्लाह की राह पर डाल रखी थी जब कि एसौ अदोम में अपनी जायदाद बनाने में मगन रहा। उसे अपने भाई पर तरस आता था जिसकी सबसे बड़ी ख़्वाहिश ख़ुदा की राह पर चलना था। आख़िर इससे याक़ूब को क्या मिला? और अगर उसको अंदाज़ा होता कि हज़रत याक़ूब की ज़िंदगी में क्या मुसीबत नाज़िल होनेवाली है तो वह और भी हैरान होता।

हमला

दस बरस तक वादीए-हबरून में हज़रत याक़ूब की ख़ैमाबस्ती फलती-फूलती रही। उनको अब अपने बुढ़ापे का एहसास हो चला था। इसलिए अब वह अपने रेवड़ों को चराने के लिए गिर्दो-नवाह के इलाक़े में अपने बेटों को ही भेज दिया करते थे। उम्र के साथ साथ उनके ख़यालात अकसर माज़ी की तरफ़ भटकते रहते थे। लियाह हारान में गुज़ारे हुए दिनों और मौजूदा ज़माने के दरमियान एक कड़ी थी। जितना माज़ी की हज़रत याक़ूब को याद आती, उतना ही वह लियाह के क़रीबतर होते जाते थे।

हज़रत यूसुफ़ और बिनयमीन की देख-भाल करने से लियाह को बहुत सुकून मिलता था। अब उसके अपने बेटों की शादियाँ हो चुकी थीं। वह अपने पोते-पोतियों को देख देखकर इंतहाई ख़ुश होती थी। आसूदगी का एहसास उसे मुतमइन रखता था।

लेकिन अफ़सोस कि एक दिन लियाह की तमाम ख़ुशियाँ बिखरकर रह गईं। बेचारी रूबिन की बीवी उसके ख़ैमे में तूफ़ान की तरह आ धमकी। "वह इनसान नहीं वहशी है। कल रात रूबिन सरदार की हरम बिलहाह से हमबिसतर हुआ है। मुझे तो उसने डेरे में मुँह दिखाने के क़ाबिल नहीं छोड़ा। आख़िर सरदार सुनेंगे तो क्या बनेगा?"

लियाह ने अपनी आवाज़ पर क़ाबू पाने के लिए साँस रोक लिया और रुँधे हुए गले से बोली, "वह उसे ज़रूर सज़ा देकर पहलौठे की बरकत और दौलत से महरूम कर देंगे।"

और फिर जैसे अलफ़ाज़ ज़बरदस्ती उसके होंटों से फिसल पड़े, "मेरा पहलौठा रूबिन नहीं बल्कि राख़िल का पहलौठा यूसुफ़ अब इस क़बीले का सरदार बनेगा।"

बेचारी ने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढाँप लिया और फूट फूटकर रोने लगी। उसकी सिसकियाँ फ़िज़ा में उभरने लगीं, और वह अपनी क़िस्मत को कोसती रही, "उफ़ ख़ुदाया! मेरी भी क्या क़िस्मत फूटी है। ज़रा सुनो तो उधर शमाऊन की बीवी चिल्ला रही है और अपने शौहर का ग़ुस्सा बेचारे बच्चों पर उतार रही है।"

लियाह ने अपनी चादर से अपने आँसू पोंछे। उसका साँस अभी तक फूला हुआ था। उसने बड़ी बेचारगी से तसलीम करते हुए कहा, "राख़िल के बच्चों को देखो। वह दूसरों से कितने मुख़तलिफ़ हैं। मुझे तो वह बहुत

प्यारे लगते हैं। यूसुफ़ एक अच्छा सरदार बनेगा। अल्लाह उसे बरकत दे।"

लियाह को हज़रत यूसुफ़ की सलाहियतों पर माँ का-सा नाज़ था। उसने बात जारी रखी, "इस लड़के को सारा, रिबक़ा और राख़िल का हुस्न विरसे में मिला है और इसका मज़बूतो-ख़ूबसूरत बदन देख देखकर इसके भाई जल जाते हैं। पता है, वह कितना ज़हीन है और अपने बापदादा के ख़ुदा से प्यार भी करता है।"

इतना कहकर लियाह रुक गई और सोचने लगी कि आगे बात करनी चाहिए कि नहीं। आख़िरकार वह फट पड़ी, "लेकिन यूसुफ़ और बिनयमीन भी बिगड़ने लगे हैं। वही ग़लती जो बच्चों के दादा-दादी से हुई थी अब उनके बाप से हो रही है। हज़रत इसहाक़ को एसौ से मुहब्बत थी जब कि रिबक़ा हज़रत याक़ूब को चाहती थी। इसी के बाइस उस घराने में ज़बरदस्त निफ़ाक़ पड़ गया था। और अब यही कुछ हमारे घर में हो रहा है।"

रूबिन की बीवी की आवाज़ अब क़दरे मधम हो गई थी। वह बड़ी राज़दारी से लियाह से कहने लगी, "यूसुफ़ के भाई उससे शदीद नफ़रत करते हैं। मेरी बात याद रखना, एक न एक दिन भाई उसे ज़रूर जान से मार डालेंगे। जब कभी यूसुफ़ उनके साथ मवेशी चराने जाता है तो जो कुछ वह आपस में करते हैं वह सब बातें अपने बाप को बता देता है।

ज़ाहिर है कोई अच्छा काम तो वह लोग करते नहीं हैं। यही वजह है कि अब वह यूसुफ़ से और ज़्यादा नफ़रत करने लगे हैं।"

लियाह बहुत मेहनती औरत थी। हर वक़्त कुछ न कुछ करती रहती थी। इस वक़्त भी इतना कुछ हो जाने के बावुजूद उससे मज़ीद फ़ारिग़ नहीं बैठा जा रहा था। वह उठी और चरख़ा कातने लग गई। "एक और बात बड़ी अजीब है। यूसुफ़ ख़्वाब की ताबीर बिलकुल सहीह बताता है।"

अभी यह बातें हो ही रही थीं कि उसकी नज़र दूर आते हुए हज़रत याक़ूब पर पड़ी। उसने शुशकारते हुए कहा, "ज़रा ध्यान से! रूबिन के वालिद आ रहे हैं। बहुत ग़ुस्से में लगते हैं। ग़ालिबन उन्हें इस शर्मनाक वाकिये की इत्तिला मिल चुकी है। बेचारे! आज तो चाल में पहले से भी ज़्यादा लँगड़ाहट है। देखो अब तुम यहाँ से चली ही जाओ। मैं नहीं चाहती कि वह हम दोनों को यों इकट्ठा पाएँ।"

लियाह की बहू आँख बचाकर वहाँ से खिसक गई और इतने में सरदार याक़ूब ख़ैमे में दाख़िल हुए। मुश्किल से बैठते हुए उन्होंने बड़े ग़ुस्से से कहा, "मैंने फ़ैसला कर लिया है कि यूसुफ़ के लिए एक चोग़ा बनवाऊँ जिस पर महँगी कढ़ाई करवाई जाएगी जैसे अमीर लोगों का लिबास होता है। मैं अब ज़्यादा देर तक बरदाश्त नहीं कर सकता कि वह अपने भाइयों के साथ काम करे। उनकी सोहबत उसके हक़ में अच्छी नहीं है।"

लियाह के हाथ बड़ी महारत से चल रहे थे। आख़िर उसने नीमदिली से कह दिया, “हाँ, हाँ” मगर दिल में सोचने लगी, “यह लिबास इस बात का खुला एलान होगा कि यूसुफ़ असल वारिस है।” इस ख़याल से लियाह का दिल काँपने लगा। भाई यह सब कुछ कैसे बरदाश्त करेंगे? उसने गिड़गिड़ाकर दिल ही दिल में मिन्नत की, “ऐ रब! हमें किसी और मुसीबत से महफ़ूज़ रखना।”

बिनयमीन उछलता-कूदता हुआ ख़ैमे के पास से गुज़रा। अपने शौहर की तवज्जुह मौज़ू से हटाने की ग़रज़ से लियाह ने उसे पुकारा “मेरे चाँद! इधर आ। ज़रा बँसरी की धुन तो सुना।”

नन्हा बिनयमीन फ़ौरन मान गया और बाप के क़दमों में बैठकर बँसरी पर सुरीली धुन छेड़ दी। उसकी गोल-मटोल आँखों में बला की चमक थी। जब वह बँसरी बजा चुका तो बड़े इश्तयाक़ से अपने बाप से पूछने लगा, “बाबा! मैं भी माँ की तरह अच्छी बँसरी बजा लेता हूँ ना? बताओ बाबा! माँ बहुत ख़ूबसूरत और ख़ुशमिज़ाज थी ना? यूसुफ़ भाई ने मुझे बताया है और वह ... वह कहते हैं कि माँ के भाइयों ने उसे फ़लाख़न चलाना भी सिखाया था।”

लियाह ने हाँ में सर हिलाया, “हाँ बेटे! यह सब कुछ सच है। तुम्हारी माँ को कभी भी अच्छा खाना पकाना न आया, लेकिन वह भेड़ों की देख-भाल बहुत अच्छी कर लिया करती थी।”

राख़िल की ख़ूबसूरती उसके बाप के लिए एक मसला बनी हुई थी। हर शख़्स उससे शादी करना चाहता था और इस तरह बड़ी बहन को हमेशा नज़र-अंदाज़ कर दिया जाता था। लियाह ने अल्लाह का शुक्र किया कि अब उसका ज़ख़म भर चुका है। उसने सरद आह भरी जब उसे याद आया कि नौजवानी के ऐयाम में इसी मामले ने उसकी ज़िंदगी को कितना अजीरन बना रखा था।

बिनयमीन ने बड़ी बेचैनी से अपने बाप के क़दमों को थाम लिया और बोला, "यूसुफ़ भाई यह भी कहते हैं कि एक दफ़ा हमारे परदादा इब्राहीम ने बड़ा डरावना ख़्वाब देखा था। और जब वह उसकी ताबीर के बारे में सोच रहे थे तो अल्लाह ने उन्हें बताया कि उनके लोग अजनबी सरज़मीन में 400 बरस तक ग़ुलामी की ज़िंदगी गुज़ारेंगे। इस दौरान में ख़ुदा उसी जगह उन्हें एक बड़ी क़ौम बनाएगा और फिर उन्हें अपने वतन वापस ले आएगा।"

फिर वह अचानक उछल पड़ा। उसे यों लगा जैसे उसका बाप उसकी बात नहीं सुन रहा। उसने अपने वालिद की आँखों में आँखें डालते हुए पूछा, "क्या हम अजनबी मुल्क में जाएँगे और दूसरे लोग भी जैसे रूबिन के बच्चे जब यह सब बड़े हो जाएँगे? बाबा! वह मुल्क कौन-सा होगा? मिसर होगा क्या?"

ज्योंही उसने रूबिन का नाम लिया हज़रत याक़ूब का चेहरा एकदम सुर्ख़ हो गया। रूबिन का ख़ैमा उनके ख़ैमे के दरवाज़े से साफ़ नज़र

आ रहा था। जब उन्होंने देखा कि बहुत-सी औरतें खुसर-फुसर करने के लिए अंदर दाख़िल हो रही हैं तो उन्होंने बच्चे को हलका-सा थपथपाते हुए कहा, "अच्छा! अब जाओ और खेलो-कूदो। इसके बारे में फिर कभी बात करेंगे। हाँ, ज़रा यूसुफ़ को तो बुलाके लाओ। रंगदार लिबास बनाने के लिए लियाह उसका नाप लेगी।"

बिनयमीन ख़ुशी से नाचने लगा, "यूसुफ़ भाई को रंगदार लिबास बहुत अच्छा लगेगा। बाबा! भैया की तो बड़ी प्यारी-सी डाढ़ी भी निकल रही है। पता है जब मैं जवान हो जाऊँगा तो मेरी डाढ़ी भी निकल आएगी।"

लियाह ने हज़रत यूसुफ़ के लिए निहायत ख़ूबसूरत लिबास बनाया जिस पर अमीराना अंदाज़ में बेल-बूटे कढ़े थे। ज्योंही हज़रत यूसुफ़ ने उसे पहना उनकी ख़ूबसूरती को चार चाँद लग गए। उनके भाई तो पहले ही उनके दुश्मन हो रहे थे। जब यूसुफ़ को इस इम्तियाज़ी लिबास में देखा तो वह जल-भुन गए। अब तो उनका सामने आना भी भाइयों को एक आँख न भाता था। रूबिन ने तो नफ़रत से यहाँ तक कह दिया कि "पहलौठा मैं हूँ। उसूलन यह लिबास पहनना मेरा हक़ बनता है, क्योंकि वारिस मैं हूँ जब कि तुम ... तुम चोर हो।"

हज़रत यूसुफ़ एहतजाजन कहने लगे, "ऐसी घटिया बात मत करो। यह लिबास तो मुझे बाबा की तरफ़ से मिला है।"

तो भी इस लिबास में हज़रत यूसुफ़ ख़ुद को अपने बड़े भाइयों से बरतर समझने लगे। जब वह अपने भाइयों को मोटे खुरदरे कपड़े पहने देखते जो उनकी जफ़ाकशी के लिए मौज़ूँ थे तो उन्हें ख़ुशी होती थी। वैसे भी वह अपने बाप की आँख का तारा थे।

हज़रत यूसुफ़ के इस रवैये ने भाइयों की नफ़रत और नाराज़ी को भड़काने में जलती पर तेल का काम किया। दान ग़ुर्राते हुए कहने लगा, "अच्छा तो अब दिमाग़ आसमान पर है शहज़ादे का! तुम समझते क्या हो अपने आपको? तुम ही ने चंद रोज़ पहले हमें अपना शानदार ख़्वाब सुनाया था ना? तुमने हमें साफ़ साफ़ यह बताने की कोशिश की है कि एक दिन तुम हम सब पर हुकूमत करोगे। ऐसा ही है ना?"

आशर ने बड़े भोंडे अंदाज़ में हज़रत यूसुफ़ की नक़ल उतारते हुए उनके अलफ़ाज़ दोहराए, "सुनो! मैंने एक ख़्वाब देखा है कि हम सब गंदुम के खेत में पूले बाँध रहे हैं। इतने में जानते हो क्या हुआ? मेरा पूला उठा और सीधा खड़ा हो गया और तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले के गिर्द घेरा डाल लिया और उसे सिजदा किया।"

जद ग़ुस्से से चिल्लाया, "ओए! यह ख़याल दिल से निकाल दो कि हम कभी तुम्हारे सामने झुकेंगे।" फिर उसने हज़रत यूसुफ़ के पैरों पर थूकते हुए कहा, "तुम्हारे यह ख़्वाब तुम्हारे ग़ुरूर की पैदावार हैं। बदमाश! तुम्हारी इस जुर्रत और बेबाकी से मुझे शदीद नफ़रत है।"

ज़बूलून ने हज़रत यूसुफ़ के माथे को बड़े तंज़ से छूते हुए कहा, "तो तुम बाप की नक़ल करना चाहते हो! उन्होंने भी एक दफ़ा ख़्वाब देखा था। ज़ाहिर है तुम्हें ज़्यादा ख़्वाब देखने चाहिएँ।" फिर ज़ोरदार क़हक़हा लगाया। "हैरत है! हर ख़्वाब से तो बस एक ही बात ज़ाहिर होती है कि तुम हम पर हुकूमत करोगे। हाकिम हो हमारे क्या? और दूसरा ख़्वाब सुनो! उस में तो हमारे माँ-बाप भी आलीजाह यूसुफ़ के सामने झुकते नज़र आते हैं।"

करख़्त लहजे में वह नौउम्र यूसुफ़ के सामने ऊँची आवाज़ में कहने लगा, "मेरे भाइयो! मैंने एक और ख़्वाब देखा है जिस में सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे आगे झुक रहे थे।"

ज़बूलून ने हज़रत यूसुफ़ के गाल पर तमाँचा मारने के लिए अभी हाथ उठाया ही था कि हज़रत याक़ूब की गरजदार आवाज़ सुनाई दी, "कुछ शर्म करो, हासिद बच्चों की-सी हरकतें करते हो! मर्द हो तो अपनी मरदानगी साबित करो।"

फिर हज़रत याक़ूब ने रूबिन को खा जानेवाली नज़रों से देखा और उन सबको वहाँ से चले जाने का हुक्म दिया। "परसों तुम रेवड़ को हरी-भरी चरागाहों में ले जाओ जो तुम्हें सिकम के नवाह में मिलेंगी। मैं बूढ़े अनूस और उसकी बीवी अदा को तुम्हारी देख-भाल के लिए तुम्हारे साथ भेज दूँगा। तुम्हें इस तवील सफ़र के लिए काफ़ी तैयारी करनी होगी। और हाँ जब सिकम के क़रीब पड़ाव डालो तो ज़रा होशियार

रहना, मुमकिन है 10 साल गुज़रने के बाद भी वह लोग तुम्हें न भूले हों।"

सिकम की याद आते ही उनके दिल पर चोट लगी और सब के मुँह बंद हो गए। हज़रत याक़ूब को उन पर तरस आ रहा था। वह बड़े ख़तरनाक इलाक़े में जा रहे थे। उनकी तसल्ली के लिए वह कहने लगे, "लियाह बैलगाड़ी में खाने-पीने का सामान, बरतन और दूसरी ज़रूरी चीज़ें लादने में अदा की मदद कर देगी। उसने उसे सब कुछ बहुत अच्छी तरह सिखा रखा है। वह तुम्हें मज़ेदार खाना पकाकर खिलाया करेगी।"

जब भाई अपने बाप के साथ बहस में पड़ गए तो हज़रत यूसुफ़ ने मौक़े को ग़नीमत जाना और वहाँ से चुपके से खिसक गए। उनका दिल बुरी तरह घायल था और हसबे-मामूल वह शदीद मायूसी और तनहाई का शिकार थे। यह तमाम हालात उन्हें अल्लाह के और क़रीब ले जाने का बाइस बन रहे थे। खुले मैदान में जाकर वह मुँह के बल ज़मीन पर गिर गए और अपनी तमामतर मायूसी और अकेलेपन को रब के हुज़ूर उंडेल दिया। काफ़ी देर तक वह अपने बापदादा के रब के हुज़ूर झुके रहे जो मुहब्बत, रहम और वफ़ादारी का सरचश्मा है। हज़रत यूसुफ़ ने फ़ैसला किया कि ख़्वाह कुछ भी हो जाए मैं किसी क़ीमत पर भी अपने भाइयों के नक़्शे-क़दम पर नहीं चलूँगा। अल्लाह के क़रीबतर रहने के लिए मुझे अपने बाप की पैरवी करना है। उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए दुआ

की, “ऐ रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी मरज़ी के मुताबिक़ और तेरी क़ुरबत में ज़िंदगी गुज़ारूँ।”

फिर भाइयों का ग़ुस्सा रूबिन पर उतरने लगा। ज्योंही उनका बाप नज़रों से ओझल हुआ लावी उस पर बरस पड़ा, “ओए, सिर्फ़ तेरी वजह से हमें यहाँ से इतनी जल्दी जाना पड़ रहा है। बाबा तेरे वुजूद को बरदाश्त नहीं कर सकता इसी लिए वह हमें दूर-दराज़ इलाक़े सिकम में भेज रहा है।”

वह सुबह बड़ी सुहानी थी जिस रोज़ यह क़ाफ़िला रवाना हुआ। इतना बड़ा रेवड़ लेकर भाई बड़े मुनज़्ज़म अंदाज़ में जा रहे थे। उस वक़्त दूर तक गर्द का बादल ही नज़र आ रहा था। घरेलू सामान की बैलगाड़ियों पर बैठे अदा और अनूस दूर से दो नुक़ते लग रहे थे। लियाह की निगाहें उनका पीछा करती रहीं। जब वह नज़रों से ओझल हो गए तो उसने सुख का साँस लिया। लगता था कि जल्द ही सारा बोहरान ख़त्म हो जाएगा और वक़्त ज़ख़्मों पर मरहम रख देगा।

दिन हफ़्तों और हफ़्ते महीनों में तबदील हो गए, लेकिन हज़रत याक़ूब के बेटों की कोई ख़बर न मिली। ख़ैमाबस्ती के मकीनों की बेचैनी बढ़ने लगी। सब उन भाइयों के लिए सख़्त परेशानी महसूस करने लगे। एक शाम खाने के बाद हज़रत याक़ूब ने लियाह से अपने ख़दशात का इज़हार किया, “अल्लाह जाने सिकम के नवाही गाँव के लोगों ने उनके

साथ क्या सुलूक किया हो! वह अभी तक भूले नहीं हैं। उफ़! ख़ुदा न करे, ख़ुदा न करे।" उन्होंने भारी दिल के साथ भड़कती आग पर नज़रें जमा दीं और फिर फ़ैसलाकुन अंदाज़ में बोले, "मैं यूसुफ़ को उन्हें ढूँडने भेजता हूँ। कम अज़ कम वह मुझे उनकी ख़ैरियत की ख़बर तो लाकर देगा। तब मुझे चैन आएगा।"

लियाह को यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई कि शौहर अपने सब बेटों से प्यार करते हैं। ताहम उसने दबी दबी आवाज़ में अपना ख़दशा भी ज़ाहिर कर दिया, "सोच लें सत्रह साल के अकेले नौजवान के लिए यह एक लंबा और ख़तरनाक सफ़र है।"

आख़िरकार हज़रत याक़ूब ने अपने नौउम्र बेटे को भेज ही दिया। जब हज़रत यूसुफ़ ने इस हुक्म को कमाल रज़ामंदी से क़बूल कर लिया तो बाप की ख़ुशी की इंतहा न रही। बग़ैर वक़्त ज़ाया किए हज़रत यूसुफ़ सफ़र पर रवाना हो गए। वह बिनयमीन को ख़ुदा हाफ़िज़ कहने के लिए तलाश कर रहे थे कि वह दौड़ता हुआ ख़ुद ही उनके पास आ पहुँचा। उसके एक हाथ में बँसरी और दूसरे में फ़लाख़न थी। उसकी आँखें ख़ुशी से चमक रही थीं। वह दूर ही से पुकारकर कहने लगा, "यूसुफ़ भाई! यूसुफ़ भाई! देखो मेरा फ़लाख़न का निशाना कितना अच्छा हो गया है। वह सामने दरख़्त पर देखो। देख रहे हो ना? मैं बड़ी आसानी से उसके तने का निशाना ले सकता हूँ।" फ़लाख़न का पत्थर लहराता हुआ सीधा जाकर निशाने पर लगा।

“शाबाश बिनयमीन! मुझे तुम पर फ़ख़्र है। मश्क़ जारी रखो। मैं सिकम जा रहा हूँ। तुम अपना ख़याल रखना।”

बिनयमीन ने शदीद एहतजाज किया, “बाबा! मैं भी यूसुफ़ भाई के साथ जाऊँगा। मुझे जाने दो ना बाबा!”

हज़रत यूसुफ़ ने मुसकराते हुए कहा, “जाने दो बिनयमीन! बेवुक़ूफ़ मत बनो। सिकम बहुत दूर है। वहाँ पहुँचने में मुझे बहुत दिन लगेंगे। इसके अलावा रास्ता भी ख़तरनाक है। ख़तरा है कि डाकुओं और जंगली जानवरों से भी वास्ता पड़े।”

हज़रत याक़ूब ने यह सुनकर हाँ में सर हिलाया और बिनयमीन के कंधों के गिर्द अपने बाज़ू हमायल करके उसे दिलासा दिया, “यूसुफ़ सफ़र पर जा रहा है ना। चलो फिर बँसरी पर एक धुन सुना दो। यूसुफ़ जितनी जल्दी सफ़र पर जाएगा उतनी ही जल्दी लौट भी आएगा।”

हज़रत यूसुफ़ ने अपने भाई को गले से लगाया और कहने लगे, “अल्लाह तुम्हारे साथ हो। फिर मिलेंगे।”

बाप और बेटे ने मज़ीद कोई बात न की। दोनों ही ख़ामोश रहे। हज़रत यूसुफ़ जल्दी से बाहर निकल गए और बिनयमीन की उदास धुन उन्हें दूर तक सुनाई देती रही। उन तीनों में से किसी के वहमो-गुमान में भी न था कि हज़रत यूसुफ़ हबरून की वादी में फिर कभी नहीं लौटेंगे।

कई दिनों की मुश्किलात बरदाश्त करते हुए वह जब सिकम पहुँचे तो वहाँ उनके भाइयों का निशान तक न था। जब उनकी नज़र क़दीम

शहर पर पड़ी तो उनके वुजूद में एक सरद लहर दौड़ गई। उनके कानों में बाप की यह आवाज़ गूँज रही थी, “यूसुफ़! सिकम के शहज़ादे की तरह जिंसी आज़माइश में न पड़ जाना। इससे ख़बरदार रहना। इसके बाइस बहुतों की ज़िंदगी तबाह हो चुकी है।”

अभी वह फ़ैसला नहीं कर पाए थे कि क्या करें और क्या न करें कि एक आदमी ने उन्हें बताया कि उनके भाई वहाँ से जा चुके हैं और यह कि उसने उन्हें कहते सुना था कि अब दोतैन को चलते हैं।

एक लमहे के लिए हज़रत यूसुफ़ ने घर लौटने का ख़याल किया। अब उनके भाई सिकम के ख़तरनाक इलाक़े से निकल चुके थे। वापस जाने से वह उनसे मुलाक़ात करने से बच सकते थे और उनके तानों से भी जो आसेब की तरह उनका पीछा करते थे। लेकिन फिर उन्होंने सोचा, “नहीं, घर नहीं जाऊँगा बल्कि ख़ुद देखूँगा कि भाई किस हाल में हैं।”

इतना कुछ होने के बावुजूद वह अपने भाइयों से मुहब्बत करते थे। पस वह दोतैन की तरफ़ रवाना हो गए। जब उनकी नज़र दूर गड़े ख़ैमों पर पड़ी तो उनका दिल ख़ुशी से बेक़रार होने लगा।

अदा ने कपड़े धोकर झाड़ियों पर फैलाए हुए थे और रेवड़ ख़ैमों से कुछ फ़ासिले पर चरता हुआ नज़र आ रहा था। यह देखकर वह उसी सिम्त चल पड़े।

उनके भाइयों ने दूर ही से एक तनहा शख़्स को आते देखा। उस पर नज़र पड़ते ही उनके दिलों में सोई हुई नफ़रत एकदम जाग उठी। रूबिन ने तंज़न कहा, "वह देखो, ख़्वाब देखनेवाला चला आ रहा है।"

सब के सब एक आवाज़ होकर चिल्ला उठे, "चलो इससे जान छुड़वाएँ। हमेशा के लिए इसका ख़ातमा ही कर दें। बाबा समझेगा इसे कोई जंगली जानवर खा गया है।"

इन बुलंद क़हक़हों में नफ़ताली की आवाज़ गूँजी, "फिर हम देखेंगे कि इसके ख़्वाबों का क्या बनता है। हा हा हा! अरे फिर वह हम पर हुकूमत कैसे करेगा? हा हा हा!"

इस वक़्त रूबिन को अपनी जान के लाले पड़े हुए थे। हालात क़ाबू से बाहर होते जा रहे थे। वह सबसे बड़ा था। उस पर यूसुफ़ की ज़िम्मेदारी आइद होती थी। उसने हिकमते-अमली से काम लेते हुए कहा, "सुनो! इसे जान से नहीं मारते बल्कि किसी क़रीबी गढ़े में फैंक देते हैं। देखो इसे अज़ियत न देना, बस ज़रा डरा-धमका देना।"

उसका इरादा था कि जब कोई भी आस-पास नहीं होगा तो वह हज़रत यूसुफ़ को बचाकर वापस बाप के पास भेज देगा।

उधर हज़रत यूसुफ़ इस साज़िश से क़तई बेख़बर बाप के हुक्म की तामील और भाइयों की मुहब्बत में आगे ही आगे बढ़ते जा रहे थे। उनके पाँव इस तवील सफ़र में बुरी तरह मुतअस्सिर थे इसलिए चाल में क़दरे लँगड़ाहट आ गई थी। उनके होंटों पर पपड़ी जमी थी और सख़्त प्यास

लग रही थी। भाइयों पर नज़र पड़ते ही उन्होंने हाथ हिलाया और दूर ही से ज़ोरदार आवाज़ में सलाम किया। लेकिन जवाब में घंबीर ख़ामोशी और भाइयों के करख़्त चेहरे देखकर उनका दिल काँप उठा।

और फिर वह आनन-फ़ानन अपने भाई पर टूट पड़े, "ओ! तो तुम यहाँ हमारी जासूसी करने आए हो?" उन्होंने हज़रत यूसुफ़ के जिस्म से उनका लिबास खींचकर उतार दिया। वह धड़ाम से ज़मीन पर आ रहे। शमाऊन ने अपना भारी पाँव उनकी गरदन पर रख दिया। भाइयों ने उसे एक रस्सी पकड़ाई जिससे हज़रत यूसुफ़ को कसकर जकड़ दिया गया। शुरू शुरू में हज़रत यूसुफ़ इसे भाइयों का मज़ाक़ समझते थे, लेकिन जल्द ही पता चला कि ऐसा नहीं है। जल्द ही सारे भाइयों की असल सोच बेनिक़ाब हो गई। वह उनके भाई नहीं बल्कि ज़ालिम क़ातिल थे जो उन्हें जान से मारने के दरपै थे।

शमाऊन ने अपना चेहरा उनके क़रीब लाते हुए कहा, "हम तुझे जान से मार डालेंगे और बाबा को पता तक नहीं चलेगा। हम उन्हें बता देंगे कि तुम्हें किसी दरिंदे ने फाड़ खाया है। हा हा हा!"

सब भाइयों ने उनके गिर्द घेरा डाल लिया और दान चिल्लाया, "ख़्वाब देखनेवाला हमारा हाकिम, हमारा बादशाह यह जा रहा है!"

हज़रत यूसुफ़ का ख़ौफ़ के मारे बुरा हाल था। उन्हें अपने सामने मौत नज़र आ रही थी। "अल्लाह के लिए मेरी जान बख़्श दो। बाबा की ख़ातिर मुझे छोड़ दो।" आँसू उनके रुख़सारों पर बह रहे थे। सिसकियों

से उनका पूरा वुजूद काँप रहा था। “मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ। मैं तुम्हारा भाई हूँ।”

लेकिन बजाए रहम करने के वह उनकी मिन्नत-समाजत की नक़ल उतारते रहे और उनकी फ़रियाद पर अपने कान बंद कर लिए। फिर बड़ी बेरहमी से उन्हें एक ख़ुश्क कुएँ में फैंक दिया और ख़ुद पास ही खाना खाने के लिए बैठ गए।

हज़रत यूसुफ़ को उनकी आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं। वह इस ख़याल से लरज़ उठे कि भाई तो मुझे जान से मार देने पर तुले हुए हैं।

मिसर का सफ़र

काफ़ी देर तक बेरहम भाइयों की करख़्त आवाज़ें हज़रत यूसुफ़ के कानों में पड़ती रहीं। उनके ख़ौफ़नाक क़हक़हे उनके दिमाग़ की रगें फाड़ रहे थे। फिर यों लगा जैसे वह आपस में झगड़ रहे हों। यकलख़्त उनकी यह चीख़म-दहाड़ एक घंबीर ख़ामोशी में बदल गई। सन्नाटा काफ़ी देर तक तारी रहा जिससे हज़रत यूसुफ़ ने अंदाज़ा लगाया कि अब वह यहाँ से जा चुके हैं। गढ़े में गिरने की वजह से उनका पूरा जिस्म बुरी तरह दुख रहा था। रगड़ से बायाँ कंधा छिल चुका था। उनका सर दर्द से फट रहा था। प्यास से हलक़ में काँटे चुभ रहे थे जिससे अज़ियत में और इज़ाफ़ा हो रहा था। उन्होंने अपनी पसलियाँ टटोलीं। हाथ से छूते ही ऐसी टीस उठी कि साँस ऊपर का ऊपर ही रह गया।

यह जिस्मानी तकलीफ़ तो उस तलख़ी के मुक़ाबले में कुछ भी न थी जिसने उनकी रग रग में ज़हर भर दिया था। वह काँपने लगे। उनके दिल में अपने जल्लाद-सिफ़त भाइयों के लिए ग़ुस्से, नफ़रत और इंतक़ाम

का लावा उबल पड़ा। इससे पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ था। उनकी रूह को कभी किसी चीज़ ने इतना घायलो-पामाल नहीं किया था। और तो और उन्हें अपने बापदादा के ख़ुदा पर भी बहुत ग़ुस्सा आ रहा था। क्या उन्होंने अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर नहीं की थी? अगरचे वह जानते थे कि जिस इलाक़े में उनके भाई हैं वह ख़तरे से बाहर है फिर भी वह सिकम से इतना लंबा सफ़र करके उनकी ख़ैरियत मालूम करने आए थे। यह सब कुछ मुहब्बत ही तो थी। अल्लाह की मुहब्बत, बाप की मुहब्बत और उन भाइयों की मुहब्बत जिसने उन्हें यह सब कुछ करने पर आमादा किया था।

गढ़े की इस ख़ौफ़नाक तारीकी में जहाँ उनके हर तरफ़ कीड़े-मकोड़े रेंग रहे थे, तरह तरह के ख़यालात आने लगे। "कहीं मेरा ख़ुदा भी उन देवताओं की मानिंद न हो जो लोगों को अज़ियत पहुँचाकर ख़ुश होते हैं!" हज़रत यूसुफ़ ने अपने दुखते सर को हाथों में थाम लिया। "क्या वाक़ई अल्लाह का वुजूद है या वह हज़रत इब्राहीम, हज़रत इसहाक़ और हज़रत याक़ूब का ख़्वाब ही था? कम अज़ कम मैंने तो अल्लाह को आज तक नहीं देखा और न उसकी आवाज़ ही सुनी है।"

वह कुछ देर सोच में डूबे रहे। वसवसों ने उन्हें शक और बेयक़ीनी के दोराहे पर ला खड़ा किया था कि अचानक वह चौंके। ज़ोर से अपने सर को झटका। अब वह कुल्ली तौर पर अपने हवास में थे। "नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। हज़रत इब्राहीम ने अपने घराने के तहफ़्फ़ुज़ को कभी

एक ख़्वाब की ख़ातिर दाँव पर नहीं लगाया होगा। यक़ीनन अल्लाह उन पर ज़ाहिर हुआ था। और जब उन्हें एक बिलकुल अनजानी जगह पर जाने का हुक्म मिला था तो यक़ीनन ख़ुदा और उनके दरमियान एतमाद का मज़बूत बंधन मौजूद था। वह दिल से अल्लाह पर भरोसा रखते थे।"

यह ख़याल आते ही हज़रत यूसुफ़ पर यह बात वाज़िह हो गई कि अल्लाह की राहों पर चलते चलते परदादा इब्राहीम ने अपने रब पर भरोसा करना और उससे मुहब्बत करना सीख लिया था। आज़माइशें उनके ईमान की मज़बूती का बाइस बनती थीं। यही वजह थी कि अल्लाह ने उन्हें उस वक़्त तक औलाद अता न की जब तक कि वह और उनकी बीवी की उम्र हद से ज़्यादा न हो गई। फिर उसने उन्हें हज़रत इसहाक़ बख़्शा ताकि वह जानें कि वह क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा है और एक क़ाबिले-एतमाद हस्ती है जिसने अपना वादा पूरा किया। हज़रत इसहाक़ और उनके बेटे याक़ूब ने भी जान लिया था कि अल्लाह शफ़ीक़ और वफ़ादार है।

हज़रत यूसुफ़ करब से चिल्ला उठे, "ऐ मेरे बापदादा के ख़ुदा, मेरी मदद कर। मेरी जान बचा ले। जब एक ताक़तवर फ़ौज मेरे परदादा को मिटाने को थी तो उस ख़ौफ़ की हालत में तू उन्हें दिखाई दिया था। तूने उन्हें यक़ीन दिलाया था, 'मैं तेरी सिपर और तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ'। ख़ुदाया इस वक़्त मुझे तेरी हिफ़ाज़ती सिपर की सख़्त ज़रूरत है। लेकिन

इससे कहीं बढ़कर मैं तुझे जानना और तेरी ख़िदमत करना चाहता हूँ। ख़ुदाया तेरे बग़ैर मेरी ज़िंदगी बेमानी है।"

जाने इस वक़्त इबलीस हज़रत यूसुफ़ के दिमाग़ में नए गुमान लिए कहाँ से आ टपका! उसने उनके कान में डाला, "अल्लाह सिर्फ़ एक ख़्वाब है। तुम लोग कभी भी एक क़ौम नहीं बनोगे और न दुनिया के लिए बरकत का बाइस ही होगे। ज़रा अपने भाइयों ही को देख लो! ख़ुदा में तो इतनी क़ुदरत भी नहीं कि उनके दिल ही बदल डाले। यह मत भूलो कि वह जल्द ही तुम्हें मार डालेंगे।"

उनके सर पर मायूसी के गहरे बादल मंडलाने लगे। बिनयमीन की जान के ख़तरे का ख़ौफ़ उन्हें और भी शिकस्तादिल किए जा रहा था। और सबसे बड़ा यह खटका कि शायद अल्लाह ने मुझे छोड़ दिया है। फिर वह ज़ारो-क़ितार रोने लगे और चिल्लाकर अल्लाह को पुकारा कि किसी तरह मुझ पर ज़ाहिर हो जा। गो न कोई आवाज़ सुनाई दी, न कुछ नज़र आया, तो भी उन्हें महसूस हुआ कि ख़ुदा मौजूद है। मेरा अंजाम बख़ैर होगा क्योंकि अल्लाह ज़िंदा है और हर शै उसके इख़्तियार में है। इसलिए मुझे अपने इंतक़ामी ख़यालात, अपने भाइयों से नफ़रत, हत्ता कि अपने ख़दशात को भी तर्क करना है। सिर्फ़ इसी सूरत में ख़ुदा मेरी ज़िंदगी को अपने हाथ में लेगा। जिस तरह अल्लाह ने परदादा हज़रत इब्राहीम से कहा था, "तू मेरे हुज़ूर में चल और कामिल हो।"

हज़रत यूसुफ़ के दिलो-दिमाग़ में एक अजीब-सी कशमकश जारी रही। सख़्त आज़माइश की इस घड़ी में उन्होंने आख़िर में अपने आपको अल्लाह के हाथों में सौंप दिया, अपनी तमामतर फ़िकरों को उस पर डाल दिया। तब नफ़रत, बदले की आग, मौत का ख़ौफ़ और बिनयमीन की फ़िकर, सब बोझ एक एक करके उनके सर से उतरते चले गए और उनका दिल इतमीनान से मामूर हो गया।

गढ़े में हर तरफ़ घिनौने कीड़े-मकोड़े रेंग रहे थे। छिपकलियों की कसरत ने माहौल को और ज़्यादा ख़राब बना रखा। इस ख़ौफ़नाक और कपकपा देनेवाली जगह के बावुजूद हज़रत यूसुफ़ को सुकून आया। उन्होंने डोर अपने बापदादा के ख़ुदा के हाथ में दे दी थी—जो हो सो हो! ख़ुदा मेरे साथ है तो ख़ौफ़ कैसा? वह ख़ुद ही मेरा दुख बाँट लेगा। जब उसी पर भरोसा ठहरा तो वही मुश्किलात पर ग़ालिब आने की हिम्मत और ताक़त अता करेगा। अब तक मालूम न था कि इस मुश्किल आज़माइश पर ग़ालिब आएँगे कि नहीं। शैतान ने तो उनके ईमान को मुतज़लज़ल करने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया था। लेकिन जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे! ख़ुदा ने उन्हें पहले से भी कहीं ज़्यादा ईमान की मज़बूती अता की थी। वह उनको अपने ख़ास काम के लिए तैयार कर रहा था, जिसके लिए ज़रूरी था कि वह अपने आपको कुल्ली तौर पर उसके सपुर्द कर दें।

अचानक वह चौंक पड़े। उन्होंने घबराकर ऊपर देखा। लावी, यहूदाह और आशर नीचे गढ़े में झाँकते नज़र आए। भाइयों को देखकर ढारस बँधने की बजाए उनके वुजूद में ख़ौफ़ की सरद लहर दौड़ गई। फिर एक करख़्त आवाज़ गूँजी, "तू ख़्वाब देखनेवाला नींद के मज़े ले रहा है। क्यों?" और फिर ख़ौफ़नाक क़हक़हे हर तरफ़ बिखर गए। उन्होंने बड़े मानीख़ेज़ अंदाज़ में एक दूसरे से नज़रें मिलाईं और एक रस्सी नीचे उतार दी।

"यह पकड़ो। ज़रा मज़बूती से ... हम ऊपर खींच रहे हैं तुम्हें ... उफ़, यह छोकरा कितना वज़नी है! लगता है बाप ने ख़ूब खिला-पिला रखा है इसे।"

जब हज़रत यूसुफ़ गढ़े से बाहर निकले तो उनका हुलिया देखनेवाला था। उनका सारा जिस्म कीचड़ से लतपत था और ज़ख़्मों से रिसनेवाले ख़ून ने मिट्टी के साथ मिलकर उनकी सूरत ही बदल डाली थी। उन्होंने बाहर आकर सुख का साँस लिया। उन्हें यों महसूस हुआ जैसे यकदम सारी बलाएँ टल गई हैं। लेकिन अगले ही लमहे गोया आसमान सर पर टूट पड़ा। सब उम्मीदों पर पानी फिर गया। गढ़े के पास ताजिरों का एक क़ाफ़िला खड़ा था।

क़ाफ़िले के सरदार योब ने हज़रत यूसुफ़ पर उचटती-सी नज़र डाली तो वह सर से पाँव तक थर्रा गए। पस्तक़द मगर मोटे-ताज़े योब की

मुतलाशी उँगलियाँ हज़रत यूसुफ़ के जिस्म को टटोलने लगीं। फिर उसने गरजकर कहा, "अपना मुँह खोलो।"

एहसासे-ज़िल्लत से हज़रत यूसुफ़ के कान की लौएँ सुर्ख़ हो गईं। उफ़ मेरे ख़ुदा! इस क़दर तहक़ीर। उनका मुआयना इस तरह किया जा रहा था जैसे वह इनसान नहीं बल्कि हैवान है जिसकी सौदाबाज़ी हो रही है। उन्हें अपनी आँखों पर यक़ीन नहीं आ रहा था कि उनके भाई यहाँ तक गिर सकते हैं कि अपने बाप के चहेते, अपने ख़ून को यों ग़ुलामों की तरह बेच दें। वह अपने भाइयों के आगे घुटनों के बल गिर पड़े और गिड़गिड़ाकर रहम की भीक माँगने लगे, "ख़ुदा के लिए मुझे ग़ुलाम बनाकर न बेचो। कुछ तो ख़याल करो। बाबा क्या कहेंगे? उन्हें क्या जवाब दोगे? वह क्या करेंगे मेरे बग़ैर?"

लेकिन बजाए इसके कि छोटे भाई की दर्दनाक आवाज़ें उन पर असर करतीं उनके दिल और पत्थर हो गए और सबने उन्हें डाँटकर ख़ामोश रहने को कहा।

हज़रत यूसुफ़ बेबसी के आलम में एक एक चेहरे को तकते और इल्तिजा करते रहे इस उम्मीद पर कि शायद कहीं रहम की झलक नज़र आ जाए। आख़िर उनकी पुरउम्मीद निगाहें यहूदाह पर ठहर गईं। उन्होंने सोचा कि बड़ा भाई होने के नाते उसका दिल ज़रूर पसीज जाएगा। वह दर्द की शिद्दत से कराहते और नक़ाहत से रेंगते हुए सिरके, यहूदाह के पाँव पकड़ लिए और रो रोकर इल्तिजा करने लगे, "यहूदाह भाई! देखो

मैं तुम्हारा भाई हूँ ना? अगर मेरी कोई बात आपको बुरी लगी है तो मैं माफ़ी चाहता हूँ। जैसे आप कहेंगे वैसे ही करूँगा। ख़ुदा के वास्ते मुझे इन लोगों के हाथ न बेचो। यह मुझे ग़ुलाम बना लेंगे। मत करो यह ज़ुल्म भाई। रहम करो।"

हज़रत यूसुफ़ की दर्द-भरी फ़रियाद ने पत्थर को नरमा दिया। यहूदाह की आँखों में रहम की झलक देखकर दान की आँखों में ख़ून उतर आया। उसने हज़रत यूसुफ़ को ज़ोरदार ठोकर मारी और ग़ुस्से में ग़ुर्राया, "बहुत हो चुका। बंद करो अपनी यह बकवास।"

बड़ी बेदर्दी से हज़रत यूसुफ़ को पकड़कर उठा खड़ा किया गया। उनकी हालत ग़ैर हुई जा रही थी। हर चेहरा अजनबी लग रहा था। हर नज़र पराई हो चली थी। उनका अंग अंग बुरी तरह दुख रहा था। ज़ख़्मों से रिसते हुए ख़ून में मिट्टी की आमेज़िश से जलन और तड़प में इज़ाफ़ा हो रहा था। और सबसे बढ़कर यह कि बाप की प्यार-भरी गोद के बाद अचानक ग़ुलामी की ज़िल्लतआमेज़ ज़िंदगी का तसव्वुर ही रोंगटे खड़े किए जा रहा था।

उधर योब की बहसो-तकरार की वजह से सौदा तय नहीं हो पा रहा था। शमाऊन के सब्र का पैमाना अब तक लबरेज़ हो चुका था। इससे पहले कि यहूदाह अपना इरादा बदल ले वह चाहता था कि जल्द अज़ जल्द यूसुफ़ से छुटकारा हासिल कर ले। लिहाज़ा उसने मामला तय

करते हुए बस एक ही बात कही, "योब! बस आगे कुछ नहीं, 20 रुपए पर बात ख़त्म करो और इस मनहूस को हमारी नज़रों से दूर ले जाओ।"

यह जुमला हज़रत यूसुफ़ के लिए एक धमाके से कम न था। उन्हें अपने कानों पर यक़ीन नहीं आ रहा था कि उनके भाई उन्हें यों कौड़ियों के मोल बेच डालेंगे। नफ़रत कितनी अंधी होती है और हसद की आग कितनी तेज़ी से सब कुछ भस्म कर डालती है। इसका अंदाज़ा उन्हें आज हुआ जब उन्होंने हक़ीक़ी ख़ून को सफ़ेद होते देखा।

उधर योब को यक़ीन नहीं हो रहा था। इतना सस्ता सौदा तो उसने ज़िंदगी में कभी नहीं किया था। उसकी गोल-मटोल आँखें ख़ुशी से टिमटिमा रही थीं। उसने जल्दी जल्दी हज़रत यूसुफ़ के हाथों और पैरों में ज़ंजीरें डालीं और क़ाफ़िले को कूच का हुक्म दिया।

योब ने पलटकर हैरत से उन पर बारी बारी नज़र डाली। शायद दिल में यह सोच रहा हो कि क्या ज़माना आ गया है कि सगे भाई अपने छोटे भाई का सौदा चंद रूपों में कर रहे हैं और उसकी फ़रियाद का उन पर रत्ती बराबर असर नहीं होता। ताहम उसने अपने इन एहसासात और जज़बात का इज़हार न होने दिया।

क़ाफ़िला मिसर की जानिब रवाँ-दवाँ था। वसवसों और अंदेशों ने हज़रत यूसुफ़ के दिल में घिरकर रखा था। सारा रास्ता वह सिसकियाँ भरते रहे, लेकिन किसी ने उनसे बात तक न की। हत्ता कि योब ने भी उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया था। उन पर क़ियामत गुज़र गई। उनकी

फ़रियाद ने ज़मीनो-आसमान को हिला दिया। फ़िज़ाएँ काँप काँप गईं, लेकिन उनके बेहिस भाइयों पर ज़र्रा बराबर असर न हुआ। वह हसबे-मामूल अपने रेवड़ चराने लौट गए। उन में से एक ने बड़े बेज़ारकुन लहजे में सुक़ूत को तोड़ा, "कमबख़्त! हर वक़्त आसाब पर सवार रहता था। शुक्र है जान छूट गई। खाना-पीना हराम कर रखा था। आज तो डटके खाएँगे।"

अभी उन्हें सुख का साँस लिए ज़्यादा देर न गुज़री थी कि आशर की नज़र दूर आते हुए रूबिन पर पड़ी जो गढ़े के पास आकर रुक गया था। उसने भाइयों से कहा, "अरे वह देखो रूबिन वापस आ गया है। गढ़े के पास वापस खड़ा है। शायद अभी तक यही समझता है कि यूसुफ़ वहीं पड़ा है। जब उसे मालूम होगा कि उसके साथ क्या हुआ है तो वह ज़रूर कुछ न कुछ कहेगा।"

यहूदाह बुड़बुड़ाते हुए बोला, "रूबिन को तो हम भूल ही गए थे। वह दोतैन गया था। हैरत है उसने इतनी देर कहाँ लगा दी आख़िर?" सब के चेहरों पर फ़िकरमंदी के आसार नुमायाँ थे।

इस असना में रूबिन गढ़े में हज़रत यूसुफ़ को आवाज़ें दिए जा रहा था, "भाई! यूसुफ़ भाई! सुनो! यह रस्सी पकड़ लो। देखो तुम्हारी सारी सख़्ती टल गई है। तुम्हारे लिए तो थोड़ा सदमा ही बहुत है।" उसने घुटनों के बल होकर रस्सी को गढ़े में फैंका और फिर अंधेरे में आँखें फाड़ फाड़कर हज़रत यूसुफ़ को तलाश करने लगा। लेकिन गहरी तारीकी में

उसे कुछ भी सुझाई न दिया। फिर उसने बड़ी मिन्नत से पुकारकर कहा, "देखो यूसुफ़! तुम्हें भी मेरा साथ देना होगा। नादान न बनो।"

जब इतना पुकारने पर भी किसी बात का जवाब मिला और न किसी ने रस्सी को ही थामा तो उसका माथा ठनका। उसने गहरे गढ़े में एक बार फिर हज़रत यूसुफ़ को ढूँडने की कोशिश की। अब तक उसकी आँखें अंधेरे से क़दरे मानूस हो चुकी थीं। गढ़ा ख़ाली था। उसे शदीद धचका लगा। वह वहीं सर पकड़कर बैठ गया। "यूसुफ़ का क्या हुआ? उन्होंने उसके साथ क्या किया?" वह एक झटके से उठा और सीधा अपने भाइयों की तरफ़ भाग निकला। वह ग़ुस्से से पागल हुआ जा रहा था। सदमे से निढाल उसने एहतजाजन अपने कपड़े तक फाड़ डाले थे। वहाँ पहुँचते ही उसने इंतहाई बेबसी से मुतालबा किया, "यूसुफ़ कहाँ है?"

जवाब में गहरी ख़ामोशी पाकर वह उनके चेहरों के तअस्सुरात से समझ गया कि अब यूसुफ़ यहाँ नहीं रहा। वह करब से चिल्ला उठा, "कहाँ है यूसुफ़, मैं पूछता हूँ कहाँ है वह? यहूदाह जवाब दो। पहलौठा होने के नाते मेरा हक़ है कि मैं जानूँ कि तुमने उसके साथ क्या किया है? नालायक़ो! बेरहम दरिंदो! इसका नतीजा मुझे ही भुगतना पड़ेगा।" उसके सर पर गोया जुनून सवार था। लेकिन अफ़सोस कि वह यह सब कुछ मुहब्बत के बाइस नहीं कह रहा था बल्कि उसे अपनी फ़िकर लाहिक़ थी। जहाँ तक यहूदाह का ताल्लुक़ था उसने कम अज़ कम

हज़रत यूसुफ़ को भाइयों के हाथों मरने से बचाने के लिए उन्हें बेच देने की तजवीज़ पेश की थी। मौक़े की नज़ाकत को देखते हुए उसके ज़हन ने फ़ौरन काम किया। उसने हज़रत यूसुफ़ का चोग़ा निकाला और उसे दिखाते हुए सारा क़िस्सा रूबिन को कह सुनाया।

फिर बड़े ग़ैर-जज़बाती अंदाज़ में बोला, "इस तरह यूसुफ़ का ख़ून हमारी गरदन पर न होगा। बाबा ख़ुद ही समझ जाएँगे कि उनके चहेते का क्या हश्र हुआ है। हमारा काम फ़क़त इतना है कि इस चोग़े को बकरे के ख़ून में डबोकर बाबा को दिखा दें और बस। आगे वह जो चाहें अंदाज़ा लगा लें।" फिर यहूदाह ने सबको अपनी तेज़ चुभती हुई आँखों से देखते हुए मुहर लगा दी, "आज के बाद हम में से कोई भी यूसुफ़ का नाम तक अपनी ज़बान पर नहीं लाएगा ... समझे!"

इतना बड़ा सानिहा होने के बावुजूद फ़िज़ा वैसी ही पुरसुकून लग रही थी। रेवड़ के ऊपर फ़िज़ा में एक उक़ाब चक्कर काट रहा था। झाड़ियों के पीछे से एक नन्हा-सा ख़रगोश फुदकता हुआ बाहर निकल रहा था। शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट फ़िज़ा में रस घोल रही थी और परिंदों की चहचहाहट ने माहौल को नग़मगीन बना डाला था। ऐसे में हज़रत यूसुफ़ के भाई अपनी अंदरूनी कशमकश पर ग़ालिब आकर ज़िंदगी को मामूल पर लाने की कोशिश में लग गए। लेकिन हज़ार काविश के बावुजूद वह अपनी रूह में चुभे उस काँटे को निकालने

में कामयाब न हो सके जो आइंदा 25 साल तक उनके लिए नासूर बननेवाला था।

शाम के साय ढलने लगे। बरादराने-यूसुफ़ अपनी ख़ैमाबस्ती की तरफ़ रेवड़ हँकाए हुए चल पड़े। सूरज दूर उफ़ुक़ के पार तारीकी में बड़े सुर्ख़ गेंद की मानिंद लुढ़कता हुआ ग़ुरूब होता गया। जैसे ही वह अपने ख़ैमों के पास पहुँचे अदा और अनूस ने उन्हें बड़े प्यार-भरे अंदाज़ में सलाम किया। अनूस गोश्त भून रहा था और पास ही अदा आटा गूँधने में मसरूफ़ थी। भुने हुए गोश्त में सब्ज़ी की मिली-जुली ख़ुशबू दीवाना किए जा रही थी। सब की भूक चमक उठी। अनूस ने चहकते हुए कहा, "खाना बिलकुल तैयार है। बस थोड़ी ही देर में रोटियाँ भी बन जाती हैं।"

यह सब कुछ देखकर शमाऊन के मुँह में पानी भर आया, "भई, मझसे तो और ज़्यादा सब्र न हो सकेगा।" सबने हम-आवाज़ होकर उसकी तसदीक़ की।

अदा ने एक नज़र सब पर डाली और फिर भौंओं को यों सुकेड़ा जैसे कुछ अचानक याद आ गया हो। फिर हैरत से पूछने लगी, "रास्ते में यूसुफ़ नहीं मिला तुम्हें? कल अनूस जब बाहर गया तो क़सम से उसने दूर से यूसुफ़ को देखा। हाँ वह यूसुफ़ ही था।"

रूबिन ने झट से ख़ूनआलूदा चोग़ा निकालकर उसे दिखाया और चेहरे पर मसनूई अफ़सुरदगी तारी करते हुए कहा, "अदा! तुम ठीक कहती

हो। वही नज़र आया होगा। हमें तो यूसुफ़ नहीं बल्कि सिर्फ़ यह कपड़े मिले हैं। लगता है उसे किसी जंगली दरिंदे ने फाड़ खाया है। सच क्या है यह जानने के लिए कल ख़ैमे उखाड़कर घर चलेंगे।"

अदा की तो चीख़ ही निकल गई। "यह तो बेशक यूसुफ़ ही का चोग़ा है। सच-मुच यूसुफ़ का चोग़ा है यह। उफ़ मेरे ख़ुदाया! तो क्या वह मर गया? मेरा इतना जवान, इतना ख़ूबसूरत, इतना अच्छा भाई हमसे बिछड़ गया? नहीं ऐसा नहीं हो सकता।"

अनूस भी आहो-ज़ारी में शरीक हो गया। दोनों खाना लगाते जाते और साथ साथ फूट फूटकर रोते रहते। उनकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी। दो मासूम, मुहब्बत-भरे और पुरख़ुलूस दिल मातम कर रहे थे। आँखें छलक रही थीं। हैरानी की बात कि सगे भाई अपने छोटे भाई की मौत पर किस बेहिस्सी से डटकर खा रहे हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। न उनकी आँखें नम थीं और न चेहरे पर किसी परेशानी के आसार ही नुमायाँ थे।

वह पत्थरदिल शैतान अगरचे ख़ुद में बाप का सामना करने का हौसला न पा रहे थे, लेकिन फिर भी ढिटाई का यह आलम था कि ख़ूनआलूद चोग़ा लेकर अपनी मन-घड़त कहानी लिए चंद दिनों के सफ़र के बाद सिहपहर को अपनी ख़ैमाबस्ती में जा पहुँचे। बिनयमीन उछलता-कूदता उनसे मिलने को दौड़ा और बड़ी मासूमियत से बोला, "यूसुफ़ भाई कहाँ हैं? उन्हें एक चीज़ दिखानी है।"

हज़रत याक़ूब बड़ी बेचैनी से ख़ैमे से बाहर निकल आए। उनकी बेचैन निगाहें अपने बेटे यूसुफ़ को तलाश कर रही थीं। उन्होंने बड़ी बेक़रारी से पूछा, "यूसुफ़ को तुम नहीं मिले क्या?"

रूबिन की तो जैसे ज़बान गुंग हो गई हो। हज़ार कोशिश के बावुजूद वह एक लफ़्ज़ भी न कह पाया। उसने ख़ामोशी से ख़ाको-ख़ून में लिथड़ा हुआ चोग़ा अपने बाप को थमा दिया।

शमाऊन धीमी आवाज़ में बोला, "बाबा, हमें यह कपड़े मिले हैं। कहीं यह आपके बेटे यूसुफ़ के तो नहीं?"

इस चोग़े को थामते ही हज़रत याक़ूब के हाथों में लरज़ा तारी हो गया। ज़िंदा बुढ़ापा जवान मौत का सदमा बरदाश्त न कर सका। वह फटी फटी आँखों से उस लबादे को तकते रहे जिसे बड़े चाव से ढेरों दुआओं के साथ उन्होंने अपने लाडले बेटे को पहनाकर रुख़सत किया था। अब वही लबादा उसकी मौत का पयाम बनकर उनके हाथों में मसला पड़ा था। ऐसी करबनाक घड़ी तो अल्लाह दुश्मन को भी न दिखाए। वह सदमे से चिल्ला उठे। एक दिलदोज़ चीख़ फ़िज़ाओं को चीर गई, "हाँ! हाँ! यह कपड़े यूसुफ़ ही के हैं। मेरा बेटा यूसुफ़! उसे ज़रूर किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। मेरे बच्चे यूसुफ़ को चीर-फाड़ डाला होगा ज़ालिम ने।"

हज़रत याक़ूब की आहो-ज़ारी सुनकर सारा क़बीला इकट्ठा हो गया और सफ़े-मातम बिछ गई। उनकी हालत ग़ैर हुई जा रही थी। उन्होंने

अपने कपड़े फाड़ डाले और टाट ओढ़ लिया। उन्होंने सोचा क्या था और हो क्या गया! सब तदबीरें उलटी हो गईं। उनका कलेजा ग़म से बुरी तरह छलनी हो गया। बेटे के सदमे ने बाप को निढाल कर डाला।

बिनयमीन को अभी तक यक़ीन नहीं आ रहा था। उसकी आँखों में अब भी उम्मीद की चमक थी। वह अब भी उसे ढूँड रही थीं। वह दुख से चिल्ला उठा। ढेरों सवाल उसके नन्हे-से ज़हन में उभर रहे थे। "यूसुफ़ भाई को शेर ने खाया है या भालू ने? क्या उसने यूसुफ़ भाई के बाज़ू और टाँगें भी चबा डालीं? यूसुफ़! मुझे यूसुफ़ भाई से मिलना है। क्या यूसुफ़ भाई कभी घर लौटकर नहीं आएँगे?"

लियाह ने बिनयमीन को मज़बूती से अपनी बाँहों में जकड़ लिया। वह राख़िल के बेटे यूसुफ़ के लिए इस तरह बैन कर रही थी जैसे वह उसकी बहन का नहीं बल्कि उसकी अपनी कोख से जना बेटा हो। हज़रत याक़ूब की ख़ैमाबस्ती में कुहराम मच गया। तमाम हरमें और बहू-बेटियाँ अपने सरदार को तसल्ली देने की कोशिश करने लगीं, लेकिन बेसूद।

उधर हज़रत याक़ूब के मुनाफ़िक़ बेटे अपने आपको बहुत ग़मगीन और दुखी ज़ाहिर करने की कोशिश कर रहे थे। वह बार बार अपने भाई के चोग़े को देखने को कहते जैसे उन्हें वाक़ई इसका बड़ा सदमा हो। साथ ही वह अपने बाप पर अपनी मुहब्बत जता रहे थे और उनका बड़ा ख़याल रख रहे थे। लेकिन दुखी बाप का दिल किसी क़िस्म की तसल्ली

क़बूल न करता था। बाप की ज़बान पर बस एक ही बात थी, "मैं तो मातम ही करता हुआ क़ब्र में अपने बेटे से जा मिलूँगा।"

जब मातम के दिन पूरे हो गए तो भाइयों का ख़याल था कि वह यूसुफ़ और अपने इस शर्मनाक फ़ेल को यकसर भुला देंगे। लेकिन अल्लाह ने उन्हें इस कोशिश में कामयाब न होने दिया।

हज़रत याक़ूब बिलकुल ही दिल छोड़ चुके थे। वह इस मुश्किल वक़्त में साथ निबाहनेवाली अपनी बीवी लियाह के कितने शुक्रगुज़ार थे। अब उनके सामने उनकी महबूबा बीवी राख़िल का बेटा बिनयमीन था जो उनकी आँखों का तारा था। माँ और भाई के बाद अब वह अकेला रह गया था। उसे प्यार की ज़रूरत थी और इस तरह दुनियावी आस की कड़ी से कड़ी मिल जाने से हज़रत याक़ूब ख़ुदा के और क़रीब आ गए। उन्होंने अल्लाह का दामन और मज़बूती से थाम लिया। उन्हें यह देखकर इंतहाई दुख होता था कि उनके बेटे रूहानी तौर पर बिलकुल मुरदा हैं। लेकिन फिर उन्होंने अपना यह बोझ ख़ुदा पर डाल दिया, "ऐ ख़ुदा! तू क़ादिरे-मुतलक़ है। तूने मेरी ज़िंदगी में बड़ा मोजिज़ा किया है कि मुझ जैसे ख़ताकार इनसान को मर्दे-ख़ुदा बना डाला है। मेरे बेटों की ज़िंदगी को भी बदल डाल।"

आज़माइश

योब की करख़्त आवाज़ फ़िज़ा में गूँजी, “अब हम कूच करेंगे।” मिदियानियों का क़ाफ़िला मसालाजात, रौग़ने-बलसान, मुर और तीन अदद ग़ुलामों से जिन में हज़रत यूसुफ़ भी शामिल थे लदा-फंदा रवाना हो गया। अधेड़-उम्र ग़ुलाम बड़ा बेज़ार और तलख़मिज़ाज मालूम हो रहा था जब कि चौदह-साला ग़ुलाम क़दरे चालाक दिखाई पड़ता था। योब ने उस शरीर को ख़बरदार करते हुए कहा, “हदाद! देखो मेरे साथ किसी क़िस्म की चालाकी नहीं चलेगी। वरना ऐसी पिटाई करूँगा कि उम्र भर याद रखोगे।”

हज़रत यूसुफ़ अपने ही ख़यालों में खोए हुए थे। उन्हें घर की याद बुरी तरह सता रही थी। उनका जी चाह रहा था कि सारे बंधन तोड़कर एक ही जस्त में अपने घर पहुँच जाएँ। उन्होंने आख़िरी बार बड़े दर्द-भरे अंदाज़ में पलटकर देखा। उन्हें यक़ीन नहीं आ रहा था। क्या वाक़ई उनका प्यारा घर, उनका घराना, बाप के साय में तहफ़्फ़ुज़ का एहसास

और हर वह चीज़ जो उन्हें अच्छी लगती थी उनसे छिन गई है? वह इन ही सोचों में गुम थे कि उनका पाँव किसी चीज़ में फंस गया जिससे वह लड़खड़ाकर गिर पड़े। क़ाफ़िले में मौजूद एक ताजिर ने एक मोटी-सी गाली दी और बेचारे हज़रत यूसुफ़ की पीठ पर कोड़ों की बारिश कर दी, "ऐ इबरानी लड़के! अहमक़ न बनो ... हाँ! हमारे कोड़ों के इशारों पर नाचना सीखो।" उसकी आवाज़ में बला का ग़ुरूर था।

हज़रत याक़ूब का नाज़ों-पला बेटा डगमगाता हुआ उठ खड़ा हुआ। आँखों में शिद्दते-दर्द से गरम गरम आँसू तैरने लगे। लेकिन आख़िर वह सँभल गया। एक आज़ाद पंछी जिसने सदा खुली फ़िज़ाओं में साँस लिया हो, जब उसके पर कतर दिए जाते हैं या पिंजरे में बंद कर दिया जाता है तो यह असीरी उसकी ज़िंदगी में कितनी तलख़ियाँ भर देती है! हज़रत यूसुफ़ की कैफ़ियत भी कुछ ऐसी ही थी।

कहीं दूर किसी गडरिये के ख़ैमे क़रीब आते दिखाई दिए। कोई बँसरी बजा रहा था और उसकी सुरीली तान हवा के दोश पर सवार सारी फ़िज़ा में गरदिश कर रही थी। इस आवाज़ के कान में पड़ते ही हज़रत यूसुफ़ को अपने वह सुहाने ख़्वाब याद आ गए जो उनके ज़हन पर बुरी तरह सवार हो चुके थे। उस वक़्त उन्हें पुख़्ता यक़ीन था कि इन ख़्वाबों के ज़रीए अल्लाह मुझे यह बताना चाहता है कि एक दिन मैं ज़रूर हाकिम बनूँगा। उनका ज़हन उलझने लगा। इतने सुहाने ख़्वाब और उनकी इतनी भयानक ताबीर। उन्होंने तो हाकिम बनने का सोचा बल्कि यक़ीन कर

लिया था, लेकिन आज वह ग़ुलाम बन चुके थे—बेड़ियों और ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ ज़र-ख़रीद ग़ुलाम जिसे सगे भाइयों ने कौड़ियों के मोल बेच डाला था। ताहम अल्लाह का पाक रूह जो उस गढ़े में उनसे हमकलाम हुआ था अब भी वहाँ मौजूद था। हज़रत यूसुफ़ को इस हुज़ूरी का साफ़ एहसास था। अब उनकी ज़िंदगी उस ज़ात के ताबे था जिसके इख़्तियार में सब कुछ है। अब उनका पूरा इरादा यह था कि जो भी हो मैं अपने आक़ा की बिलकुल ऐसे ही ख़िदमत करूँगा जैसे मैं अल्लाह की ख़िदमत कर रहा हूँ। इस तरह घटिया से घटिया काम में भी मेरा ज़मीर मुतमइन रहेगा।

मक्कार लड़का हदाद सिरकता हुआ हज़रत यूसुफ़ के पास आया और बड़े शोख़ अंदाज़ में आँख मारते हुए बोला, “देखो, मैं तुम्हें कुछ गुर सिखाता हूँ। यक़ीन जानो, ग़ुलामी में भी ज़िंदगी मज़े से गुज़रेगी। पते की बात तो यह है कि जितना कम काम कर सकते हो करो और दूसरे ग़ुलामों के बल पर जितना फ़ायदा उठा सकते हो उठा लो। कभी इधर पड़ रहे, कभी उधर डंडी मार दी और फिर कुछ झूटे-सच्चे बहाने घड़ लिए। क्या समझे?”

सूरज ऐन सर पर चमक रहा था। धूप की तेज़ी से सर से पाँव तक सब पसीने में शराबोर हो रहे थे। हलक़ में काँटे चुभ रहे थे। होंटों पर पपड़ी जमी थी। ऐसे में प्यास की शिद्दत से निढाल ख़ुश्क होंटों पर ज़बान फेरते हुए उम्ररसीदा ग़ुलाम बोला, “यह लोग यहाँ हमें पीने को

पानी भी देंगे या नहीं!" इतने में उनकी नज़र उन ताजिरों पर पड़ी जो खा-पीकर ताज़ादम हो रहे थे। इस ग़ैरइनसानी हरकत पर उसे ताव आ गया और फिर चिंघाड़ते हुए कहा, "योब! हमें भी पानी पिलाओ, ऐसा न हो कि मनज़िल तक पहुँचते पहुँचते हम आधे भी न रहें। इस में तुम्हारा ही नुक़सान है। कुछ भी न कमा पाओगे।"

योब ने उसे खा जानेवाली नज़रों से देखा और फिर बड़े नपे-तुले क़दम उठाता हुआ पानी की छागल मुँह से लगाए उसकी तरफ़ बढ़ा। और उसके सामने रुककर दाँत किचकिचाकर बोला, "ग़लीज़ पिल्ले! अपना मनहूस मुँह बंद रख। पानी चाहिए ना! यह ले पानी।"

यह कहकर उसने छागल उसके मुँह पर उंडेलकर ख़ाली कर दी और बोला, "एक बात कान खोलकर सुन लो। तुम्हें पानी सिर्फ़ शाम को मिलेगा और वह भी ऊँटों को पिलाने के बाद। समझे?"

इससे पहले कि कोई दूसरा शख़्स गंदी ज़बान इस्तेमाल करता हज़रत यूसुफ़ ने बड़ी आजिज़ी से कहा, "आक़ा! आप इसे पानी पिला दीजिए। मैं आपके ऊँटों को पानी पिला दूँगा और चारा भी खिला दूँगा। आप जो काम भी कहेंगे मैं ख़ुशी से कर दूँगा।"

हैरत की बात तो यह है कि वह बूढ़ा ग़ुलाम हज़रत यूसुफ़ की इस नेकी से ख़ुश होने की बजाए और ख़फ़ा हो गया और बजाए शुक्रगुज़ार होने के उन्हें बुरा-भला कहने लगा कि यूसुफ़ ने योब की मिन्नत-समाजत और ख़ुशामद क्यों की।

जहाँ तक हज़रत यूसुफ़ की आजिज़ी का ताल्लुक़ है, योब को उनकी यह बात बहुत भाई। वह उसकी नज़रों में जचने लगे। और यह जानकर तो उसे और भी ख़ुशी हुई कि इस इबरानी लड़के को मिसरी ज़बान भी थोड़ी बहुत आती है। इसके अलावा वह कुछ पढ़ा-लिखा भी है।

अब क़ाफ़िला दरयाए-नील के किनारे किनारे आगे बढ़ रहा था। दूर से हज़रत यूसुफ़ को वह अहराम नज़र आ रहे थे जो मरहूम मिसरी बादशाहों की यादगारें थीं। हज़रत यूसुफ़ तो शुरू ही से सक़ाफ़त के दिल-दादा थे। उन पर नज़र पड़ते ही ग़ैरमुल्की सक़ाफ़त में दिलचस्पी के जज़बे ने जोश मारा और वह योब से मिसरी ज़िंदगी के बारे में पूछने लगे।

ताजिर ने बड़े फ़ख़्र से कहा, "मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि तुम्हारे घराने के किसी शख़्स ने आज तक मिसर की सरज़मीन पर क़दम भी नहीं रखा होगा।"

लेकिन हज़रत यूसुफ़ ने उसकी तवक़्क़ो के बरअक्स उसे बताया कि उनके परदादा इब्राहीम कनान में पड़नेवाले एक बड़े कह्त से बचने के लिए मिसर गए थे। "हाँ! आज भी अकसर कह्त से बचने और अपने मवेशियों को बचाने के लिए चरवाहे ऐसा ही करते हैं।"

गरमी की शिद्दत में अब मज़ीद इज़ाफ़ा हो चला था। चिलचिलाती धूप वुजूद को जलाए दे रही थी। योब ने एक भरपूर अँगड़ाई ली और ऊँघ गया।

हज़रत यूसुफ़ ख़यालों ही ख़यालों में अपने परदादा के उस दौर में पहुँच गए जो उन्होंने मिसर में गुज़ारा था। वह सोचने लगे बदक़िस्मती से उन्होंने यह क़दम ज़रूर घबराहट के आलम में उठाया होगा, इसके लिए उन्होंने ख़ुदा से राहनुमाई भी हासिल नहीं की होगी। यही वजह है कि ज्योंही वह वहाँ पहुँचे मुश्किलात में घिर गए। सरहद पार करके मिसर में दाख़िल होने से पहले हज़रत इब्राहीम ने अपनी बीवी से दरख़ास्त की थी कि वह मिसरियों को यही बताए कि वह उनकी बीवी नहीं बहन है। इसकी वजह सारा की ख़ूबसूरती थी। उसके ख़ावंद को डर था कि कहीं उनकी बीवी छीनने की ख़ातिर उन्हें क़तल न कर दें।

उनका ख़ौफ़ बजा था क्योंकि ज्योंही मिसरियों की नज़र सारा पर पड़ी उन्होंने बादशाह से उसके हुस्न का चर्चा किया। जब बादशाह को यह इल्म हुआ कि वह हज़रत इब्राहीम की बहन है तो वह उसे अपनी हरमों में शामिल करने के लिए ले गया। इसके बदले में बादशाह ने हज़रत इब्राहीम को ढेरों भेड़-बकरियों, मवेशियों, गधों, ऊँटों और ग़ुलामों से नवाज़ा।

हज़रत यूसुफ़ ने भौंएं सुकेड़ते हुए सोचा कि अगर रब बर-वक़्त मुदाख़लत न करता तो यक़ीनन परदादा अपनी बीवी से हाथ धो बैठते। अल्लाह ने बादशाह के महल में रहनेवालों को एक ख़ौफ़नाक बीमारी में मुब्तला कर दिया। हाकिम परेशान हो गया और इस बीमारी की वजह जानने की कोशिश की। तब रब ने उस पर ज़ाहिर किया, “मैंने तुम्हें

इसलिए सज़ा दी क्योंकि तुमने मेरे नबी की बीवी को अपनी हरमों में शामिल कर लिया है।"

एक बुतपरस्त के मुँह से यह अलफ़ाज़ सुनने से उन्हें किस क़दर शर्म आई होगी, "तुमने झूट क्यों बोला? यह रही तुम्हारी बीवी। मैंने इसे छुआ तक नहीं। इसे लेकर फ़ौरन मिसर से निकल जाओ।" हज़रत इब्राहीम ख़लीलु-ल्लाह यानी ख़ुदा के दोस्त और नबी थे। वह मर्दे-ख़ुदा और रास्तबाज़ थे, लेकिन आज़माइश के इस लमहे में अपनी जान बचाने की ख़ातिर उनसे इतनी बड़ी ग़लती सरज़द हुई। ताहम अल्लाह की बर-वक़्त मुदाख़लत के बाइस उनकी बीवी और मिसरी हाकिम तबाही और गुनाह से बच गए।

हज़रत यूसुफ़ ने अहद किया कि मैं किसी क़ीमत पर भी अपनी ज़िंदगी से अल्लाह के नाम की तौहीन नहीं होने दूँगा। मैं अपने परदादा की ग़लती से सबक़ सीखकर अपनी राहें दुरुस्त रखूँगा।

आख़िरकार फ़िरऔन यानी मिसर के बादशाह का अज़ीम शहर नज़र आने लगा। क़ाफ़िला अपनी मनज़िल पर तक़रीबन पहुँच चुका था। खुले मैदानों, वसी चरागाहों, हसीन वादियों और दूर दूर तक फैले मज़ाहरे-फ़ितरत की गोद में पलनेवाला यह नन्हा चरवाहा जब इन वसी शाहराहों और बुलंद ऐवानों में से गुज़र रहा था तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। शहर के बड़े बड़े दरवाज़े, मुख़तलिफ़ देवताओं के सुनहरे मंदिर और हर तरफ़ ठाठें मारता हुआ लोगों का हुजूम, इन सब चीज़ों ने उसे

हैरान कर दिया। और सबसे बढ़कर फ़िरऔन का महल जो बज़ाते-ख़ुद एक शहर से कम न था। यह देखकर उनका दिल घबराहट से ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। कितने इतमीनान की बात थी कि वह इन हालात में तनहा नहीं थे बल्कि अल्लाह ने बार बार उन्हें तसल्ली दी कि "मैं तेरे साथ हूँ। तेरे परदादा की मिसर में आमद तो मेरी मरज़ी के ख़िलाफ़ थी, लेकिन तेरा यहाँ आना मेरे मनसूबे के ऐन मुताबिक़ है। मेरी राहों पर चल और बेदाग़ रह।"

क़ाफ़िला अपनी मनज़िल की तरफ़ रवाँ-दवाँ था कि अचानक योब ने रुकने का हुक्म दिया। उसकी नज़र एक मिसरी पर पड़ी थी जिससे वह ख़ूब वाक़िफ़ था। वह बड़ी राज़दारी से उसके क़रीब गया और कहने लगा, "याबल! मुअज़्ज़ज़ सिपहसालार फ़ूतीफ़ार के लिए मेरे पास एक ख़ास ग़ुलाम है।"

उस मिसरी ने इस कारोबारी ताजिर को तकब्बुराना अंदाज़ में सर से लेकर पाँव तक देखा और बुलंद आवाज़ में बोला, "फ़ूतीफ़ार के लिए जानते हो बेहतरीन चीज़ होनी चाहिए। उसका ताल्लुक़ आला मुअज़्ज़ज़ घराने से है जिसे हर चीज़ बेहतरीन मेयार की दरकार होती है!"

योब की आँखें चमक उठीं। "क्या मैं यह सब कुछ नहीं जानता! आओ, ख़ुद अपनी आँखों से देख लो।"

ज्योंही याबल की नज़र हज़रत यूसुफ़ के गठे हुए जिस्म पर पड़ी तो ख़ुश हो गया। योब ने अपने उस जवान ग़ुलाम की तमामतर ख़ूबियाँ

बड़ी सरगरमी से गँवाना शुरू कर दीं। फिर आख़िर में उसने कहा, “और सबसे बड़ी बात, यूसुफ़ ईमानदार है।” यह बात उसने ऐसे कही जैसे कोई क़ीमती हीरा उसकी मुट्ठी में थमा दिया हो।

याबल ने अपने ख़ुश्क होंटों पर ज़बान फेरी। यह नौजवान उसे सुलझा हुआ मालूम होता था। आँखों में सच्चाई की चमक थी और साथ साथ ज़िहानत उसके चेहरे से टपकती थी। लिहाज़ा बग़ैर किसी सौदेबाज़ी के याबल ने अपनी थैली निकाली और योब को मुँह-माँगे दाम अदा कर दिए। फिर बड़े हाकिमाना अंदाज़ में गरजा, “इसकी हथकड़ियाँ उतार दो। योब! ज़रा इन रिसते हुए ज़ख़्मों को देखो। क्या हाल कर रखा है तुमने इस लड़के का?”

यह सुनते ही हज़रत यूसुफ़ ने फ़ौरन योब की सफ़ाई पेश करते हुए कहा, “इन्होंने मेरे साथ बहुत अच्छा सुलूक किया है। यह ज़ख़्म तो पहले से हैं। इस में इनका कोई क़ुसूर नहीं।”

“देखा तुमने? मैंने तुम्हें बताया था ना कि यह नौजवान ईमानदार है। मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ कि फ़ूतीफ़ार के घर में ऐसा ईमानदार कोई नहीं होगा।”

जब याबल हज़रत यूसुफ़ को ले जा रहा था तो उसने उनके चेहरे पर ग़म के गहरे साय फैलते हुए देखे। उसका जी चाहा कि वह उन पर बीती वारिदात की रूदाद सुने। उसके दिल में पिदराना शफ़क़त के जज़्बे ने जोश मारा। हज़रत यूसुफ़ को बचाने की ख़्वाहिश उभरी। और उसने इस

नए ग़ुलाम को अपने साय तले पनाह देने का फ़ैसला कर लिया। जब वह फ़ूतीफ़ार के आलीशान घर में दाख़िल हुए तो बूढ़ा याबल बड़े मानीख़ेज़ अंदाज़ में मुसकराया। हज़रत यूसुफ़ बहुत मुतअस्सिर नज़र आ रहे थे। हर तरफ़ संगे-मरमर का फ़र्श बिछा था। फ़रनीचर पर लकड़ी का निहायत बारीक काम किया गया था और दीवारों पर ख़ूबसूरत नक़्शो-निगार बने हुए थे। एक ऐसे लड़के के लिए जो ख़ैमों में सादा ज़िंदगी बसर करने का आदी था यह सब कुछ अजूबे से कम न था।

याबल ने जो ग़ुलामों का दारोग़ा था हुक्म दिया कि हज़रत यूसुफ़ की हजामत बनवाई जाए और नहला-धुलाकर उन्हें साफ़-सुथरे कपड़े पहनाए जाएँ। फिर वह इस नए ग़ुलाम से मुख़ातिब होकर बोला, "यूसुफ़! हम तुम्हें मिसरी रंग में रंग देंगे। सबसे पहले तुम्हारी डाढ़ी साफ़ करनी होगी। और हाँ याद रखो, हम मिसरी लोग सफ़ाई का बड़ा ख़याल रखते हैं।"

हज़रत यूसुफ़ ने मुअद्दबाना अंदाज़ में झुकते हुए जवाब दिया, "जनाब! मैं इस बात को हमेशा याद रखूँगा। आप मुझ पर एतबार करें। मेरा ज़ाहिर ही नहीं बातिन भी आपको पाक-साफ़ मिलेगा। मैं फ़ूतीफ़ार के घर में ऐसे ही ख़िदमत करूँगा जैसे अपने बापदादा के ख़ुदा की कर रहा हूँ।"

जब वह जवान ग़ुलाम नहा-धोकर याबल के सामने आया तो वह उसकी वजाहत देखकर हक्का-बक्का रह गया।

हज़रत यूसुफ़ अपने अहद पर पूरे उतरे। उन्होंने अपने ज़ाहिरो-बातिन की पाकीज़गी क़ायम रखी और अपने आक़ा की ऐसे ख़िदमत करते रहे जैसे कि अल्लाह की। याबल हैरान रह गया कि उन्होंने किस अहसन तरीक़ से ख़ुद को फ़ूतीफ़ार के घर के माहौल में ढाल लिया है। जल्द ही उन्होंने अपनी ख़ंदापेशानी और ख़ुशबयानी से हर फ़रद का दिल मोह लिया।

याबल ने हज़रत यूसुफ़ की उभरती हुई सलाहियतों को देखते हुए उन्हें घर का इंतज़ाम करने के तरीक़े सिखाने शुरू कर दिए। जल्द ही फ़ूतीफ़ार के घर का सारा इख़्तियार हज़रत यूसुफ़ के हाथ में दे दिया गया और इस तरह सारा निज़ाम बड़े अच्छे तरीक़े से चलने लगा। जब फ़ूतीफ़ार ने अपने घरेलू निज़ाम में इतनी ख़ुशगवार तबदीली देखी तो उस में सबब जानने का तजस्सुस पैदा हुआ। और यह मालूम करके कि यह सब हज़रत यूसुफ़ का हुस्ने-इंतज़ाम है वह बहुत ख़ुश हुआ। उसने अपने बाक़ी इंतज़ामात भी कुल्ली तौर पर उन ही को सौंप दिए।

यह सब कुछ होते हुए भी हज़रत यूसुफ़ का रवैया ग़ुलामों के साथ बड़ा पुरमुहब्बत और हमदर्दाना रहा। उन्होंने अपनी गुज़श्ता ज़िंदगी से एक सबक़ सीखा था और वह यह कि अगर इनसान ख़ुद को दूसरों में नुमायाँ और मुमताज़ कर ले तो इसका नतीजा हसद और दुश्मनी होता है। अब वह इस सिलसिले में बड़े मुहतात थे।

फ़ूतीफ़ार हमेशा हज़रत यूसुफ़ की तारीफ़ करता रहता था हत्ता कि उनका ज़िक्र अपनी बीवी से करते हुए भी नहीं कतराता था। "यह इबरानी नौजवान तो हमारे घर की दौलत है। अनमोल है यह। जब से इसने इंतज़ाम सँभाला है मुझे धोकाबाज़ी और लड़ाई-झगड़ों की परेशानी से नजात मिल गई है। अब मैं सब कुछ इस पर छोड़ सकता हूँ। अगर कोई फ़साद सर उठाता भी हो तो यूसुफ़ इसे बड़ी ज़िहानत से दबा देता है। मुझे ऐसा लगता है कि इसके ख़ुदा ही की वजह से हमें इतनी बरकत मिली है।"

उसकी बीवी मुसकरा देती। वह तो पहले ही इस पुर-कशिश इबरानी को जो अब एक भरपूर मर्द बन चुका था हसरत-भरी निगाहों से देखती रहती थी। फ़ूतीफ़ार अपने मंसबी फ़रायज़ की अदायगी के लिए अकसर घर से बाहर रहा करता था। उसकी ग़ैरमौजूदगी में उसकी बीवी बेज़ारी और तनहाई का शिकार रहती थी। तसकीन पाने के लिए नए नए रास्ते निकालना इनसानी फ़ितरत का तक़ाज़ा है। और जहाँ जज़बाती इश्तआल का सवाल है तो आज़माइश बड़े बड़े परहेज़गारों के क़दम मुतज़लज़ल कर देती है। यह तो फिर एक कमज़ोर औरत थी। उसकी नज़र हज़रत यूसुफ़ पर पड़ी और वह उन्हें अपनी मुहब्बत के जाल में फंसाने की कोशिश करने लगी।

लिहाज़ा अजनास, रेशम और मसालाजात ख़रीदते वक़्त वह हज़रत यूसुफ़ को अपने साथ ले जाती। उसके चार ग़ुलाम तो उसकी पालकी

को कंधा दिए हुए होते, जब कि हज़रत यूसुफ़ साथ साथ चलते जाते थे। वह उनसे बड़े लुभानेवाले लहजे में बातें किया करती थी। बड़ी चालाक औरत थी। हज़रत यूसुफ़ का दिल जीतने के लिए उसने यों ज़ाहिर किया जैसे उसे उनके घरवालों से गहरी दिलचस्पी हो। वह उनके ख़ानदान से मुताल्लिक़ भी सवालात पूछती जाती। कभी वह बातों बातों में ज़रा उनका बाज़ू भी छू लेती। वह शातिर औरत दिल ही दिल में मुसकरा रही थी। होते होते वह इज़हारे-मतलब पर उतर आई और हमबिसतरी की दावत दे दी।

यह सुनते ही हज़रत यूसुफ़ को ज़बरदस्त धचका लगा। वह इस अचानक हमले के लिए तैयार न थे। उनके चेहरे पर परेशानी और हैरत के मिले-जुले तअस्सुरात देखकर बेगम की दिलचस्पी और बढ़ गई। उसे यक़ीन हो गया कि जल्द ही वह अपने मक़सद में कामयाब हो जाएगी।

उधर हज़रत यूसुफ़ अजीब ज़हनी कशमकश में मुब्तला थे। बेगम ने उनके जज़बात में हैजान बरपा कर दिया था। ऐन उसी वक़्त उन्हें अपने बाप के अलफ़ाज़ याद आए जो उनके ज़हन को बुरी तरह झंझोड़ते रहे। "यूसुफ़! जिंसी आज़माइश में न पड़ना। इससे ख़बरदार रहना क्योंकि इसके बाइस बहुतों की ज़िंदगी तबाह हो चुकी है।"

हज़रत यूसुफ़ को अपने वालिदैन के बाहमी ताल्लुक़ात का ख़याल आया जो निहायत पाकीज़ा और हसीन थे। इसके बरअक्स सिकम में दीना की आबरूरेज़ी एक क़बीह फ़ेल था। दीना ... जो फिर कभी

भी लौटकर अपनी असल हालत में न आ सकी। दिलो-दिमाग़ की इस जंग में हज़रत यूसुफ़ अपने आपको बिलकुल तनहा महसूस कर रहे थे। उन्हें यों लगा जैसे हालात उनकी ताक़त से तजावुज़ कर गए हैं। इसके अलावा वह मुख़तार नहीं बल्कि फ़ूतीफ़ार की मिलकियत थे। और ऐसे में जब तक उन्हें फ़ूतीफ़ार की बीवी की हिमायत हासिल न होती तब तक उनका ओहदा बरक़रार नहीं रह सकता था। उन्होंने सोचा अगर बेगम के जज़बात मजरूह हुए तो ऐन मुमकिन है कि वह मेरे लिए इंतहाई ख़तरनाक साबित हो।

यह संगीन आज़माइश की घड़ी थी। वह अपने हुजरे में इंतहाई बेक़रारी के आलम में चक्कर काटते रहे। दिलो-दिमाग़ की गुत्थियाँ थीं कि सुलझने की बजाए उलझती चली जा रही थीं। आख़िर वह करें तो क्या करें! दूसरी तरफ़ अल्लाह उनकी ज़िंदगी से मख़सूस काम लेना चाहता था। उसने उनके बापदादा को महज़ इसलिए ग़ैरअक़वाम से अलग किया था कि वह बेदीन दुनिया में उसकी गवाही दें और उसकी रौशनी फैलाएँ। क्या ऐसा हो सकता था? क्या हज़रत यूसुफ़ अब अपनी ज़िंदगी के मुताल्लिक़ अल्लाह के मनसूबे को बरबाद करने को थे? उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह बेहिसो-हरकत खड़े हालात पर ग़ौर करते रहे। और फिर फ़ैसला किया, "नहीं, हरगिज़ नहीं। मैं किसी क़ीमत पर भी इस आज़माइश में नहीं पड़ूँगा। मेरे जिस्म को पाक रहना है।"

अल्लाह से मुहब्बत ने उनके इस फ़ैसले को तक़वियत दी। वह जानते थे कि आज़माइश के आने से पहले ही मुसम्मम इरादा करने की ज़रूरत है। काश इस वक़्त वह आज़ाद होते! बेशक वह ख़ुशक़िस्मत थे, क्योंकि उनको घर में आला मंसब हासिल था। लेकिन कौन करब के उन लमहात का अंदाज़ा लगा सकता था जब घर की याद उनको पहरों तड़पाती थी और उनका दिल अपनों से मिलने के लिए मचल जाता था। अब बिलहाह की बातें उनकी समझ में आने लगी थीं। एक तरफ़ तो वह उनके बाप की हरमों में शामिल थी और दूसरी तरफ़ वह उनकी माँ की लौंडी थी। उसे शौहर की मुहब्बत कभी नसीब न हुई थी। जिन दो लड़कों को उसने जन्म दिया था, वह उसके नहीं बल्कि राख़िल के बेटे माने जाते थे। हैरत की बात यह थी कि उसने ख़ुद को रूबिन के सपुर्द कर दिया था। हज़रत यूसुफ़ ने एक सरद आह खींची। “बेचारी बिलहाह, अपना सब कुछ देकर भी तूने कुछ न पाया। रूबिन ने तो अपनी हवस की तसकीन कर ली और तूने पूरी ख़ैमाबस्ती की लान-तान कमाई और सब की नज़रों से गिर गई।”

इन बातों को याद करते ही हज़रत यूसुफ़ ने फ़ैसलाकुन अंदाज़ में अपना सर बुलंद किया। “क्या हुआ जो ग़ुलाम हूँ! यह ग़ुलामी जिस्म की ग़ुलामी है, लेकिन मेरा बातिन, मेरा ज़मीर आज भी आज़ाद है। बातिनी तौर पर आज़ाद इनसान हूँ। मेरी तमामतर ज़िंदगी ख़ुदा के लिए वक़्फ़ होनी चाहिए। इस में मेरी जिंसी ज़िंदगी भी शामिल है। अल्लाह

के पाक नाम की तौहीन कैसे कर सकता हूँ!" लिहाज़ा उन्होंने सच्चे दिल से ख़ुदा से गिड़गिड़ाकर दुआ माँगी, "ऐ मेरे बापदादा के ख़ुदा! अपनी तमामतर जिंसी ख़्वाहिशात पर ग़ालिब आने में मेरी मदद कर। बख़्श दे कि मैं हर उस चीज़ से अपनी आँखें और ज़हन बंद रखूँ जो नफ़सानी ख़्वाहिशात को मुश्तइल करती है।"

अभी वह इन ही बातों में गुम थे कि बेगम की लौंडी बशामा ने उनके ख़यालात का सिलसिला तोड़ दिया। उसने उन्हें अपनी मालिका के ज़ाती कमरे में आने का हुक्म सुनाया। हज़रत यूसुफ़ ने अपने ज़हन को ज़ोर का झटका दिया। उनके ज़मीर की तंबीहआमेज़ आवाज़ मुसलसल उनकी मुशावरत किए जा रही थी, "ख़बरदार! जो कुछ भी तुम करो सोच-समझकर करना। तुम्हारी ज़रा-सी कोताही फ़ूतीफ़ार के क़हर को भड़का देगी और फाँसी का फंदा तुम्हारा अंजाम होगा। फ़ूतीफ़ार जो कि फ़िरऔन के मुहाफ़िज़ दस्ते का सरदार है तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा।"

हज़रत यूसुफ़ बा-दिले-नख़्वास्ता बेगम की ख़्वाबगाह में जब पहुँचे तो वहाँ कोई ग़ुलाम था न लौंडी। उनकी ग़ैरमौजूदगी हज़रत यूसुफ़ को खटकने लगी। और फिर उनकी नज़र बेगम पर पड़ी जिसके जिस्म पर कपड़े बराए-नाम ही थे। यों वह शोख़ो-चंचल ख़ातून इस जवान को अपनी तरफ़ राग़िब कर रही थी। हज़रत यूसुफ़ की पूरी कोशिश थी कि उनकी नज़र आक़ा की इज़्ज़त के बरहना बदन पर न पड़े। फिर हिम्मत

करके बोले, “मेरी मालिका! फ़ूतीफ़ार जैसे मुअज़्ज़ज़ शख़्स की बीवी को यह ज़ेब नहीं देता। ख़ुदा के लिए बस कीजिए यह सब कुछ।”

बेगम ने बड़े खलंडराना अंदाज़ में क़हक़हा लगाया, “एक बार ... सिर्फ़ एक बार अपने बापदादा के ख़ुदा का ख़याल छोड़ दो। तुम्हारा ख़ुदा बड़ा ज़ालिम है जो अपने माननेवालों को ज़िंदगी का कोई भी मज़ा लूटने की इजाज़त नहीं देता।” फिर वह जुर्रत करके आगे बढ़ी और बड़ी बेबाकी से हज़रत यूसुफ़ को अपनी बाँहों में जकड़ लिया और पंजों के बल होकर उनके रुख़सार चूम लिए। “जाने-मन! ज़रा सोचो, तुम्हारे बापदादा के ख़ैमे यहाँ से कोसों दूर हैं। मुहब्बत बड़ा ही लतीफ़ जज़बा है। काश तुम जानते कि तुम कितनी बड़ी नेमत को ठुकरा रहे हो!” एक बार फिर वह हंसते हुए बोली, “मैं तुम्हें प्यार करना सिखाऊँगी। अब तो तुम मिसर में आ चुके हो। तुम्हारे ऊपर अब हमारे शहर के देवताओं का इख़्तियार है। हमारे देवता मुहब्बत करनेवालों पर नाराज़ नहीं होते।”

हज़रत यूसुफ़ ने बड़ी मुश्किल से ख़ुद को उसकी गिरिफ़्त से छुड़वाया और ज़रा फ़ासिले पर खड़े होकर उससे मिन्नत करने लगे, “ऐ मेरी मालिका! आपके शौहर फ़ूतीफ़ार को मुझ पर बड़ा भरोसा है। मैं इस एतमाद को इतनी बेदर्दी से ठेस नहीं पहुँचा सकता। उन्होंने अपनी हर चीज़ सिवाए आपके मेरे इख़्तियार में दे रखी है। आप उनकी बीवी ... उनकी इज़्ज़त हैं।” जब बेगम हज़रत यूसुफ़ के और क़रीब आई ताकि उन्हें ख़ामोश कराए तो उन्होंने अपना हाथ बुलंद करके उसे रुक जाने

का इशारा करते हुए कहा, “मुझे बात करने दें। आपकी हवस को पूरा करना सिर्फ़ आपके शौहर के ख़िलाफ़ ही एक शर्मनाक फ़ेल नहीं बल्कि मेरे ख़ुदा के नज़दीक भी बहुत बड़ा गुनाह है।”

अब बेगम के सब्र का पैमाना लबरेज़ हो चुका था। वह जज़बात से मग़लूब होकर ज़ोरदार आवाज़ में चिल्लाई, “बकवास बंद करो! तुम्हें मेरे हुक्म की तामील करना होगी!” वह हज़रत यूसुफ़ का पैराहन पकड़ने के दरपै थी। उसने अपनी फुसलानेवाली आवाज़ से उनको अपनी तरफ़ मायल करने की कोशिश की, “यूसुफ़! डरो नहीं, आओ! आओ ना! मेरी बाँहों में आ जाओ। देखो मैं कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूँ।”

हज़रत यूसुफ़ ने ख़ुद को इस मक्कार औरत से बड़ी मुश्किल से छुड़वाया। इस कशमकश में उनके पैराहन का फटा हुआ टुकड़ा बेगम के हाथ में रह गया और ख़ुद अल्लाह का बंदा वहाँ से सर पर पाँव रखकर भाग निकला। बेगम की तेज़ ग़ुसीली आवाज़ दूर तक हज़रत यूसुफ़ का पीछा करती रही, “मदद! मदद! देखो, यह इबरानी लड़का मेरे साथ क्या करने को था।” उसकी आवाज़ में एक ज़ख़मी शेरनी की ग़ुसीली ग़ुर्राहट थी।

हज़रत यूसुफ़ का दिल बुरी तरह से धड़क रहा था। “न जाने अब फ़ूतीफ़ार मेरे साथ क्या सुलूक करेगा!”

क़ैद

क़रीबी मंदिर से उभरनेवाले घड़ियाल की आवाज़ उस सरकारी जेल तक पहुँच रही थी जहाँ हज़रत यूसुफ़ क़ैद थे। नया दिन तुलू हो रहा था। लेकिन फ़िरऔन के अफ़सरों और मुलाज़िमों को इससे कोई फ़रक़ नहीं पड़ता था। यहाँ क़ैदख़ाने में तो चौबीस घंटे तारीकी का राज रहता था। इस तारीकी में ख़र्राटे लेने और दाँत किचकिचाने की आवाज़ें साफ़ सुनाई देती रहती थीं। कुछ आदमी तो गाली-गलौच के इस क़दर आदी हो चुके थे कि नींद में भी उनके ग़लीज़ होंटों से गालियाँ ही निकलती रहती थीं।

सब क़ैदी बैरूनी दुनिया की गहमा-गहमी से बेनियाज़ तारीकी में डूबे हुए थे, सिर्फ़ नए क़ैदी हज़रत यूसुफ़ ने घड़ियाल की यह आवाज़ सुनी। कल के अफ़सोसनाक वाकिये की वजह से वह ठीक-से सो भी न सके थे। बेगम की शहवत-ज़दा निगाहें और हैजानी चीख़ें अभी तक उनके दिलो-दिमाग़ का पीछा कर रही थीं। फ़ूतीफ़ार के ग़ुस्से ने उन्हें

उन कोड़ों से कहीं ज़्यादा अज़ियत दी थी जो उन्हें इस ग़लीज़ और ख़स्ताहाल कोठड़ी में धकेले जाने से पहले लगाए गए थे। जब वह बैठने की कोशिश करते तो पीठ पर पड़े कोड़ों के ज़ख़्मों में इतनी तकलीफ़ होती कि उनके सीने से एक दर्दनाक कराह उभरती। प्यास से उनका दम निकला जा रहा था और सबसे बढ़कर मौत का ख़ौफ़ सर पर सवार था।

एक साबिक़ आला अफ़सर हज़रत यूसुफ़ को देखते ही चिल्लाया, "फ़िरऔन के चहेतों की शाही क़ब्र में ख़ुशआमदीद! समझो कि तुम्हारी ज़िंदगी के दिन पूरे हो गए। यहाँ से अब तुम सीधे जहन्नुम रसीद हो जाओगे। और हाँ रहा तुम्हारा मुक़द्दमा तो दो सूरतें हैं : या तो फ़रामोश कर दिए जाओगे या फिर तुम होगे और फाँसी का फंदा।"

हज़रत यूसुफ़ बड़े दुख से सोचने लगे, "अफ़सोस, अच्छे दिन कितनी जल्दी गुज़र गए। क्या अल्लाह ने आख़िरकार मुझे छोड़ ही दिया है? क्या मुझे सीधे रास्ते पर चलने और बेदाग़ ज़िंदगी बसर करने की यह क़ीमत अदा करनी है?"

इस ख़याल के आते ही उन्हें घर की याद बुरी तरह सताने लगी। काश सिर्फ़ एक बार वह अपने बाप और भाई बिनयमीन से मिल सकते! एक बार फिर उस ख़ैमाबस्ती में जा सकते जहाँ ठंडी हवाएं चलती हैं! ताज़ा हवा और रौशन धूप है! फिर उन्हें अपने क़ातिल भाई याद आए कि उन ही की वजह से मुझ पर हमेशा के लिए घर के दरवाज़े बंद हो चुके हैं।

इस ख़याल से उनके पूरे वुजूद में तलख़ी का एहसास उभर आया। वह सोचने लगे कि आख़िर उन ख़्वाबों की क्या हक़ीक़त थी जिनके ज़रीए अल्लाह ने इतने ज़ोरदार अंदाज़ में मेरे ज़हन में यह बात बिठा दी थी कि एक दिन मैं ज़रूर सरफ़राज़ किया जाऊँगा?

उन्हें पूरा यक़ीन था कि जल्द ही मुझे फाँसी दी जाएगी। ख़ुदा? अब ख़ुदा कहाँ है? लगता है कि मेरे गिर्द तारीकी का यह हिसार और तंग होता जा रहा है। कि अल्लाह और आदमियों सबने मुझे छोड़ दिया है। क्या मैं तारीक क़ुव्वतों के हाथ में खिलौना बनकर रह गया हूँ?

क़रीब था कि उनके ईमान की कश्ती मायूसी के मँहज़ोर धारे में बह जाती, लेकिन फिर अल्लाह ने बड़ी शफ़क़त से उन्हें याद दिलाया कि तूने तो एक बहुत बड़ी फ़तह पाई है। आज़माइश के वक़्त तू साबितक़दम और ख़ुदा के वफ़ादार रहा है। हज़रत यूसुफ़ ने महसूस किया कि अल्लाह एक बार फिर मेरी हिम्मत बँधा रहा है ताकि मैं उसकी राहों पर चलता जाऊँ। अल्लाह ख़ुद मेरी इज़्ज़त का ज़ामिन है। उसका यह वादा मेरे लिए एक रौशन हक़ीक़त है। तब उस ग़मज़दा और घायल नौजवान का हौसला बुलंद हो गया। उन्होंने दुआ की, "ऐ ख़ुदा! मैं अगरचे ख़ाली बरतन की मानिंद हूँ, ताहम इस मायूसकुन कोठड़ी में भी तेरी ख़िदमत बजा लाऊँगा।"

हज़रत यूसुफ़ के साथ एक एक करके सब जाग गए थे। कुछ तकलीफ़ से कराह रहे थे। किसी का मिज़ाज इंतहाई बिगड़ा हुआ था। अकसर

लोग एक तवीलो-तारीक दिन के तसव्वुर से ही बहुत मायूस दिखाई दे रहे थे। फिर किसी ने फबती कसते हुए कहा, "जब तक फ़िरऔन की पसंद का नाश्ता तुम्हें मिल न जाए इंतज़ार करो। फिर तुम्हारे मिज़ाज ठीक हो जाएँगे।"

एक और क़ैदी बड़ी फीकी-सी हंसी हंसते हुए बोला, "यूसुफ़, मैं शर्त लगाता हूँ कि लोग तुम्हारी बड़ी बातें बना रहे होंगे। सच बताना पट्ठे, फ़ूतीफ़ार की बीवी वाक़ई बहुत ख़ूबसूरत है?"

एक और क़ैदी उस पर बरस पड़ा, "इसे मत छेड़ो। वह औरत तो ख़्वाहमख़्वाह इसकी दुश्मन बन गई है। उफ़ यह ग़लीज़ मिसरी! यह तो अपने देवताओं की तरह ग़लीज़ हैं। एक से एक बढ़कर ख़ुदग़रज़ और हासिद। मैं भी उनके हसद ही की वजह से क़ैद में हूँ।"

इतने में एक ग़ुलाम ने ठोकर मारकर दरवाज़ा खोला। करख़्त चेहरेवाला यह आदमी जब अंदर दाख़िल हुआ तो उसके एक हाथ में बालटी और दूसरे में धीमा-सा तेल का चराग़ था। सारे क़ैदी पानी लेने के लिए उस पर झपट पड़े। वह ग़ुलाम ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया और उन्हें मारने और चिंघाड़ने लगा। साथ साथ वह पानी बाँटता जाता था। उन क़ैदियों का उस बद-मिज़ाज ग़ुलाम के साथ रवैया इंतहाई बुरा था। थोड़ी ही देर में हॉल में ऐसा हंगामा खड़ा हुआ कि जेल का दारोग़ा चार मुहाफ़िज़ों के हमराह आ पहुँचा। जब उसने इस सारे ग़ुल-ग़पाड़े की

वजह दरियाफ़्त की तो ग़ुलाम ने उसे बताया, "मेरा साथी बीमार है और मैं अकेला एक वक़्त में इतने सारे आदमियों को नहीं भुगता सकता।"

दारोग़े बनाम पानेब की निगाहें जाकर हज़रत यूसुफ़ पर ठहर गईं जो इन तमाम हंगामों से अलग-थलग ख़ामोश बैठे थे। उनके चेहरे से शराफ़त टपक रही थी। "आज से खाना बाँटने में तुम इसकी मदद कर दिया करना," पानेब ने हज़रत यूसुफ़ को हुक्म दिया।

चंद ही दिनों में उसके साथियों को माहौल में बड़ा फ़रक़ महसूस होने लगा। हज़रत यूसुफ़ हर एक से बड़ा दोस्ताना बरताव करते थे। वह बड़ी ख़ुशअख़्लाक़ी से खाना बाँटा करते थे। और हर तरह से पूरी कोशिश करते थे कि उनके लिए ज़िंदगी को ज़्यादा से ज़्यादा आरामदिह बनाएँ। वह उनकी परेशानियों के बारे में भी उनकी हर बात सुनते जिससे उन्हें बड़ी तसकीन मिलती थी।

रब ख़ुदा हज़रत यूसुफ़ के साथ था इसलिए सारा काम बिलकुल ठीक तरीक़े से हो रहा था। यहाँ तक कि जेल का दारोग़ा ख़ुद उनके काम को आकर सराहता था। वह जितना उनको काम करते देखता उतना ही उसे यक़ीन हो चला था कि उन्हें झूटे इलज़ाम में क़ैद किया गया है।

एक रोज़ सुबह-सवेरे सुपरिण्टेण्डेण्ट की तरफ़ से एक मुहाफ़िज़ हज़रत यूसुफ़ को बुलाने के लिए आया। वह आला अफ़सर दफ़्तर में नहीं था इसलिए उनको इंतज़ार करने के लिए कहा गया। खिड़की में

से सूरज तुलू होने का मंज़र दिखाई दे रहा था। उन्होंने सोचा, "रौशनी! यह भी क्या नेमत है! रौशनी और मुहब्बत के जहान से अल्लाह मुझे ख़ुशआमदीद कह रहा है। एक दिन मैं ख़ुद भी उसी रौशनी में वहाँ पहुँचूँगा। लेकिन फ़िलहाल अल्लाह मुझे उस जगह जाने के लिए तैयार कर रहा है।"

इस ख़याल के आते ही उन्होंने गहरी साँस भरी और फिर सोचा कि ना-शुक्रगुज़ार नहीं होना चाहिए। क्या मुझे दारोग़े का एतमाद हासिल नहीं है? उनकी निगाहें सलाख़दार खिड़की के कोने पर जाकर ठहर गईं जहाँ एक मकड़ी बड़ी महारत से अपना जाला बुन रही थी। वह उसे बड़े ग़ौर से देखने लगे तो अल्लाह ने उन पर ज़ाहिर किया कि मैं भी तेरी ज़िंदगी में एक ख़ूबसूरत नक़्श बना रहा हूँ जो अभी तक इनसानी नज़रों से ओझल है। तेरा काम सिर्फ़ यह है कि अपने रब पर पूरा पूरा भरोसा रखे।

जब दारोग़ा पानेब दनदनाता हुआ कमरे में दाख़िल हुआ तो हज़रत यूसुफ़ के ख़ूबसूरत ख़यालात का सिलसिला टूट गया। मुहाफ़िज़ों ने बड़ी मुस्तैदी से उसे सलामी दी। फिर सुपरिण्टेण्डेण्ट हज़रत यूसुफ़ से मुख़ातिब होते हुए बोला, "तुम ग़ालिबन यह सुनना पसंद करोगे कि जब से तुम फ़ूतीफ़ार की घरेलू ज़िंदगी से अलग हुए हो उस वक़्त से वहाँ के हालात बहुत बिगड़ गए हैं।" वह बड़े मानीख़ेज़ अंदाज़ में मुसकराया।

लेकिन हज़रत यूसुफ़ ने इतना ही कहा कि "अल्लाह उन्हें ख़ुश रखे।"

पानेब हैरान हुआ। “इस जेल में तो लोग नफ़रत और ग़ुस्से में तबाह हो जाते हैं, लेकिन इसके बरअक्स तुम तो पहले से भी ज़्यादा सुलझ गए हो।” पानेब दिल ही दिल में मुसकरा दिया और बोला, “मैंने फ़ूतीफ़ार के घर में तुम्हारी बेहतरीन कारकरदगी के बारे में मालूमात हासिल कर ली हैं। मुझे भी तुम जैसे आदमी की ही ज़रूरत है। इधर आओ। ज़रा मुंशी के काम को एक नज़र देख लो। आइंदा के लिए यह ज़िम्मेदारी तुम्हें सौंपी जाती है।” उसने यह सब कुछ बड़ी ख़ुशअख़्लाक़ी से हज़रत यूसुफ़ को बताया।

अपने मफ़ाद के साथ साथ पानेब को हज़रत यूसुफ़ पर तरस भी आता था। “यक़ीनन फ़ूतीफ़ार इसे यहाँ भेजकर भूल गया होगा। अब यह कभी बरी नहीं होगा। इसलिए यूसुफ़ के ज़हन को मसरूफ़ रखकर इसके साथ नेकी करूँगा,” उसने हमदर्दी से सोचा।

उसी वक़्त हॉल में से चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें आने लगीं। पानेब एकदम उठ खड़ा हुआ और मुहाफ़िज़ों की तरफ़ मुड़ते हुए दहाड़ा, “जल्दी करो। बाहर से भी मुहाफ़िज़ों को अपने साथ ले लो। तुम अपने आप इस बाग़ी हुजूम से नहीं निपट सकते।”

पानेब ने अपने दोनों हाथों से ज़ोर ज़ोर से धड़कते दिल को थाम लिया। “उफ़! इन सरकारी दुश्मनों ने तो मुझे परेशान कर रखा है। मैं इनकी बग़ावत को कुचल के रख दूँगा। चमड़ी उधेड़ डालूँगा इन बाग़ियों की।”

हज़रत यूसुफ़ ने बड़ी मुलतजी निगाहों से देखते हुए अर्ज़ की, "जनाब! इजाज़त हो तो मैं इनसे बात करूँ? मैं इन सबको अच्छी तरह से जानता हूँ। इन अंधेरी कोठड़ियों में रह रहकर वह बेज़ार हो गए हैं।"

पानेब ने हज़रत यूसुफ़ को उनके मनसूबों से बाज़ रहने को मुँह खोला ही था कि फिर ज़रा सोचकर उन्हें जाने की इजाज़त दे ही दी। मुहाफ़िज़ों के साथ वह ख़ुद दरवाज़े के बाहर ही रुक गया ताकि किसी ना-ख़ुशगवार वाकिये से बर-वक़्त निपटा जा सके। एक कान मुहाफ़िज़ों ने दरवाज़े से लगा रखा था। हज़रत यूसुफ़ की ज़ंजीरों की खड़खड़ाहट मधम होती जा रही थी। क्या अब वह उन पर बरस पड़ेंगे? लेकिन ऐसी कोई बात न हुई, बल्कि इसके बिलकुल बरअक्स सारा शोरो-ग़ुल यकदम मौक़ूफ़ हो गया।

पानेब अपने दफ़्तर में फ़ातेहाना अंदाज़ में लौट आया। उसने सोचा कि फ़ूतीफ़ार के नुक़सान में मेरा तो फ़ायदा हो गया। अब आइंदा मुझे किसी भी चीज़ की फ़िकर नहीं रहेगी। और ऐसा ही हुआ। हज़रत यूसुफ़ तमाम उमूर इंतहाई अहसन तरीक़े से निमटाने लगे। जिस तरह फ़ूतीफ़ार के घर में अल्लाह उनके साथ था उसी तरह जेल में भी था। हर काम बड़े अच्छे तरीक़े से अंजाम पाता रहा।

एक दिन क़ैदी उनके पास एक दलील लेकर आए। फ़िरऔन का एक साबिक़ अफ़सर इसरार कर रहा था कि अगर अच्छी तालीम, अच्छा माहौल और ज़रूरियाते-ज़िंदगी के लिए वाफ़िर सरमाया हो तो बिलाशुबा लोग ख़ुश रह सकते हैं।

उनका सरग़ाना दिल खोलकर हंस पड़ा। "फिर तो अमीरों के घर जन्नत हुए ना! अरे बेवुक़ूफ़, तुम्हारी खोपड़ी में अक़्ल है या नहीं? आम लोग और ग़रीब ग़ुलाम अकसर उनके मुक़ाबले में जिनके पास सब कुछ होता है बेहतर किरदार का मुज़ाहरा करते हैं।"

हज़रत यूसुफ़ ने सरग़ाने की ताईद की, लेकिन साथ ही कहा, "सिर्फ़ उस आदमी का दिल हक़ीक़त में तबदील होता है जो अपनी ज़िंदगी ज़िंदा ख़ुदा के सपुर्द कर दे। जब आप उसके साथ साथ चलेंगे तो वह आपका दिल मुहब्बत, इतमीनान और सब्र से मामूर कर देगा। इस तरह ख़ुदा जहाँ भी आपको ले जाएगा आपकी मारिफ़त उस मक़ाम को तबदील कर सकेगा।"

जिस क़ैदी ने इस मौज़ू पर गुफ़्तगू शुरू की थी तंज़न कहने लगा, "तुम उस ख़ुदा की पैरवी करते हो ना जो लोगों को दूसरों पर ज़ुल्मो-तशद्दुद करने देता है।"

हज़रत यूसुफ़ ने बड़े धीमे लहजे में जवाब दिया, "अफ़सोस! तुम मेरे ख़ुदा को नहीं जानते। वह हमेशा अपने माननेवालों की भलाई चाहता

है। वह सख़्ती के इन दिनों को इस मक़सद के लिए इस्तेमाल कर रहा है कि मैं उसके और क़रीब हो जाऊँ।”

“तुम अपने ख़ुदा से मुहब्बत करते हो?” सरग़ाने की आवाज़ में हैरत का उनसुर नुमायाँ था। उसने इससे पहले ऐसी बातें कभी नहीं सुनी थीं, क्योंकि देवताओं से लोग डरा करते थे, उनसे मुहब्बत नहीं करते थे।

हज़रत यूसुफ़ सियासत के मौज़ू पर भी उन अफ़सरों की बातें ग़ौर से सुना करते थे। अकसर औक़ात फ़िरऔन और उसके वज़ीरों के बारे में गरमागरम बहस हो जाया करती थी। उनकी सिर्फ़ बातें ही सुनकर हज़रत यूसुफ़ ने मिसरी सियासत के बारे में बहुत कुछ सीख लिया।

बहुत ही ना-ख़ुशगवार दिन गुज़रे। हर तरफ़ तारीक साय फैले हुए थे। एक दिन सिपाहियों का एक दस्ता दो क़ैदियों को लेकर जेल में आया। उन में से एक फ़िरऔन का साक़ी था और दूसरा बेकरी का इंचार्ज। फ़ूतीफ़ार ख़ुद इन दो अहम शख़्सियात को लेकर आया था। यूसुफ़ ने हैरत से अपने साबिक़ मालिक को देखा। वह बड़ी गरजदार आवाज़ में पानेब से मुख़ातिब होकर बोला, “इन दोनों पर कड़ी नज़र रखना। यह फ़िरऔन के ख़िलाफ़ साज़िश कर रहे थे।” कुछ देर रुककर फ़ूतीफ़ार ने मकीनों की फ़हरिस्त तलब की और गरजा, “अच्छा ठीक है। अगर तुम्हारे दफ़्तर का पहला-सा बुरा हाल है तो बेहतर है कि चलता बनूँ।”

“नहीं, नहीं, जनाब,” पानेब ने फ़ातेहाना लहजे में कहा, “जब से मुझे एक मददगार मिला है जेल में हर चीज़ बिलकुल मुनज़्ज़म है। अब मुझे कोई परेशानी नहीं। मेरे तो दिल का दर्द भी जाता रहा है।”

हज़रत यूसुफ़ का साँस ऊपर का ऊपर ही रह गया। वह परेशान हो गए कि कहीं वह दफ़्तर में आ गए तो ... तो क्या होगा!

फ़ूतीफ़ार की भारी-भरकम आवाज़ में हैरत का तअस्सुर नुमायाँ था। वह ग़ुस्से में बोला, “जब से तुम्हें एक मददगार मिल गया है! ऊँह, समझता हूँ। ठीक है। अभी फ़हरिस्त को रहने दो।” फ़ूतीफ़ार वहाँ से यों लंबे डग भरता हुआ निकला जैसे उसके पीछे किसी आसेब का साया हो।

साक़ी और बेकरी के इंचार्ज के जेल में आने से हर तरफ़ से अफ़सोसनाक आवाज़ें सुनाई देने लगीं। दोनों फ़िरऔन के महल में आला ओहदों पर फ़ायज़ थे। उसके दस्तरख़ान का सब इख़्तियार उनके हाथ में था। क़िस्मत के अचानक इस तरह पलटा खाने से वह आसमान से ज़मीन पर आ गिरे थे। आम तौर पर इस क़िस्म के आला मंसब लोगों के क़रीब आना ख़ासा मुश्किल था। अब इनको भी हज़रत यूसुफ़ के इख़्तियार में दे दिया गया। दारोग़े ने उनको समझा दिया कि अगर तुम उनका अच्छी तरह ख़याल रखोगे तो इस में तुम्हारा अपना ही फ़ायदा होगा। क्या पता शायद किसी दिन तुम अपने ओहदों पर बहाल कर दिए जाओ।

हज़रत यूसुफ़ के लिए इशारा ही काफ़ी था। चंद हौसलाअफ़्ज़ा अलफ़ाज़ से उन्होंने उन्हें राम कर लिया। फिर उनसे फ़िरऔन के महल की बद-उन्वानियों के क़िस्से सुने। उनके क़ियाम के दौरान हज़रत यूसुफ़ ने उनसे फ़िरऔन के मुलाज़िमों, सियासतदानों और नजूमियों के बारे में बहुत-सी मालूमात हासिल कर लीं।

एक सुबह जब हज़रत यूसुफ़ उनसे मिलने आए तो वह दोनों बहुत परेशान और निहायत बेज़ार दिखाई दे रहे थे। उन्होंने बड़ी ख़ंदापेशानी से सलाम किया, लेकिन साक़ी और बेकरी के इंचार्ज ने कोई जवाब न दिया। हज़रत यूसुफ़ को उनकी इस कैफ़ियत के बारे में तशवीश हुई। "जनाब! आज आप इतने परेशान क्यों हैं?"

साक़ी ने बड़े दुख से सर को झटका और काँपती हुई आवाज़ में बोला, "हम दोनों ने ख़्वाब देखा है।"

बेकरी के इंचार्ज ने उन्हें अपनी असल परेशानी से आगाह किया, "इस घिनौनी जगह में तो कोई भी ऐसा नहीं है जो हमें हमारे ख़्वाबों की ताबीर बता सके।"

हज़रत यूसुफ़ उनके पास ही बैठ गए और तसल्ली-भरे लहजे में बोले, "असल में ख़्वाबों की ताबीर बताने की सलाहियत अल्लाह की तरफ़ से अता होती है। आप अपने ख़्वाब तो मुझे बताइए।"

इन बातों से साक़ी को कुछ हौसला हुआ और उसने हिम्मत करके कहना शुरू किया, "मैंने ख़्वाब में अपने सामने अंगूर की बेल देखी।

उसकी तीन शाख़ें थीं। उसके पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं और अंगूर पक गए। मेरे हाथ में बादशाह का प्याला था, और मैंने अंगूरों को तोड़कर यों भींच दिया कि उनका रस बादशाह के प्याले में आ गया। फिर मैंने प्याला बादशाह को पेश किया।"

जब साक़ी हज़रत यूसुफ़ को अपना ख़्वाब सुना चुका तो बड़ा सहमा और डरा-सा उनके चेहरे को तकने लगा। हज़रत यूसुफ़ ने मुसकराते हुए यक़ीन दिलाया, "तीन शाख़ों से मुराद तीन दिन हैं। तीन दिन के बाद फ़िरऔन आपको बहाल कर लेगा। आपको पहली ज़िम्मेदारी वापस मिल जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साक़ी की हैसियत से बादशाह का प्याला सँभालेंगे।" फिर हज़रत यूसुफ़ ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा ख़याल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। क्योंकि मुझे इबरानियों के मुल्क से इग़वा करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मझसे कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में फैंका जाता।"

साक़ी ने बड़ी गरमजोशी से जवाब दिया, "बेशक, मुझ पर भरोसा रखो। इस जगह से बाहर निकल जाऊँ तो समझो कि तुम भी आज़ाद हो गए।"

अब तो बेकरी के इंचार्ज से लमहा भर भी सब्र न हो सका। उसने चमकती हुई आँखों से कहा, "मेरा ख़्वाब भी सुनें। मैंने सर पर तीन

टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की चीज़ों से भरी हुई थीं। सबसे ऊपरवाली टोकरी में वह तमाम चीज़ें थीं जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिंदे आकर उन्हें खा रहे थे।"

इस ख़्वाब को सुनकर हज़रत यूसुफ़ में हिम्मत न थी कि उन पुरउम्मीद आँखों में आँखें डालकर देखते। लेकिन साथ ही वह झूट बोलकर उसे अंधेरे में नहीं रखना चाहते थे। चुनाँचे उन्होंने बड़े दुख से कहा, "अफ़सोस, तीन टोकरियों से मुराद तीन दिन हैं। तीन दिन के बाद ही फ़िरऔन आपको क़ैदख़ाने से निकालकर दरख़्त से लटका देगा। परिंदे आपकी लाश को खा जाएँगे।"

बेकरी के इंचार्ज की तसल्ली न हुई। वह ग़ुस्से से चिंघाड़ते हुए बोला, "यूसुफ़, तुम हमारे लिए अच्छे ख़िदमतगार तो साबित हुए, लेकिन जहाँ तक ख़्वाब की ताबीर का ताल्लुक़ है तुम कुछ नहीं जानते। भूल जाओ हमारे ख़्वाबों को।"

लेकिन आख़िरकार जैसे कि हज़रत यूसुफ़ ने उनके ख़्वाबों की ताबीर की थी वैसे ही हुआ। साक़ी तीन दिन बाद रिहा हो गया और बेकरी का इंचार्ज अपने अंजाम को पहुँच गया।

अब हज़रत यूसुफ़ बड़ी बेचैनी से साक़ी के पैग़ाम का इंतज़ार करने लगे। अफ़सोस, दिन गुज़रते गए लेकिन कोई पैग़ाम न मिला। रफ़्ता रफ़्ता उनकी बेचैनी मायूसी में बदल गई। उन्होंने एक बार फिर मालूम कर लिया कि आदमियों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, सब मतलबी

यार होते हैं। लेकिन एक पुराना सवाल उन्हें फिर परेशान करने लगा, "ऐसे में अल्लाह कहाँ है? क्या उसने आख़िरकार मुझे भुला ही दिया है?" इन ही ख़यालों में मज़ीद दो साल का तवील अरसा बीत गया।

शाही बुलावा

शहर दोपहर की गरमी से सुलग रहा था। फिर भी फ़ूतीफ़ार की बीवी आज हसबे-मामूल सो न पा रही थी। उसकी लौंडी बशामा सोचने लगी, “आख़िर आज मेरी मालिका को क्या हुआ है? उसकी तबीयत की बेचैनी उसकी रंगीन और शोख़-फ़ितरत के बिलकुल बरअक्स है।” मौसम की शिद्दत की परवा किए बग़ैर वह ख़ुद को इधर-उधर के कामों में मसरूफ़ रखे हुए थी। बशामा को उसे ग़ुस्ल देना और मालिश करना थी। और अब मरहला लिबास के इंतख़ाब का था। एक से बढ़कर एक लिबास उसके आगे पड़ा था, लेकिन कोई भी उसकी नज़रों में जच नहीं रहा था। और पसंद भी कैसे आता, उसके ख़यालात तो न जाने कहाँ भटक रहे थे। गुज़श्ता रात कई माह के बाद फ़ूतीफ़ार ने उसके सामने यूसुफ़ का ज़िक्र छेड़ा था। उसने कनखियों से अपनी बीवी को देखते हुए यों बात बढ़ाई, “जब से यूसुफ़ जेल गया है वहाँ के हालात बिलकुल

सुधर गए हैं। पानेब बता रहा था कि उसकी मारिफ़त उसकी क़िस्मत ही बदल गई है।"

बशामा हैरतज़दा-सी उसका मुँह तकने लगी। बेगम की शोला-सी आँखें उसके दिल की कैफ़ियत की ग़म्माज़ी कर रही थीं। उसे ख़ुद पर ग़ुस्सा आ रहा था। वह चिल्लाई, "फिर कभी उसका नाम मेरे सामने न लेना। बेहतर तो यह है कि अभी उसका सर उड़ा दो।" उसके दिलो-दिमाग़ में हलचल मची हुई थी। वह समझ गई थी कि मैं अपने शौहर को किसी तौर पर क़ायल न कर पाऊँगी।

फ़ूतीफ़ार ने एक पुरमानी मुसकराहट से बीवी को देखा और बाहर निकल गया।

दिल ही दिल में बेगम ने क़सम खाई कि अब से मैं अपनी नीमगरम इज़दिवाजी ज़िंदगी को बेहतर बनाने की पूरी कोशिश करूँगी।

बशामा उसके मिज़ाज से अच्छी तरह से वाक़िफ़ थी। जब वह बेगम का जोड़ा बना रही थी तो उसने उसकी ढारस बँधाने की कोशिश करते हुए कहा, "आक़ा फ़ूतीफ़ार इन दिनों इंतहाई मसरूफ़ हैं। फ़िरऔन की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी बड़ा जान-जोखों का काम है।"

बेगम ने ताईद की और गहरी साँस भरी। "हाँ यह तो है। अगर बादशाह को कुछ हो गया तो मेरे शौहर की जान की ख़ैर नहीं। न सिर्फ़ वह फ़िरऔन के मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर हैं बल्कि उन्हें सरकारी जेल और

फाँसियों का भी इंतज़ाम करना होता है। काम इतना ज़्यादा है कि मेरे लिए तो उनके पास वक़्त ही नहीं होता।"

बशामा की ख़ुश-गप्पियों ने बेगम के बोझल ख़यालात पर ठंडी फुवार का काम किया। वह सोने के उस कमरे में थे जिस में उसने अपनी हवस की तसकीन के लिए हज़रत यूसुफ़ की मासूमियत को लूटने की कोशिश की थी। उस वक़्त से वह उसे भुलाने की इंतहाई कोशिश करती रही थी, लेकिन बेफ़ायदा। अब भी उसका ख़याल उसे सताता रहता था। जब से उसके शौहर ने हज़रत यूसुफ़ का ज़िक्र छेड़ा था उसका ख़याल फिर से आसेब की तरह उस पर छा गया था। इस एहसास से छुटकारा पाने के लिए उसने बशामा से कहा, "मुझे पालकी मंगवा दो और कहारों को भी ले आओ। मैं माँ से मिलने जाऊँगी।" इस फ़ैसले पर वह दबी-सी हंसी हंसते हुए बोली, "माँ को अपने आराम में मेरी दख़ल-अंदाज़ी कुछ अच्छी तो नहीं लगेगी, फिर भी कभी कभी बेटी चाहती है कि वह माँ से मिलकर ढेरों बातें करे।"

अभी वह जाने की तैयारी ही कर रही थी कि उसे घोड़ों के टापों और रथ की चिड़चिड़ाहट सुनाई दी जो कि सहन के अंदर दाख़िल हो रहा था। बेगम हैरान हुई। "फ़ूतीफ़ार? और इस वक़्त?" उसने ऊपर झरोके से शौहर को देखकर हाथ हिलाया, "यह बेवक़्त आज घर में कैसे? मेरे सरताज! आप तो बहुत ही थके हुए लग रहे हैं।"

फ़ूतीफ़ार ने पसीना पोंछते हुए ऊपर देखा और हाँ में सर हिलाते हुए जल्दी से अंदर चला गया। इससे पहले कि वह दीवानख़ाने में दाख़िल होता बेगम जल्दी से नीचे उतर कर आ चुकी थी। फ़ूतीफ़ार ने ख़ुद को कुरसी पर गिराते हुए कहा, "एक गलास ठंडा पानी। बला की गरमी पड़ रही है।"

बेगम का इशारा पाते ही बशामा पानी लेने चली गई। फ़ूतीफ़ार अपनी भारी-भरकम आवाज़ में अपनी बीवी को रूदाद सुनाने लगा, "क्या बताऊँ महल में तो मेला लगा है। जादूगर, दानिशवर, नजूमी और न जाने कौन कौन महल में उमडे पड़े हैं।" उसने ठंडी साँस भरी, "कभी कोई आ रहा है कभी कोई। सब के सब फ़िरऔन के दो ख़्वाबों की ताबीर बताने की कोशिश कर रहे हैं।" फिर उसने ज़ोर से अपनी रान पर हाथ मारा। "लगता है देवताओं ने किसी ख़ास वजह से उनके ज़हन कुंद कर दिए हैं।"

बेगम ने लौंडी से तश्तरी पकड़ ली और बिल्लौर का जाम फ़ूतीफ़ार को थमाते हुए चहककर बोली, "जाने-मन! आपका पसंददीदा मशरूब। अंगूरों का रस पी लो, तबीयत बहाल हो जाएगी।" फिर उसके मुक़ाबिल बैठते हुए पूछने लगी, "अगर यह सच है कि फ़िरऔन की कई दिनों से भूक और नींद उड़ चुकी है तो फिर तो उसका मिज़ाज आजकल बहुत चिड़चिड़ा होगा।"

"नहीं उसे बद-मिज़ाज नहीं कहा जा सकता। ख़ुशक़िस्मती से बड़ा अच्छा बादशाह है, वरना तो वह मुझे उन सब लोगों का सर क़लम कर देने का हुक्म दे देता। देवता मुझे इस ख़ूनी फ़ेल से बचाए रखें।" फ़ूतीफ़ार ने और पीने के लिए जाम आगे बढ़ाया। "पता है बादशाह बहुत ज़्यादा परेशान है क्योंकि इन ख़्वाबों की वजह से उस पर बड़ी दहशत छा गई है। जितनी देर होती जा रही है उतना ही उसे यक़ीन हो चला है कि देवता उसे मिसर पर नाज़िल होनेवाली तबाही से ख़बरदार कर रहे हैं। जब तक इन ख़्वाबों की ताबीर वाज़िह न हो जाए तब तक उसे चैन नहीं आएगा।"

"क्या शहर हीलियोपुलिस से सूरज देवता रा का पुजारी भी कुछ मदद नहीं कर सका?"

फ़ूतीफ़ार ने नफ़ी में सर हिलाया। "फ़ोतीफ़िरा भी दूसरों की तरह बिलकुल बेबस है।"

इतने में आँगन में जूतों की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। एक मुहाफ़िज़ को अंदर लाया गया जिसने बड़ी फुरती से फ़ूतीफ़ार को सलामी दी। "आक़ा! फ़िरऔन ने आपके लिए हुक्मनामा सादिर किया है कि जेल से यूसुफ़ नामी क़ैदी को फ़ौरन दरबार में हाज़िर किया जाए।"

"यूसुफ़?" फ़ूतीफ़ार उठकर मुहाफ़िज़ के साथ चलने लगा। यूसुफ़ के नाम के ज़िक्र के साथ ही बेगम बुरी तरह से चौंकी जिसे फ़ूतीफ़ार

ने भी भाँप लिया था। वह दिल ही दिल में तंज़न मुसकराया, "बेवफ़ा औरत! अभी भी इसे डर है कि इसका गुनाह ज़ाहिर हो जाएगा।"

"बताओ तो सही, इस हुक्म की वजह क्या है?" उसने मुहाफ़िज़ से मालूम करना चाहा।

मुहाफ़िज़ ने जल्दी जल्दी विज़ाहत करते हुए कहा, "सरदार साक़ी जो दो साल पहले क़ैद में था, यह सब कुछ उसी की वजह से हुआ है। जब वह जेल में था तो उसी यूसुफ़ ने उसके और बेकरी के इंचार्ज के ख़्वाबों की सहीह ताबीर बताई थी। चूँकि फ़िरऔन के ख़्वाब की ताबीर करना किसी के बस की बात नहीं है इसलिए सरदार साक़ी ने हिम्मत करके बादशाह को उस क़ैदी के बारे में बता दिया है। ज़ाहिर है इस वक़्त यूसुफ़ ही फ़िरऔन की आख़िरी उम्मीद है।"

फ़ूतीफ़ार हज़रत यूसुफ़ के बारे में जितना सोचता उतना ही ज़्यादा उलझता जाता था। वह सोचने लगा, "अपने तमामतर इख़्तियार के बावुजूद भी मैं उसे जेल में न रख सका। क्या यह सब कुछ उसके ख़ुदा की वजह से तो नहीं? वह ख़ुदा जिसने हर हालत में उसको कामयाबी अता की? लगता है उसने क़ैदख़ाने के दरवाज़े अब भी उसके लिए खोल दिए हैं।"

रथ एक झटके के साथ रुक गया। फ़ूतीफ़ार सोचने लगा कि यूसुफ़ को फ़िरऔन के सामने पेश करने के क़ाबिल बनाने में काफ़ी वक़्त लगेगा। वैसे भी मैं किस तरह अपने पुराने और क़ाबिले-एतमाद ग़ुलाम

से इतने बरसों बाद मिलूँ? लेकिन उसकी हैरत की इंतहा न रही जब उसने हज़रत यूसुफ़ को पहले की तरह हलीमो-शायस्ता पाया। उनकी आँखों में नफ़रत का शायबा तक न था। और सबसे अजीब बात यह कि फ़िरऔन के बुलावे की ख़बर से उसको ज़रा हैरत न हुई। फ़ूतीफ़ार पर एक दफ़ा फिर हज़रत यूसुफ़ का सहर छा गया। यों लगता था कि उन में से कोई ख़ास क़ुव्वत निकली है जिसने मुझे जकड़ लिया है। जेल जैसी ना-गवार जगह में तो सिर्फ़ देवता ही किसी को इतनी ख़ुशमिज़ाजी और पुख़्तगी अता कर सकते हैं।

हज़रत यूसुफ़ की हजामत बनाई गई और कपड़े बदलवाकर उन्हें फ़िरऔन के सामने पेश कर दिया गया। जब उन्होंने बादशाह के हुज़ूर झुककर सलाम किया तो दरबार में मौजूद मुअज़्ज़ज़ीन में सरगोशियाँ होने लगीं और उम्मीद की एक लहर दौड़ गई। क्या यह बादशाह के ख़्वाबों की ताबीर बता सकेगा? क्या फिर से मुल्क में अमन हो जाएगा? उनके ज़हनों में यह सब सवालात एक एक करके उभरने लगे।

फ़िरऔन पर बेक़रारी की कैफ़ियत तारी थी। वह बेचैनी के आलम में चक्कर काट रहा था। उसने हज़रत यूसुफ़ के सामने रुककर उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा। ग़ुलाम की आँखों में बला की गहराई थी।

बादशाह क़दरे शिकायतआमेज़ लहजे में कहने लगा, “हमने एक ख़्वाब देखा है, लेकिन कोई भी इसकी सहीह ताबीर नहीं बता सका।” अचानक उसका लहजा क़दरे पुरउम्मीद हो गया और बात जारी रखते

हुए कहने लगा, "ताहम मुझे बताया गया है कि तुम ख़्वाबों की ताबीर बता सकते हो।"

हज़रत यूसुफ़ ने अपना सर ऊपर उठाया और बड़ी आजिज़ी से अर्ज़ किया, "आलीजाह! मैं ख़ुद तो कुछ भी नहीं कर सकता, लेकिन मेरा ख़ुदा आपको असल ताबीर से मुताल्लिक़ तसल्लीबख़्श जवाब देगा।" हज़रत यूसुफ़ बिलकुल पुरसुकून थे। बोलते हुए उनकी आवाज़ में कामिल एतमाद की झलक थी। फ़िरऔन और आला अफ़सरान भी उस ग़ुलाम के बारे में हैरान थे जो बिला-झिजक, बेख़ौफ़ और बग़ैर सर झुकाए उनसे मुख़ातिब था।

फ़िरऔन अपने तख़्त पर जा बैठा और आँखें बंद करके कहने लगा, "मैं ख़्वाब में दरयाए-नील के किनारे खड़ा था। अचानक दरिया में से सात मोटी मोटी और ख़ूबसूरत गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। इसके बाद सात और गाएँ निकलीं। वह निहायत बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैंने इतनी बदसूरत गाएँ मिसर में कहीं भी नहीं देखीं। दुबली और बदसूरत गाएँ पहली मोटी गायों को खा गईं। और निगलने के बाद भी मालूम नहीं होता था कि उन्होंने मोटी गायों को खाया है। वह पहले की तरह बदसूरत ही थीं।"

फ़िरऔन ने अपनी आँखें खोल लीं और कुछ सोचने के बाद फिर अपने हाथों को मलते हुए अपना बयान जारी रखा, "हमारी फिर आँख लग गई और हमने एक और ख़्वाब देखा। सात मोटी और अच्छी बालें

एक ही पौदे पर लगी थीं। इसके बाद सात और बालें निकलीं जो ख़राब, दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई थीं। सात दुबली-पतली बालें सात अच्छी बालों को निगल गईं।"

अब सारी निगाहें हज़रत यूसुफ़ पर गड़ी थीं। वह बड़े एतमाद से यों गोया हुए, "आलीजाह! सात साल आएँगे जिनके दौरान मिसर के पूरे मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। उसके बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएँगे कि पहले इतनी कसरत थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह कर देगा। काल की शिद्दत के बाइस अच्छे सालों की कसरत याद ही नहीं रहेगी। हुज़ूर को इसलिए एक ही पैग़ाम दो मुख़तलिफ़ ख़्वाबों की सूरत में मिला कि अल्लाह इसका पक्का इरादा रखता है, और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा।"

इंतहाई परेशानी के आलम में फ़िरऔन ने अपना चेहरा दोनों हाथों से छुपा लिया। तमाम मुअज़्ज़ज़ीन और अफ़सरान भी अपने बादशाह की तरह करब का इज़हार करने लगे। सिर्फ़ हज़रत यूसुफ़ का चेहरा पुरसुकून और पुरएतमाद रहा। उन्होंने जब बादशाह को इस बोहरान पर क़ाबू पाने के लिए अपनी भरपूर आवाज़ में मुफ़ीद मशवरा दिया तो उसकी जान में जान आई।

हज़रत यूसुफ़ बोले, "आलीजाह! अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी को मुल्के-मिसर का इंतज़ाम सौंपें। इसके अलावा ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे सालों के दौरान हर

फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें। वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा करें। बादशाह उन्हें इख़्तियार दें कि वह शहरों में गोदाम बनाकर अनाज को महफ़ूज़ कर लें। यह ख़ुराक काल के उन सात सालों के लिए मख़सूस की जाए जो मिसर में आनेवाले हैं। यों मुल्क तबाह नहीं होगा।"

हज़रत यूसुफ़ की बात सुनते ही हर तरफ़ से तहसीनो-आफ़रीन की सदाएँ आने लगीं। हाज़िरीन पर यह बात वाज़िह हो गई कि इन अलफ़ाज़ में यूसुफ़ नहीं बल्कि यूसुफ़ का ख़ुदा उनसे मुख़ातिब हुआ है। अगरचे फ़िरऔन और उसके साथियों को हज़रत यूसुफ़ की तजवीज़ दिल से मंज़ूर थी फिर भी उन्हें डर था कि कहीं इतने बा-इख़्तियार मंसब के लिए वह किसी ग़लत आदमी का इंतख़ाब न कर बैठें। उनके ग़लत फ़ैसले से पूरा मुल्क तबाह हो सकता था। फ़िरऔन ने कुछ देर इस मामले पर ग़ौर किया। आख़िरकार वह एक फ़ैसले पर पहुँचा। उसका चेहरा ख़ुशी से तमतमा उठा और वह हाज़िरीन से मुख़ातिब होकर बोला, "हमें यूसुफ़ जैसा आदमी जिस में अल्लाह की रूह है हरगिज़ नहीं मिलेगा।"

यह सुनते ही सारे दरबार को गोया साँप सूँघ गया। हर तरफ़ गहरी ख़ामोशी छा गई। फ़िरऔन ने अपनी वह अंगुश्तरी जिस पर शाही मुहर थी अपनी उँगली से उतारकर हज़रत यूसुफ़ को देते हुए कहा, "मैं आज से तुम्हें मिसर का हाकिमे-सानी बनाता हूँ। तुम्हारा नाम साफ़नत-फ़ानेह

है” (यानी अल्लाह ने कलाम किया है और वह ज़िंदा है)। फ़िरऔन के लहजे में बला की चाशनी थी।

हर तरफ़ से मुबारक सलामत की सदाएँ उठने लगीं। “फ़िरऔन ज़िंदाबाद! हाकिम ज़िंदाबाद!”

सूरज देवता रा का पुजारी फ़ोतीफ़िरा एक पल के लिए भी अपनी नज़रें 30-साला इबरानी नौजवान के चेहरे से न हटा सका। यों लगता था जैसे वह हमेशा से ही फ़िरऔन की हुज़ूरी में रहा हो। हज़रत यूसुफ़ बिलाशुबा बेहतरीन सलाहियतों के मालिक थे। गठा हुआ जिस्म, ज़िहानत, हुस्न और हिल्मो-इनकिसार सब ही कुछ तो था उन में। फ़ोतीफ़िरा के वहमो-गुमान में भी न था कि अगले ही लमहे फ़िरऔन उसकी बेटी आसनत का हाथ यूसुफ़ के लिए माँग लेगा जो अब मिसर का मुख़तार बना दिया गया था। इस तरह फ़िरऔन ने हज़रत यूसुफ़ को फ़ोतीफ़िरा जैसे पुजारियों के ख़ानदान के आला तबक़े का फ़रद भी बना दिया।

उधर हज़रत यूसुफ़ का ज़हन बुरी तरह चकरा रहा था। अभी थोड़ी देर पहले वह सरकारी जेल में क़ैदी थे और अब ख़ुद फ़िरऔन ने उन्हें ख़ास क़ीमती ख़िलअत अता की थी और उनके गले में सोने का गुलूबंद पहना दिया गया था। फिर उन्होंने फ़िरऔन का एलान सुना, “हम चाहते हैं कि सब लोग अपने नए हाकिम का इस्तक़बाल करें।”

फिर फ़िरऔन ने फ़ूतीफ़ार को हुक्म दिया कि वह यूसुफ़ को दूसरे शाही रथ में बिठाकर पूरे शहर का दौरा करवाए। आगे आगे मुहाफ़िज़ों का एक दस्ता हो जो एलान करता हुआ जाए कि "बा-अदब! बा-मुलाहज़ा! होशियार! हाकिमे-मिसर की सवारी आ रही है।"

हज़रत यूसुफ़ को यक़ीन नहीं आ रहा था कि क़ैदख़ाने का दरवाज़ा कितनी जल्दी खुल गया है। जब लोगों ने उन्हें गलियों में से गुज़रते हुए देख देखकर तालियाँ बजाईं, ख़ुशी से नारे लगाए और रथ के आगे बिछ गए तो उनका दिल वफ़ादार ख़ुदा की तारीफ़ से भर गया जिसने किसी लमहे भी उनका साथ न छोड़ा था। जो वक़्त अल्लाह ने मुक़र्रर कर रखा था सब कुछ मुनासिब तौर से बर-वक़्त अंजाम पा रहा था। अब उनके ख़्वाब जुज़वी तौर पर पूरे हो चुके थे क्योंकि अब वह हाकिम बन चुके थे। साथ साथ उन्हें ख़ूब मालूम था कि यह आला मंसब मुझे अपनी ख़ातिर नसीब नहीं हुआ बल्कि ख़ुदा ने मुझे अपने घराने से पेशतर मिसर में इसलिए भेजा है कि मैं उन्हें फ़ाक़ाकशी से बचाने के लिए पहले ही जगह तैयार कर लूँ।

अब हज़रत यूसुफ़ की शादी की तैयारियाँ शाहाना ठाठ से शुरू हो गईं। आसनत के साथ उनका ब्याह बड़ी धूमधाम से अंजाम पाया। हज़रत यूसुफ़ को अपनी बीवी से बहुत मुहब्बत थी। आख़िरकार उन्हें एक ऐसा दिल मिल गया था जो सिर्फ़ उनके लिए धड़कता था। एक ऐसा साथी मिल गया था जो सिर्फ़ उनसे मुहब्बत करता और उनका

शरीके-हयात था। लेकिन ऐसे में वह ज़्यादा वक़्त घर पर नहीं गुज़ार सकते थे। पहले दो साल तो उन्हें बहुत ज़्यादा दौरों पर जाना पड़ा।

हज़रत यूसुफ़ ने किसानों को फ़सलों पर ज़्यादा से ज़्यादा काम पर मामूर किए रखा। वह चाहते थे कि खेतों से वाफ़िर मिक़दार में ग़ल्ला हासिल किया जाए। इसलिए वह और उनके अफ़सरान खेतीबाड़ी की ज़्यादा मुफ़ीद ज़रई तकनीक सिखाने में मसरूफ़ हो गए। किसानों ने पैदावार को महफ़ूज़ और ज़ख़ीरा करना भी सीख लिया। उन्हें तरबियत देने के बाद हज़रत यूसुफ़ को अनाज के गोदामों की तामीर की निगरानी भी करनी पड़ी। फिर वह बड़ी मेहनत-मशक़्क़त से हर कटाई की पैदावार का पाँचवाँ हिस्सा जमा करने लगे। यों वह क़ौम को अज़ीमतरीन बोहरान से बचाने के लिए अपनी सिर-तोड़ कोशिश करते रहे।

बहुत से मिसरी मुअज़्ज़ज़ीन इस अजनबी से जिसे इतने आला ओहदे पर फ़ायज़ कर दिया गया था हसद करने लगे। मुतअद्दिद ऐसे लोग भी थे जो इस परदेसी ग़ुलाम को हाकिम के ओहदे पर पाकर ग़ुस्से हुए। ताहम हज़रत यूसुफ़ उन ही के सामने कमाल वफ़ादारी से अपने मनसूबों को पायाए-तकमील तक पहुँचाते रहे। अल्लाह इस मुश्किल वक़्त में उनके साथ था और उन्हें बरकत देता था।

ख़ुशहाली के इन सात सालों में अल्लाह ने उन्हें दो बेटों से नवाज़ा। पहले बेटे का नाम उन्होंने मनस्सी रखा जिसका मतलब है भुला देना और दूसरे का इफ़राईम यानी फलदार।

एक बार काफ़ी दिन बाहर रहने के बाद जब हज़रत यूसुफ़ घर पहुँचे तो हलचल-सी मच गई। मनस्सी और इफ़राईम दौड़ते हुए आए और बाप ने दोनों को अपने बाज़ुओं में जकड़ लिया।

"शुक्र है कुछ देर के लिए आप घर तो आए। यक़ीन जानें मुझे आप बहुत याद आते हैं" आसनत ने कहा।

जब दोनों बच्चे जाकर सो गए तो वालिदैन ने उन पर प्यार-भरी नज़र डाली। हज़रत यूसुफ़ ने अपनी बाँहें अपनी चहेती बीवी के गिर्द हमायल कर दीं और कहने लगे, "तुम सब मुझे बहुत अज़ीज़ हो। अल्लाह ने ग़ुलामी के दिनों और घर की उदास और तारीक यादों का काँटा मेरे दिल से निकाल दिया है। इसके अलावा मैं इस अजनबी देस में बहुत ज़्यादा सरफ़राज़ हुआ हूँ।"

आसनत ने मानीख़ेज़ अंदाज़ में उनकी आँखों में झाँकते हुए कहा, "मनस्सी के बाबा! साथ ही आप अपने बाप और भाइयों से मिलने के लिए कितने बेचैन हैं। हैं ना? आप उन्हें यहाँ बुला क्यों नहीं लेते?"

हज़रत यूसुफ़ ने बड़े करब से जवाब दिया, "जहाँ तक मेरे बाबा का ताल्लुक़ है, उनके लिए तो मैं बरसों पहले मर चुका हूँ। आसनत! मैंने जहाँ इतना इंतज़ार किया है थोड़ा और इंतज़ार कर लूँगा। ख़ुदा हर काम अपने वक़्त पर करता है। मुझे अपने ख़्वाब से मालूम हो चुका है कि एक दिन मेरे भाई मेरे आगे झुककर सिजदा करेंगे।" यह कहते हुए उनके चेहरे पर ग़म के गहरे साय छा गए और बात जारी रखते हुए

बोले, “इससे पहले कि हमारा आमना-सामना हो, उन्हें मेरे साथ किए हुए अपने संगीन गुनाह का एहसास करना होगा। उन्हें मुझ तक और अल्लाह तक पहुँचने के लिए तौबा करनी होगी।” हाकिमे-मिसर हज़रत यूसुफ़ ने अपने सोए हुए बेटों पर झुकते हुए सरगोशी की, “मुझे उस दिन का शिद्दत से इंतज़ार है।”

हैरतअंगेज़ मुलाक़ात

कह्त के तबाहकुन असरात न सिर्फ़ मिसर पर बल्कि कनान पर भी पड़े। हज़रत याक़ूब अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठे मग़रिब में डूबते हुए आतिशीं गोले जैसे सूरज को देख रहे थे। उनके ख़यालात माज़ी के ख़ुशगवार दिनों में भटक रहे थे जब राख़िल, लियाह और यूसुफ़ ज़िंदा थे। यूसुफ़ को तो तक़दीर ने कितनी बेरहमी से उनसे छीन लिया था। हज़रत याक़ूब ने ठंडी साँस भरी। “सब तो जा चुके हैं, मझसे कहीं दूर। अब मेरी बारी आएगी। मैं कितना दुख-भरा दिल लेकर जाऊँगा! और इस सारी मुसीबत के ज़िम्मेदार मेरे झगड़ालू और अख़ड़ बेटे हैं। अल्लाह अपना वादा कैसे पूरा करेगा? इन लड़कों में से एक क़ौम कैसे बना पाएगा?”

इस ख़याल के आते ही उन्होंने अपना दुखता हुआ सर अपने लाग़र हाथों में थाम लिया और कराहते हुए बोले, “ऐ ख़ुदा! तूने मेरे पुराने दिल को बदल डाला है। तू उनके दिल बदलने पर भी क़ादिर है। लेकिन

ऐ रब! मुझे डर है कि जल्द ही कनानी हम पर चढ़ आएँगे। हम तो इस सरज़मीन पर अजनबी हैं। वह तो पहले ही हमें नफ़रत की निगाह से देखते हैं। आख़िर हम उनकी चरागाहों में अपने रेवड़ चराते हैं। ऐ रब! मुझे ख़दशा है कि कहीं उनके दिल जीतने के लिए मेरे बेटे उन बुतपरस्तों के साथ शादियाँ न रचा लें। ऐ रब! आख़िर हम जान बचाकर जाएँ तो किधर जाएँ? तू ही हमारी राहनुमाई कर, रब।"

बिनयमीन जो अब तीस-साला कड़ियल जवान था बाप को ख़बरदार करने के लिए खँकारा। दिन ग़ुरूब होते वक़्त वह अकसर इस जगह अपने तनहा बाप के पास आ बैठता था। चंद लमहों की ख़ामोशी के बाद उसने अपने दिल का दर्द अपने बाप के आगे उंडेल दिया, "बाबा! मेरी समझ में नहीं आता, क्या ज़िंदा ख़ुदा ने हमें छोड़ दिया है? यह कह्त आख़िर हमें कहाँ तक ले जाएगा? आज भी बहुत से मवेशी भूक से मर गए हैं। और जो बच रहे हैं, उनकी भी बुरी हालत है।" उसने बेताबी से अपने बाप की आँखों में झाँका। "आपको कुछ ख़बर है, अब तो हमारे पास खाने को कुछ भी नहीं रहा? छोटे-बड़े सब ही फ़ाक़ों से हैं। हमारे कुछ नौकर भी भूक और बीमारी से मौत का शिकार हो रहे हैं।"

हज़रत याक़ूब ग़ुस्से में आ गए। वह बुड़बुड़ाए, "बस अब एक ही रास्ता है। सारी दुनिया अनाज ख़रीदने मिसर जा रही है, लेकिन मेरे बेटे, वह तो फ़क़त बड़बड़ बातें ही बना सकते हैं कि 'अल्लाह ने हमारा साथ छोड़ दिया है'।" बुज़ुर्ग की आवाज़ और बुलंद हो गई, "अल्लाह उनसे

तवक़्क़ो करता है कि वह अपनी ख़ुराक के लिए ख़ुद कुछ करें। उसे सुस्ती पसंद नहीं है।"

बिनयमीन ने सर हिलाया, "मेरी समझ में नहीं आता, आख़िर मेरे भाई मिसर जाना क्यों पसंद नहीं करते! भाई शमाऊन के बेटे ने मुझे बताया कि उसके बाप को तो हर रात मिसर के डरावने ख़्वाब आते हैं और हमेशा उनका अंजाम एक-सा ही होता है। वह पसीने से शराबोर यूसुफ़ को पुकारते हुए उठ बैठता है।" फिर बिनयमीन ने अपने बाप से इल्तिजा की, "बाबा! मुझे ही चंद आदमियों के साथ मिसर जाने की इजाज़त दे दो। हमें जल्द ही कुछ करना होगा वरना सब बरबाद हो जाएँगे।"

यह सुनते ही हज़रत याक़ूब बड़ी गरमजोशी से बोले, "नहीं! तुम यहीं रहोगे। मैं तुम्हारा नुक़सान बरदाश्त नहीं कर सकता। तुम्हारे भाई मिसर जाएँगे। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मेरी बरदाश्त से बाहर होगा। मैं हैरान हूँ कि याक़ूब के बेटे इस क़दर ढीले क्यों हैं!"

आख़िरकार हज़रत याक़ूब के कहने पर इतना तो हुआ कि बिनयमीन के भाई अपने गधे लेकर बा-दिले-नख़्वास्ता सफ़र पर रवाना हो गए। मिसर की तरफ़ जाते वक़्त हर एक को दिल ही दिल में हज़रत यूसुफ़ याद आ रहे थे। 25 बरस पहले उनको भी इसी तरह मिसर जाना पड़ा था। उस वक़्त से उन में से किसी ने भी अपने छोटे भाई के नाम का ज़िक्र तक न किया था। लेकिन इसके बावुजूद यूसुफ़ का नक़्श उनके

ज़हनों पर सब्त रहा। अकसर उनके भाई की वह हालत उनकी निगाहों में फिरती रहती थी जब वह उनसे गिड़गिड़ाकर रहम की भीक माँग रहा था।

दान ने बुझे दिल से कहा, "बाबा ने बिनयमीन को हमारे साथ भेजने से इनकार किया। उसका हम पर अब भी कोई एतमाद नहीं।"

यहूदाह ने एतराफ़ किया, "हम इसी सुलूक के मुस्तहिक़ हैं। कम अज़ कम बिनयमीन के साथ रहने से बाबा को तसल्ली रहती है।"

लावी ने बड़ी ढिटाई से कहा, "भला यह क्यों? क्या बाबा को अपने ज़िंदा ख़ुदा पर भरोसा नहीं रहा कि वह बिनयमीन को बहिफ़ाज़त घर वापस ले आएगा?"

यहूदाह ने लावी को खा जानेवाली नज़रों से देखा। "बाबा के ईमान पर नुकताचीनी करने की फिर जुर्रत न करना। अल्लाह पर उनका ईमान बहुत पुख़्ता है। देखते नहीं कि वह किस तरह उसकी मरज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करने के आरज़ूमंद रहते हैं? सालों से वह बाक़ायदा हमारे गुनाहों की निशानदिही करके हमें भी बदी से रोकते रहते हैं।" फिर ठंडी साँस भरकर कहा, "काश मैं भी ज़िंदा ख़ुदा को वैसे ही जानूँ जैसे बाबा जानते हैं।"

हज़रत याक़ूब के घराने का हर फ़रद कह्त की वजह से सख़्त परेशान था। लेकिन इस में भी अल्लाह की हिकमत थी। वह उन्हें अपने वतन से

निकालकर हज़रत यूसुफ़ की तरफ़ ले जा रहा था। अगर कह्त इतना मोहलक न होता तो वह हरगिज़ मिसर न जाते।

दौराने-सफ़र एक रात भाइयों की मुलाक़ात मिदियानी ताजिरों से हुई। उन्होंने उनके साथ मिलकर ख़ैमे गाड़े। जब वह आग के अलाव के गिर्द बैठे थे तो हेफ़र नामी एक ताजिर ने उन्हें मशवरा दिया कि वह मिसर पहुँचते ही हाकिम बनाम साफ़नत-फ़ानेह को तलाश करें। "वह फ़िरऔन के शहर में अनाज के किसी गोदाम में ही होगा।" हेफ़र ने मज़ीद कहा, "इतने आला ख़ानदान से ताल्लुक़ रखने के बावुजूद हाकिम बड़ा बा-अख़्लाक़ शख़्स है। आम आदमी से भी ऐसे गुफ़्तगू करता है जैसे वह ख़ुद भी उन ही में से एक हो।"

दान ने भौंएं चढ़ाते हुए पूछा, "लेकिन हम हाकिमे-मिसर को पहचानेंगे कैसे?"

हेफ़र ने जवाब दिया, "उसे पहचानना बहुत आसान है क्योंकि पूरी रिआया में उस जैसा हुलिया किसी का नहीं है। साफ़नत-फ़ानेह इनसानी जिस्म में देवता है। वह सफ़ेद बर्राक़ शाही लिबास पहनता है। उसके कमरबंद में एक जड़ाऊ ख़ंजर लटक रहा होता है। उसके कंधों के गिर्द एक मुख़तसर लबादा होता है, और उसके गले में एक बड़ा-सा सोने का गुलूबंद झिलमिलाता है।"

यह कहकर हेफ़र काफ़ी देर तक आग को घूरता रहा और फिर धीमे लहजे में बोला, "कोई भी उससे कोई बात नहीं छुपा सकता, क्योंकि वह

इनसान के ख़यालात पढ़ लेता है। यही वह आदमी है जिसने फ़िरऔन को कह्त के बारे में पेशगोई की थी। उसी की दूरअंदेशी के बाइस मिसर कह्त का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयारी कर पाया है।"

एक दूसरे ताजिर ने दलील दी, "मैंने सुना है वह पैदाइशी ग़ैरमुल्की है।"

आग को कुरेदते हुए यहूदाह कहने लगा, "अगर ग़ैरमुल्की है तो फिर इस में अपना ही फ़ायदा है। मिसरी इबरानियों को हिक़ारत से देखते हैं। अल्लाह करे हमारे ख़रीदने के लिए कुछ अनाज बच गया हो।"

हेफ़र ने उसे तसल्ली दी, "मुख़तारे-मिसर फ़रावानी के सात सालों में बहुत ही मसरूफ़ रहा है। कहते हैं कि उसने रेत के ज़र्रों की मानिंद अनाज जमा किया है। फ़िरऔन का उस पर भरोसा करना बजा है। वह अपने काम को कमाल वफ़ादारी और दियानतदारी से करता है। हाँ, वह लोगों का सच-मुच बहुत ख़याल रखता है।"

इन बातों से दस भाइयों की बड़ी ढारस बँधी। सुबह को वह अपने गधे लेकर जल्द ही फ़िरऔन के शहर में दाख़िल हुए। यूसुफ़ का आसेब बुरी तरह उन पर मुसल्लत था, यहाँ तक कि फाटक में दाख़िल होने पर रास्ते में आनेवाले देवताओं के सुनहरे मंदिरों पर भी उनकी नज़र न पड़ी। साथ साथ वह 40-साला ग़ुलामों के चेहरों को भी देखते जाते थे। उन पर यह ख़ौफ़ तारी था कि कहीं उस भाई से मुलाक़ात न हो जाए जिसे हमने ग़ुलाम बनाकर बेच डाला है। एक दफ़ा तो एक ग़ुलाम उन

पर बरस ही पड़ा। उनको घूरते हुए बोला, "ग़ैरमुल्की भिकारियो! तुमने कभी आदमी नहीं देखे? दफ़ा हो जाओ।"

अब तो हज़रत याक़ूब के बेटों में ज़बरदस्त झगड़ा शुरू हो गया। हर कोई दूसरे पर इलज़ाम लगाने लगा। यों वह लड़ते-झगड़ते अनाज के एक गोदाम के पास जा पहुँचे। तब यहूदाह ने मिन्नत की कि झगड़ा ख़त्म करके अपने बेहतरीन किरदार अदा करो! अगले ही लमहे वह सैंकड़ों मर्दों और औरतों के हुजूम में शामिल हो गए। उन्होंने एक ही नज़र में भाँप लिया कि यहाँ सिर्फ़ हम ही ग़ैरमुल्की नहीं बल्कि दूसरे ममालिक से भी बहुत-से लोग आए हुए हैं। रूबिन ने किसी न किसी तरह हाकिमे-मिसर को फ़ौरन ढूँड निकाला। अब उसका गठा हुआ जिस्म सबको नज़र आया—ऐसा शकील नौजवान बहुत कम देखने में आता है। उसके पीछे आला अफ़सरान की क़तार लगी थी जब कि साथ साथ चलनेवाला ग़ालिबन उसका तरजुमान था। हाकिम को आम लोगों के साथ घुल-मिलकर बातें करते देखकर दिल ख़ुश हो जाता था।

तमाम भाई यहूदाह की क़ियादत में उस अज़ीम शख़्सियत से मिलने को आगे बढ़े। वह उन्हें मुहब्बत-भरी निगाहों से देखने लगा, लेकिन अचानक यह नरमी सख़्ती बल्कि ग़ुस्से में बदल गई। भाई घबरा गए। क्या हो रहा था? लग रहा था कि वह उन पर कोई संगीन जुर्म आइद कर रहा है। सब भाई उसके सामने घुटनों के बल गिरकर उसकी झिड़कियों

के तहत पानी पानी हो गए : "तुम हमारे मुल्क की जासूसी के लिए आए हो। कहाँ से आए हो?"

जो आदमी हज़रत यूसुफ़ की बातों का तरजुमा कर रहा था वह हैरान था कि हाकिम ख़ुद उनसे बराहे-रास्त इबरानी में बात क्यों नहीं करता। वह जानता था कि वह उनकी ज़बान रवानी से बोल सकता है। उसने अपने आक़ा का ऐसा मिज़ाज इससे पहले कभी न देखा था।

जब घबराए हुए भाई उनके सामने ज़मीन पर दोज़ानू हुए तो हज़रत यूसुफ़ को अरसा पहले का ख़्वाब याद आया। अब वह पूरा हो चुका था। उनके भाई उनके सामने सर झुकाए हुए थे। उनके दिल में जज़बात का तूफ़ान उमड रहा था—आरज़ू, इतमीनान, इंतक़ाम की आज़माइश, रहम। उनका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। उनका जी चाहता था कि तमाम तरह की रुकावट एक तरफ़ करके उन्हें फ़ौरन गले लगा लें, लेकिन वह जानते थे कि उनका यह रवैया भाइयों के हक़ में अच्छा न होगा। हज़रत यूसुफ़ को अपना दिल सख़्त करना पड़ा ताकि उनके भाई होश में आएँ और अपनी बुरी ज़िंदगी का सामना करें। उन्होंने भाइयों पर एक मुज़तरिब निगाह डाली और फ़ौरन जान लिया कि बिनयमीन उन में नहीं है। "तो क्या उन्होंने उसे भी मार डाला?"

दूसरी तरफ़ उनके भाई शदीद सदमे का शिकार थे। जासूसी के इलज़ाम में तो उन्हें फ़ौरन मौत के घाट उतारा जा सकता था। मौत के ख़ौफ़ से वह थर-थर काँपने लगे। यहूदाह ने उन सब की तरफ़ से जल्दी

से जवाब देते हुए कहा, "आक़ा! हम जासूस नहीं बल्कि कनान से अनाज ख़रीदने आए हैं।"

लेकिन हज़रत यूसुफ़ इसरार करते रहे, "नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"

ख़ौफ़ के इस आलम में भाइयों को अचानक हज़रत यूसुफ़ याद आ गए। तक़रीबन 25 बरस पहले उन्होंने भी छोटे भाई पर यही संगीन इलज़ाम लगाया था कि तुम बाप की तरफ़ से हमारी जासूसी करने के लिए हमारे पीछे आए हो। यहूदाह ने एक बार फिर हिम्मत करके कहा, "नहीं मेरे आक़ा! हम जासूस नहीं हैं। हम ईमानदार आदमी हैं। हम सब भाई हैं। यक़ीन कीजिए, हम सिर्फ़ अनाज लेने आए हैं।"

"हम ईमानदार आदमी हैं।" यह अलफ़ाज़ हज़रत यूसुफ़ के कानों में पिघले हुए सीसे की तरह उतर गए। तो क्या इन्होंने जो कुछ अपने भाई यूसुफ़ के साथ किया था सब भुला दिया है? ज़ाहिर था कि होश में आने के लिए इन्हें अभी ज़लज़ले के-से झटके की ज़रूरत थी। लिहाज़ा हज़रत यूसुफ़ ने इंतहाई सख़्त लहजे में कहा, "नहीं! तुम हमारे मुल्क में जासूसी करने ही आए हो।"

मौत के दहाने पर खड़े होकर अब उनका एहसासे-जुर्म भड़क उठा। यहूदाह निहायत मुलतजी अंदाज़ में चिल्लाने लगा, "मेरे आक़ा! हम कुल बारह भाई थे, कनान के एक बासी के बेटे। एक भाई मर चुका है और सबसे छोटा हमारे बाप के पास है।"

उनके दिल बुरी तरह धड़क रहे थे। सब महसूस कर रहे थे कि अल्लाह हमें हमारे उस संगीन गुनाह की सज़ा दे रहा है। बचने का कोई रास्ता न था क्योंकि हाकिमे-मिसर की आवाज़ की गरज अभी तक सुनाई दे रही थी, "मैं कह रहा हूँ तुम जासूस ही हो। इस सिलसिले में तुम्हारी बातों को इस तरह परखा जाएगा कि जब तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई यहाँ आ नहीं जाता तुम यहाँ से नहीं जा सकते। तुम में से एक वापस जाकर उसे ले आए। बाक़ी उस वक़्त तक नज़रबंद रहेंगे जब तक तुम्हारी बातें सच साबित न हो जाएँ।" यों लगता था कि उनकी इल्तिजा का हाकिम पर कुछ असर नहीं हुआ। चुनाँचे तीन दिन तक उन्हें हिरासत में रखा गया। हक़ीक़त में भाइयों से ऐसा सुलूक करके हज़रत यूसुफ़ को बहुत दुख हो रहा था।

अब उनका रथ उनके महल में दाख़िल हुआ। इस शाम ग़ुलामों और दीगर अहलकारों ने उनके रवैये में फ़रक़ को फ़ौरन भाँप लिया। उनके आक़ा के बोझल क़दमों से ज़ाहिर था कि उनके ज़हन पर एक बड़ा बोझ है। उन्हें क्या मालूम था कि वह अपने भाइयों से मिले और उनकी मुलाक़ात और उनके साथ सख़्त रवैये ने उन्हें इतना तोड़ दिया है। हज़रत यूसुफ़ महसूस कर रहे थे कि अल्लाह मुझे भाइयों को राहे-रास्त पर लाने के लिए इस्तेमाल कर रहा है ताकि वह एक बड़ी क़ौम बन सकें।

आसनत अपने छोटे बेटों के साथ बच्चों के कमरे में थी। जब हज़रत यूसुफ़ ने मनस्सी को अपने नन्हे भाई को बोसा देते और उसके साथ खेलते देखा तो बेइख़्तियार मुसकरा दिए। वह बड़ी संजीदगी से बोले, "ख़ुदा करे तुम हमेशा अपने भाई से इसी तरह मुहब्बत करते रहो।"

आसनत ने दिल से "आमीन" कहा। वह जानती थी कि इस वक़्त मेरा ख़ावंद अपने भाइयों के बारे में सोच रहा है। जब हज़रत यूसुफ़ ने अन्ना को कुछ देर के लिए बाहर जाने को कहा तो वह समझ गई कि वह तनहाई की ज़रूरत महसूस कर रहे हैं। अपने ख़ावंद की क़ुरबत के यह लमहे उसके नज़दीक कितने बेशक़ीमत थे! हज़रत यूसुफ़ ने मनस्सी को अपनी गोद में बिठा लिया और उसका हाथ अपने हाथों में लेकर अपने भाइयों से मुलाक़ात का ज़िक्र छेड़ दिया।

आसनत कहने लगी, "मेरे सरताज, आप तो अरसे से उनके मुंतज़िर थे, है ना? और हमेशा यही दुआ करते रहते थे कि वह जल्द आ मिलें।"

"हाँ! मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि उस वक़्त मेरी क्या कैफ़ियत थी। ओह! ख़ून के यह रिश्ते भी कितने मज़बूत होते हैं! हम आमने-सामने थे, एक दूसरे की आँखों में आँखें डालकर देख रहे थे, फिर भी एक दूसरे से कितने दूर थे! हमारे दरमियान गुनाह की दीवार हाइल थी। उनके भले की ख़ातिर मुझे अपना दिल सख़्त करना पड़ा। अगर उन्हें फ़ौरन बता देता कि मैं यूसुफ़ ही हूँ और उन्हें वाफ़िर मिक़दार में अनाज दे देता तो वह महज़ ख़ुराक की वजह से मझसे मुहब्बत करने लगते।"

आँसू उनके रुख़सारों पर बहने लगे। “सच तो यह है कि मैं आज भी अपने भाइयों को उसी तरह ढूँड रहा हूँ जैसे सिकम में पहुँचकर ढूँडा था। लेकिन मुझे उनका दिल चाहिए, उनकी मुहब्बत चाहिए।” उन्होंने बड़े ख़ुलूस से अपनी बीवी की तरफ़ देखते हुए बात जारी रखी, “अभी इस बात की ज़रूरत है कि अल्लाह उनके दिलों में एक बड़ा मोजिज़ा करे। मुझे न तो इतनी जल्दी करनी है कि अल्लाह से आगे निकल जाऊँ और न ही पीछे रहना है। मुझे गोया उसके क़दमों से क़दम मिलाने हैं। अभी बहुत कुछ होना है। ख़ुदा को भी उनका दिल और उनकी मुहब्बत मतलूब है।”

आसनत को अपने शौहर पर तरस आ रहा था। वह हमदर्दी से बोली, “मनस्सी के बाबा! इस वक़्त तो आपके लिए उनका नज़रबंद होना ही बहुत अज़ियत का बाइस होगा ... है ना? आगे उनके बारे में आपका इरादा किया है?”

“तीन दिन तक तो मैं उनको ग़ैरयक़ीनी की इस हालत में हिरासत में रखूँगा। इस दौरान मैं इस उम्मीद के साथ दुआ करता रहूँगा कि अल्लाह उनके दिलों से हमकलाम हो। फिर मैं शमाऊन को उनकी नज़रों के सामने रस्सियों से जकड़कर क़ैद में डालूँगा। उम्मीद है कि यह देखकर उन्हें उस अलमनाक दिन की याद सताने लगेगी जब उन्होंने मुझे बाँधकर बेच दिया था। बाक़ी भाइयों को मैं अपने फ़ाक़ा-ज़दा घराने के

लिए अनाज देकर घर रवाना कर दूँगा। मुझे उम्मीद है कि जल्द ही वह अपने भाई बिनयमीन को लेकर लौट आएँगे।”

आसनत ने मुसकराकर उनके चेहरे पर नज़र डाली, “ख़ुदा करे कि यह वक़्त भी जल्द गुज़र जाए। मुझे तो आपके बूढ़े बाप का ख़याल आ रहा है। एक बार फिर उन्हें एक बेटे की जुदाई का सदमा बरदाश्त करना पड़ेगा।”

हाकिमे-मिसर के घर पर

उन दिनों हज़रत यूसुफ़ को अपनी रिहाइशगाह वीरान-सी लग रही थी। उनकी बीवी आसनत अपने वालिदैन से मिलने के लिए हीलियोपुलिस गई हुई थी। बेशक उन्होंने ही उसे जाने पर रज़ामंद किया था। लेकिन बीवी-बच्चों के बग़ैर यों लगता था जैसे दिन गुज़रने के ही नहीं हैं। उनको घर से गए सिर्फ़ चार ही हफ़्ते हुए थे। अभी एक और हफ़्ता उनके बग़ैर ही गुज़ारा करना था। आज आम तातील थी। एक देवता का तहवार था। हज़रत यूसुफ़ ने इस ख़ला को घर की मसरूफ़ियात से पुर करना चाहा, लेकिन उनका दिल किसी काम में भी न लगा। वह बड़ी बेचैनी से अपने महल में घूमने लगे। उनके पाँव दबीज़ क़ालीन में धंसते चले जा रहे थे। फूलों की भीनी भीनी ख़ुशबू ने उनके नथनों को मुअत्तर कर दिया। पूरे घर में बड़े क़रीने से गुलदान सजे हुए थे। एक मौसीक़ार निहायत सुरीली धुन बजा रहा था, लेकिन वह भी उन पर बेअसर साबित हो रही थी। आख़िरकार अराम जो उनका क़ाबिले-एतमाद ग़ुलाम और

घर का मुंतज़िम था उनके सामने से गुज़रा। उन्होंने हाथ के इशारे से उसे रोका, “अराम, ज़रा ठहरो! मेरे बीवी-बच्चों की कोई ख़बर? वह कब तक लौट रहे हैं?”

अराम की निगाहें अपने मालिक की निगाहों से टकराईं, “नहीं मेरे आक़ा! अल्लाह ने चाहा तो जल्द ही सहीह-सलामत लौट आएँगे।” सारे मुलाज़िम अपनी रहमदिल मालिकन और बच्चों की कमी को बुरी तरह महसूस कर रहे थे। हाकिमे-मिसर का घराना उन में से था जहाँ घर के हर फ़रद को मुहब्बत मिलती थी। अराम ने धीमे लहजे में जवाब दिया, “मेरे आक़ा! हो सकता है हमारी मालिकन वक़्त से पहले ही आ जाएँ। उमूमन तो वह घर से ज़्यादा अरसा बाहर नहीं रह सकतें।”

जब हज़रत यूसुफ़ अपनी ख़्वाबगाह की तरफ़ तेज़ तेज़ क़दम उठाते हुए जाने लगे तो उनके ख़यालात का धारा शमाऊन की तरफ़ बह निकला। वह अभी तक उस सरकारी क़ैदख़ाने में बँधा पड़ा था जहाँ उन्होंने ख़ुद कई अज़ियतनाक साल गुज़ारे थे। वह सोचने लगे कि शमाऊन पर क्या बीत रही होगी। वह अल्लाह की आवाज़ सुन रहा होगा कि नहीं? क्या उसकी तौबा तक नौबत पहुँच गई है? फिर हज़रत यूसुफ़ का ज़हन दूसरे भाइयों की तरफ़ मुड़ गया जो कनान के लंबे सफ़र पर रवाना हो चुके थे। क्या वह बिनयमीन को लेकर लौटकर आएँगे? उनका बाप एक और अज़ियतनाक दौर से गुज़र रहा होगा। काश वह उसे जल्द मिल सकें!

सोने के कमरे में जाकर हज़रत यूसुफ़ दुआ में इतने झुक गए कि उनका माथा ज़मीन से जा लगा। “ऐ मेरे बापदादा के ख़ुदा! मेरे भाइयों की वापसी का दिन जल्द ला। मेरा दिल बिनयमीन के लिए तड़प रहा है। मेरे बाप को तौफ़ीक़ अता कर कि वह उसे उनके साथ आने की इजाज़त दे दे। ऐ क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा, मेरे बाप को इतनी ज़िंदगी इनायत कर कि वह अपनी आँखों से देखे कि जो वादे तूने अपनी मुहब्बत में उसके साथ किए थे उन्हें तूने कमाल वफ़ादारी से पूरा किया है।” हज़रत यूसुफ़ काफ़ी देर तक दुआ में झुके रहे। उन्हें अल्लाह की हुज़ूरी में बड़ी तसल्ली और हौसला मिला। आख़िरकार वह उठे और झरोके में जा खड़े हुए। फ़व्वारे की ख़ुशगवार रिम-झिम दोपहर की चिलचिलाती धूप के असर को ज़ाइल करने पर कमरबस्ता थी। हज़रत यूसुफ़ के दिल में ख़्वाहिश उभरी कि काश मैं भी फ़व्वारा हूँ, एक ऐसा ज़र्फ़ जिस में से अल्लाह का रूह दूसरों तक पहुँच जाए, ख़ास तौर पर भाइयों तक ताकि मैं उनके लिए बरकत का बाइस बनूँ!

क्या वाक़ई वह अपने भाइयों को माफ़ कर सकते थे? अभी तक उनकी नज़रों में वह मंज़र समाया हुआ था जब भाइयों ने उन्हें बेचकर रक़म वसूल की थी। हज़रत यूसुफ़ की आँखें भर आईं। उन्हें शमाऊन की गिरिफ़्तारी ख़ूब याद आया। उस वक़्त दूसरे भाई दाँत किचकिचाते हुए आपस में कहने लगे थे, “हमने जो कुछ अपने भाई के साथ किया

था उसका नतीजा अब भुगत रहे हैं। जब वह रहम की भीक माँग रहा था तो कितनी सख़्त अज़ियत में था। फिर भी हमने उसकी एक न सुनी।"

रूबिन उन पर बरस पड़ा था, "मैंने तुम्हें बताया न था कि उसे किसी क़िस्म का नुक़सान न पहुँचाना? लेकिन तुम मेरी कहाँ सुनते थे! और अब हमें उसकी मौत की क़ीमत अदा करनी पड़ रही है।"

इन बातों से हज़रत यूसुफ़ की आँखों में आँसू उमड आए थे। वह उन्हें छोड़कर किसी अलहदा कमरे में चले गए थे जहाँ वह फूट फूटकर रोने लगे थे। लेकिन यह आँसू ख़ुशी के आँसू भी थे इसलिए कि अल्लाह भाइयों के दिलों में काम कर रहा है। हज़रत यूसुफ़ का दिल अपने भाइयों ही में अटका था। उन्होंने हुक्म दिया था "उनके बोरे ग़ल्ले से भर देना और रक़म उन बोरों ही में वापस रख देना।" उन्हें सफ़र के लिए भी अनाज मुहैया किया गया था।

हवा के गरम झोंकों से खजूर के दरख़्त सरसरा रहे थे। लेकिन हज़रत यूसुफ़ बेहिसो-हरकत खड़े एक और आवाज़ पर तवज्जुह दे रहे थे—पहियों की चरचराहट और घोड़ों के टापों की आवाज़ जो अब क़रीब आते आते ख़ासी बुलंद होती जा रही थी। "तो क्या इसका मतलब है ...?"

हज़रत यूसुफ़ का गुमान दुरुस्त था। उनके बीवी बच्चे घर लौट आए थे। उन्होंने बड़ी गरमजोशी से आगे बढ़कर आसनत और बच्चों को नीचे उतारा। मुहाफ़िज़, ग़ुलाम और गाड़ीबान ख़ानदान को फिर से इकट्ठा

देखकर बहुत ख़ुश हुए। पाँच-साला मनस्सी अपनी अन्ना की गोद से मचलकर नीचे उतरा और बाज़ू ऊपर करके अब्बू! अब्बू! चिल्लाने लगा। हज़रत यूसुफ़ ने फ़ौरन उसे अपनी मज़बूत बाँहों में जकड़ लिया और बेइख़्तियार उसके गोल-मटोल गालों को चूमने लगे। मनस्सी ने अपने तीन-साला भाई के सर को चूमते हुए इसरार किया कि अब्बू इसको भी बोसा दें। हज़रत यूसुफ़ ने उसे ख़ुश रखने के लिए उस सोए हुए, पसीने से शराबोर घुँघराले बालोंवाले सर को भी चूम लिया।

देखते ही देखते जैसे उस बेजान घर में ज़िंदगी की लहर दौड़ गई। खोई हुई रौनक़ वापस आ गई। घर में हर तरफ़ चहल-पहल पैदा हुई। ग़ुलाम इधर-उधर भागे फिरते। कोई हम्माम में पानी भरता। कोई ठंडा मशरूब लेने दौड़ता। किसी को खाने-पीने की फ़िकर दौड़ाए लिए जाती। ग़रज़ इस तमाम गहमा-गहमी में हर चेहरा घरवालों को वापस पाकर ख़ुशी से तमतमा रहा था। ख़ुदा ख़ुदा करके हज़रत यूसुफ़ और आसनत को तनहाई नसीब हुई। उन्हें यह ख़ुशगवार एहसास हो रहा था कि जब तक वह इकट्ठे न हों अधूरे ही रहते हैं।

आसनत अपने घर की बातें करने लगी, ख़ास तौर पर रा (सूरज देवता) के पुजारी यानी अपने बाप की। "अब्बा जी हमारे ख़ुदा से बहुत मुतअस्सिर हैं, क्योंकि कोई देवता हमें इस ख़ौफ़नाक कह्त के बारे में ख़बरदार कर सकता था और न बचा ही सकता था। अब्बा यह सब कुछ जानते हैं। लेकिन फिर भी ..."

हज़रत यूसुफ़ ने अपनी बीवी का हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसकी बात को ख़त्म करते हुए बोले, "फिर भी तुम्हारे अब्बा अगरचे ज़िंदा ख़ुदा को क़बूल कर लेना चाहते हैं, लेकिन अपने आला मंसब को खोने के डर से वह ऐसा नहीं कर पा रहे। ठीक है ना?"

आसनत ने हाँ में सर हिलाया, "मेरी जान! आपके मंसब का भी ख़तरा है। इस ओहदे की वजह से बहुत-से मुअज़्ज़ज़ीन आपसे हसद करते हैं। अब्बा को इस बात की ख़ुशी है कि आपने इस अरसे में ख़ुद को मिसरी रंग में इस क़दर रंग लिया है कि बहुत-से लोग तो यह बिलकुल भूल चुके हैं कि आप इबरानी हैं। ख़ैर, फ़िरऔन आप पर पूरा एतमाद रखता है। उसके बद-उन्वान अफ़सरों में सिर्फ़ आप ही तो वफ़ादार और मेहनती हैं जिन्होंने मिसर को तबाही से बचाने का सामान किया है।"

लेकिन हज़रत यूसुफ़ ने जवाब दिया, "मुझे यक़ीन है कि अल्लाह ने यह आला मंसब सिर्फ़ हमारी अपनी ख़ुशी के लिए अता नहीं किया।" कुछ देर रुककर उन्होंने आसनत के चेहरे को पढ़ने की कोशिश की कि आया वह उनकी बात को समझ रही है या नहीं। फिर बात जारी रखी, "आज सिहपहर ख़ुदा ने एक बात मुझ पर वाज़िह की। वह यह कि उसने मुझे अपने घराने से पहले यहाँ मिसर में इसलिए भेजा कि मैं उन्हें कह्त से बचा सकूँ। अल्लाह हज़रत इब्राहीम की औलाद से एक क़ौम बनानेवाला है। इतने शदीद कह्त के बावुजूद वह मेरी पनाह में यहाँ तरक़्क़ी कर सकेंगे।"

आसनत ने बड़े ख़ुलूस से अपने दिल की बात कही, “मेरी जान! मैं इस काम में आपके साथ हूँ। आपका ख़ुदा मेरा ख़ुदा और आपके लोग मेरे लोग हैं। मुझे उन पर फ़ख़्र है।”

“आमीन।” हज़रत यूसुफ़ को इस लमहे चारों तरफ़ अल्लाह की हुज़ूरी का एहसास हुआ। आसनत ने भी इसे महसूस किया। दोनों कुछ देर तक बिलकुल ख़ामोश रहे। फिर हज़रत यूसुफ़ ने सुक़ूत को तोड़ा, “इससे कोई फ़रक़ नहीं पड़ता कि कौन किस ओहदे पर फ़ायज़ है। असल और ज़रूरी बात अल्लाह के साथ साथ चलना और उसका फ़रमाँबरदार होना है। ख़ुशी इसी को कहते हैं। यहाँ तक कि जब मैंने मुसीबत के तवील साल क़ैद में गुज़ारे तो उस वक़्त भी मुझे यह ख़ुशी मुयस्सर थी।”

जब हज़रत यूसुफ़ ने अपने घराने के मिसर मुंतक़िल होने का ज़िक्र किया तो उनका लहजा पुरएतमाद था। अल्लाह के वादों और उसके मनसूबे की तकमील पर उन्हें ज़रा भी शक न था। लेकिन कभी कभी उन्हें ख़दशात घेर लेते थे। उन्हें हमेशा यह फ़िकर दामनगीर रहती थी कि बाप बूढ़ा है, कहीं वह मझसे मिलने से पहले ही कूच न कर जाएँ। सारे घराने का दारो-मदार तो उन ही पर है। उन ही पर सारे घराने का इत्तिहाद क़ायम रहता है। उनके मंज़र से हटते ही उनके बेटे यक़ीनन विरासत के लिए लड़ने मरने लगेंगे। इस तरह अल्लाह की क़ौम कभी तशकील नहीं होने पाएगी।

दिन हफ़्ते में और हफ़्ते महीने में बदल गए, लेकिन भाइयों की कोई ख़बर न मिली। हज़रत यूसुफ़ की बेचैनी बढ़ने लगी। लेकिन एक दिन जब ग़ल्ला-मंडी में गहमा-गहमी थी और लोगों का हुजूम उमडा चला आ रहा था तो अराम अपने मालिक की जाए-कार पर आसनत का पैग़ाम लेकर आया। हज़रत यूसुफ़ अभी वह पैग़ाम पढ़ ही रहे थे कि उन्हें यों महसूस हुआ जैसे मंडी में एकदम ख़ामोशी छा गई है। सारा शोरो-ग़ौग़ा मौक़ूफ़ हो गया। ज्योंही उन्होंने नज़रें उठाईं क्या देखते हैं कि फ़ूतीफ़ार और उसके मुहाफ़िज़ उनकी तरफ़ बढ़े चले आ रहे हैं। दस ग़ैरमुल्की उनके पीछे पीछे थे। हज़रत यूसुफ़ का दिल धक से रह गया। उनके भाई पहुँच चुके थे। सबसे बड़ी बात यह कि छोटा भाई बिनयमीन भी उनके साथ था।

हज़रत यूसुफ़ ने अपनी ख़ुशी को दिल ही में दबा दिया और बड़े कारोबारी अंदाज़ में अराम को हुक्म दिया कि वह इनको घर ले जाए। फिर उन्होंने क़दरे बुलंद आवाज़ में कहा, "यह आदमी आज दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँगे। ज़ियाफ़त का इंतज़ाम भी कर देना।"

यह सुनकर फ़ूतीफ़ार हक्का-बक्का रह गया। इन अजनबियों के लिए ज़ियाफ़त का एहतमाम क्यों! उधर भाइयों को शदीद धचका लगा। यहूदाह को फ़ौरन बाप की याद आई और उसने ठंडी साँस भरकर कहा, "ख़ुदा हाफ़िज़ बाबा, अब हम कभी भी घर नहीं लौट पाएँगे।" फिर वह

दान की तरफ़ मुड़ा। “यक़ीनन हम पर उस रक़म की चोरी का इलज़ाम लगाया जाएगा जो हमारे बोरों में लौटाई गई थी।”

लावी की बुरी तरह काँपती हुई आवाज़ सुनाई दी, “मेरी बात याद रखो। वह अचानक हम पर हमला करेंगे। गधे छीन लेंगे और हमें ग़ुलाम बना लेंगे।”

बिनयमीन ने एहतजाज करते हुए कहा, “मुझे तो हाकिमे-मिसर की आँखों में मुहब्बत की झलक नज़र आई है। क्या उसने तुम्हें नहीं बताया कि वह अल्लाह से डरता है?”

सब भाई बिनयमीन को उसके भोलपन पर झिड़कने लगे। “यह मत भूलना कि यहाँ तुम अपने बाप के महफ़ूज़ ख़ैमे में नहीं बैठे बल्कि ज़ालिम दुनिया के शिकंजे में हो।” यों बहस-मुबाहसा करते हुए वह हज़रत यूसुफ़ की रिहाइशगाह के फाटक पर पहुँच गए। अराम को देखते ही उन्होंने अंदाज़ा लगा लिया कि यह आदमी रहमदिल है। लिहाज़ा वह फ़ौरन उसे यक़ीन दिलाने की कोशिश करने लगे कि हमने कोई रक़म नहीं चुराई, सब ग़लती से हो गया था।

यहूदाह कहने लगा, “देखिए जनाब, हम वह सारी रक़म वापस ले आए हैं। कुछ और रक़म भी साथ लाए हैं ताकि और अनाज ख़रीद सकें।”

अराम ने यहूदाह की पीठ थपथपाते हुए तसल्ली दी, "फ़िकर न करो। डरो नहीं। तुम्हारे ख़ुदा ने, तुम्हारे बाप के ख़ुदा ने ज़रूर वह रक़म तुम्हारे बोरों में डलवा दी होगी। तुम्हारे अनाज की क़ीमत मिल गई है।"

बिनयमीन ने ख़ुशी से सर हिलाते हुए कहा, "मैंने तुम्हें कहा नहीं था? फिर तुम क्यों इतने परेशान हो?"

इबरानी मेहमानों की ख़बर हर ज़बान पर थी। ग़ुलाम हैरान थे कि हमारा आक़ा क्यों इन लोगों के लिए ज़ियाफ़त का एहतमाम कर रहा है, इन सादालौह गडरियों के लिए जो अपने गधों पर सवार होकर आए हैं। उन्हें पाँव धोने के लिए पानी दिया गया। अराम ने अपनी निगरानी में गधों को चारा दिलाया। तब उसने फ़ौरन जाकर मेहमानों की इत्तिला आसनत को दी जिसने छुपकर उन्हें बड़ी दिलचस्पी से देखा। अल्लाह का शुक्र है, अब वह ख़ासे पुरसुकून दिखाई दे रहे थे।

जब भाइयों को बताया गया कि वह दोपहर का खाना हाकिमे-मिसर के साथ खाएँगे तो उन्होंने जल्दी जल्दी उसके लिए तोह्फ़े निकालने शुरू कर दिए। आसनत यह सब कुछ देखती रही। उसे अपने शौहर के छोटे भाई बिनयमीन को पहचानने में ज़रा भी दिक़्क़त न हुई। इस ख़याल से कि आज ज़रूर यूसुफ़ अपने आपको अपने भाइयों पर ज़ाहिर कर देंगे उसने अन्ना से कह दिया कि वह बच्चों को भी तैयार कर दे। यक़ीनन यूसुफ़ चाहेंगे कि अपने बेटों को भी अपने भाइयों से मिलवाएँ। शमाऊन

को देखकर आसनत मुसकरा उठी। फ़ूतीफ़ार ने उसे जेल से रिहा कर दिया था।

अराम ने भाइयों की हिम्मत बँधाई, "अब ख़ुश हो जाओ। तुम्हारा भाई भी आ गया है। हाकिम भी चंद लमहों में आने ही वाले हैं। तुम्हें सख़्त भूक लग रही होगी। ख़ूब सेर होकर खाना खाना।" जब वह उन्हें छोड़कर जाने लगा तो उसने शमाऊन को बुड़बुड़ाते सुना, "नालायक़ो! मिसर लौटने में तुमने इतनी देर क्यों लगाई? वह तो ख़ैर हुई कि कह्त अभी ख़त्म नहीं हुआ वरना तुम मुझे इस सड़ी हुई जगह पर हमेशा के लिए छोड़ गए होते।"

ज्योंही हाकिमे-मिसर अंदर दाख़िल हुआ सब भाई उसके सामने ताज़ीमन ज़मीनबोस हो गए। उन्होंने सुख का साँस लिया जब उनके आला-मंसब मेज़बान ने ख़ुश होकर उनके तोह्फ़े वसूल किए। साथ साथ वह उनकी तारीफ़ भी करता जाता था, "यह तो बहुत ख़ूबसूरत तोह्फ़े हैं। बहुत बहुत शुक्रिया। कनान का शहद तो बड़ा ही ख़ास होता है। और यह मसाले, बादाम और पिस्ता, इनका तो जवाब ही नहीं।" हज़रत यूसुफ़ ने मुहब्बत-भरी नज़रों से उन तहायफ़ को देखा जो उनके बाप के उमंगों-भरे दिल ने भेजे थे। अपनी आवाज़ पर क़ाबू पाते हुए उन्होंने बड़ी मुहब्बत से पूछा, "अच्छा बताओ तो सही, तुम्हारा बूढ़ा बाप कैसा है? क्या वह अभी तक ज़िंदा है?" वह इस सवाल का जवाब

सुनने के लिए कितने बेचैन थे! और जब उन्होंने बाप की ख़ैरियत की ख़बर सुनी तो उनके दिल से एक बड़ा बोझ उतर गया।

सबसे आख़िर में हज़रत यूसुफ़ ने बिनयमीन के चेहरे पर नज़रें जमा लीं। फिर कहा, "अच्छा, तो यह है तुम्हारा सबसे छोटा भाई जिसके बारे में तुमने मुझे बताया था! 'मेरे बेटे! अल्लाह तुझे बरकत दे'।" हज़रत यूसुफ़ का दिल अपने भाई की मुहब्बत से इस क़दर लबरेज़ हो गया कि वह वहाँ ज़्यादा देर तक न ठहर सके। चुनाँचे वह उन्हें छोड़कर बाहर निकल गए। आसनत ने देखा कि उनके शौहर अपने कमरे में अपने दिल का दर्द निकालने के लिए सिसकने लगे। सालों के ठहरे हुए जज़बात अब बह निकले थे।

बड़ी मुश्किल से हज़रत यूसुफ़ की हालत सँभली। उन्होंने अपना मुँह धोया और खाना पेश करने का हुक्म दिया। ऐसे नाज़ुक मौक़े पर वह आसनत की मौजूदगी से बहुत ख़ुश थे। उन्होंने अपनी बीवी के साथ एक मेज़ पर और भाइयों ने दूसरी मेज़ पर खाना खाया। जो मिसरी इस दावत में शरीक थे उन्हें अलहदा बिठाया गया क्योंकि वह इबरानियों के साथ खाना खाना अपनी शान के शायान नहीं समझते थे।

एक बार फिर हज़रत यूसुफ़ ने भाइयों को हैरान कर दिया। उन्होंने उन्हें उम्र के हिसाब से बिठाया। पहले सबसे बड़ा भाई और आख़िर में सबसे छोटा। इस फ़ेल से वह बहुत मुतअस्सिर हुए। यों लगता था जैसे

हाकिम लोगों के सिर्फ़ ख़यालात ही नहीं पढ़ सकता बल्कि और भी बहुत कुछ कर सकता है।

भूक के मारे हुए इन इबरानियों ने ख़ूब सेर होकर खाना खाया। जल्द ही वह ख़ुशी से हवा में उड़ने लगे। वह एक बात से ज़्यादा हैरान हुए कि उनका मेज़बान बिनयमीन को बार बार क्यों खाना भिजवा रहा है, गो वह यह देखकर नहीं जलते थे। उन्हें अपने इस छोटे भाई से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी। हज़रत यूसुफ़ ख़ुश हुए जब उन्होंने देखा कि उनके भाई इस इमतहान में कामयाब हो गए हैं। अब वह काफ़ी बदल चुके थे।

हाकिम ने अराम को अपनी मेज़ पर बुलाकर हुक्म दिया कि इन सभों के बोरे अनाज से भर दिए जाएँ। बाक़ी बातें आसनत न सुन सकी, लेकिन उसे अराम के चेहरे पर परेशानी साफ़ नज़र आया।

सुबह-सवेरे इबरानियों को उनके सफ़र पर रवाना कर दिया जाना था। हज़रत यूसुफ़ यह सोचकर कि इस अगले इमतहान का नतीजा क्या होगा अच्छी तरह से सो न पाए थे। आसनत ने थोड़ी देर अपने शौहर के साथ बैठकर बातें कीं। अपने ख़ावंद की यह ख़्वाहिश जानकर कि वह अपने भाइयों के अंदर इनसानियत देखना चाहते हैं आसनत के दिल पर गहरा असर हुआ। अब जब कि सूरज आहिस्ता आहिस्ता तुलू हो रहा था तो वह छत पर चढ़ गई ताकि उन भाइयों के कूच का मंज़र देख सके। जब वह ख़ुशी ख़ुशी सफ़र करने लगे तो वह दूर तक उनको देखती रही। उन्हें अपना यह आख़िरी सफ़र बहुत कामयाब लगता था।

आसनत ने सोचा, मालूम नहीं कि शौहर अपने भाइयों का इमतहान कैसे करेगा। फ़िरऔन का शहर सूरज की सुनहरी रौशनी में डूबा हुआ था। क़ाफ़िला कब का नज़रों से ओझल हो चुका था। लगता था अब कुछ नहीं होगा। ऐन उसी वक़्त उसने अपने सरताज की आवाज़ सुनी जो चिल्ला चिल्लाकर अराम को पुकार रहे थे। अगले ही लमहे अराम एक और नौकर के साथ घोड़ा दौड़ाता हुआ क़ाफ़िले के ताक़्क़ुब में रवाना हो गया। चूँकि उसका शौहर अभी काम के लिए घर से न निकला था इसलिए आसनत ने अंदाज़ा लगा लिया कि भाइयों को वापस लाया जाएगा और कि हज़रत यूसुफ़ उनकी वापसी के मुंतज़िर हैं। उसने फ़ौरन अल्लाह से दुआ की, "ऐ ख़ुदा! आज यूसुफ़ के भाई उनसे मिला दे।"

इसके बाद वह छत से उतर आई ताकि जो कुछ भी हो वह अपने ख़ावंद के पास ही हो।

संजीदा लमहात

शहर में गोया देहातियों का सैलाब उमड आया था। वह ख़रबूज़े, प्याज़ और अपने खेतों की दूसरी पैदावार ले लेकर आ रहे थे। अराम के लिए लोगों का यह हुजूम और गाड़ियों की भरमार रास्ते की रुकावट बने हुए थे। उसके सर पर एक ही धुन सवार थी कि इबरानियों को मेरे हाथ से बचकर नहीं जाना चाहिए। उसके आक़ा का हुक्म था कि उन्हें हर क़ीमत पर वापस लाया जाए। जाने इसकी क्या वजह थी! उसकी पेशानी पर पसीने के क़तरे मोतियों की तरह चमक रहे थे। उसने घोड़े को तेज़ भगाने के लिए ज़ोर से साँटा मारा और चिल्लाने लगा, “रास्ता बनाओ! रास्ता बनाओ!”

अराम के साथी के लिए अपने सरदार के साथ चलना मुश्किल हो रहा था। वह बोला, “भला हमारा आक़ा इन ग़ैरमुल्कियों से चाहता क्या है? पहले तो उसने उनके साथ बड़ा शाहाना सुलूक किया और फिर

सिर्फ़ चंद ही घंटों के बाद उसने हमें उनका पीछा करने के लिए भेज दिया गोया वह हमारे दुश्मन हों।"

अराम ने उसे खा जानेवाली नज़रों से घूरते हुए कहा, "फ़िरऔन के दस्ते-रास्त के फ़ैसलों पर सवाल करनेवाले तुम कौन होते हो?"

अगरचे उसने यह सवाल अपने साथी से किया था, लेकिन हक़ीक़त में वह भी तो अपने आक़ा के अहकामात से परेशान था। आख़िर उसने यह हुक्म क्यों दिया कि इन इबरानियों के अनाज के बोरों में ग़ल्ले के अलावा कोई और चीज़ भी डाल दो? क़ाफ़िला अब उन्हें दूर से दिखाई देने लगा।

शमाऊन अभी यहूदाह का मज़ाक़ उड़ा रहा था, "सुनो भाई! अगर तुम गुस्ताख़ी कर रहे हो तो मैं हाकिमे-मिसर को बता देता हूँ। वह तुम्हें सीधा कर देगा। फिर जेल में तुम अपनी गुस्ताख़ी पर ग़ौरो-ख़ौज़ करना।" इस पर सब हंस पड़े।

अराम ने जब उनकी यह बातें सुनीं तो उसे उनको एक बार फिर मायूसियों में धकेल देना बड़ा ज़ालिमाना फ़ेल मालूम हुआ। उनके ऐन सर पर पहुँचने से पहले उसने अपने चेहरे को सख़्त करने की कोशिश की और फिर क़रीब पहुँचकर मसनूई ग़ुस्से से चिल्लाया, "ठहरो! रुको! तुमने भलाई के बदले में बुराई क्यों की?" साथ ही उसका साथी चीखा, "तुमने हमारे आक़ा का चाँदी का प्याला क्यों चुराया है?"

ग्यारह घबराए हुए चेहरे अपना पीछा करनेवालों को समझने की कोशिश करने लगे। उनकी आँखें ख़ौफ़ से फटी जाती थीं। उन्होंने डरते डरते पूछा, "हमने क्या किया है?"

"तुमने संगीन जुर्म किया है," अराम ने अपनी बात फिर दोहराई।

उन्होंने यकज़बान होकर जवाब दिया, "जनाब आप क्या कह रहे हैं? अल्लाह की क़सम हमने ऐसा कोई काम नहीं किया है।"

यहूदाह ने सभों की तरफ़ से सफ़ाई पेश की, "जनाब, हम दियानतदार आदमी हैं। याद है हमें जो रक़म अपने बोरों में मिली थी वह फ़ौरन लौटा दी थी? तो फिर हम आपके आक़ा के घर से सोना या चाँदी किस तरह चुराने लगे? देखिए जनाब, अगर हम में से किसी के बोरे में से भी आपका चाँदी का प्याला निकल आया तो आप उसे मौत के घाट उतार देना। और रहे हम, तो हम सब आपके ग़ुलाम हो जाएँगे।" देखते ही देखते बहुत-से राहगीर तमाशा देखने के लिए रुक गए।

अराम बोला, "ठीक है। लेकिन सिर्फ़ वह शख़्स जिसके बोरे से चाँदी का प्याला निकलेगा मेरे आक़ा का ग़ुलाम बनकर रहेगा, बाक़ी सबको जाने की इजाज़त होगी।"

इबरानियों ने अपने बोरे ज़मीन पर रख दिए। हर एक काँपते हाथों से अपना बोरा खोलने लगा। जब अराम बड़े मुहतात अंदाज़ में बोरे में हाथ डालकर अनाज को टटोलता तो राहगीर लंबी गरदनें कर करके झाँकने की कोशिश करते। उसने सबसे बड़े भाई के बोरे से शुरू किया और इस

तरह तलाशी लेते लेते आख़िर पर सबसे छोटे भाई बिनयमीन का बोरा खोला। दस बोरों से तो चाँदी का प्याला न निकला। अब तो हर तरफ़ से ग़ुसीली आवाज़ें सुनाई देने लगीं, "वाह! वाह! बेचारों पर बिलावजह ही इलज़ाम लगाया गया है।"

लेकिन अराम ने तलाशी जारी रखी। यहूदाह एक बार फिर अराम को अपने दियानतदार होने का यक़ीन दिलाने की कोशिश करने लगा, लेकिन ऐन उसी वक़्त उसने बिनयमीन के बोरे से प्याला निकाल लिया। हर तरफ़ गहरी ख़ामोशी छा गई। सबको धचका-सा लगा। अराम ने प्याला ऊपर उठाकर सबको दिखाते हुए सख़्ती से कहा, "अच्छा तो फिर यह क्या है दियानतदारो? उफ़ मेरे ख़ुदाया! यह सब कुछ तुम हाकिम से जाकर कहना।"

बिनयमीन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। उसे यक़ीन नहीं आ रहा था। वह कभी एक भाई का मुँह देखता कभी दूसरे का। सब के सब शदीद सदमे का शिकार थे। उन में से कोई भी उसे तसल्ली न दे सका। हर एक के चेहरे से दहशत टपक रही थी। ताहम उसे यक़ीन था कि मेरे भाई मुझे मेरे हाल पर नहीं छोड़ेंगे। सबने सदमे से निढाल होकर अपने कपड़े फाड़ डाले। अब बिनयमीन ने जान लिया कि यहाँ मिसर में हम वाक़ई एक घटिया माहौल में आ फंसे हैं। आख़िर यह सब मेरे साथ क्या हो रहा है? तमाशाई उन पर हिक़ारतआमेज़ आवाज़े कसने लगे,

“चोर! निकम्मे इबरानी! ग़ैरमुल्की भिकारी! इन्हें जेल में डाल दो।” भाइयों के चेहरे शरमिंदगी से लटक रहे थे।

यहूदाह ने दाँत किचकिचाते हुए कहा, “जल्दी करो, गधों पर सामान लाद लो। हम सब वापस जाते हैं।”

हज़रत यूसुफ़ और आसनत ने उन्हें इहाते में दाख़िल होते देखा। वह इंतहाई शिकस्तख़ुरदा दिखाई दे रहे थे। लेकिन आसनत ने बड़े मसरूर लहजे में सरगोशी की, “उन्होंने बिनयमीन को अकेला नहीं छोड़ा।”

भाई हज़रत यूसुफ़ से मिलने के लिए गिरते-पड़ते आ पहुँचे। अराम चाँदी का प्याला उठाए उनके आगे आगे था। इंतहाई ख़ामोशी से वह सब अपने भाई के सामने झुक गए।

आसनत हैरत से अपने शौहर को देखती रही कि यह आजिज़ी से झुके हुए उन सिरों पर किस तरह इतने सख़्त अलफ़ाज़ से गरज सकता है। “तुमने यह क्या किया है? क्या तुम जानते नहीं थे कि मुझ जैसा बा-इख़्तियार शख़्स तुम्हें आसानी से ढूँड निकालेगा?”

फिर यहूदाह उठा और हज़रत यूसुफ़ के क़दमों पर गिर पड़ा। वह जानता था कि अब वह हाकिमे-मिसर के रहमो-करम पर ही हैं। इसलिए वह गिड़गिड़ाकर कहने लगा, “मेरे आक़ा! हम आपके सामने किस तरह सफ़ाई पेश कर सकते हैं! हम कैसे ख़ुद को बेगुनाह साबित कर सकते हैं! अल्लाह ने हमारा गुनाह ज़ाहिर कर दिया है। अब सिर्फ़ वही नहीं

जिसके बोरे में से प्याला बरामद हुआ है बल्कि हम सब आपके ग़ुलाम हैं।"

हज़रत यूसुफ़ करख़्त आवाज़ में बोले, "नहीं, ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। सिर्फ़ वही जिसके पास से प्याला निकला है मेरा ग़ुलाम बनकर रहेगा। बाक़ी तुम सब अपने बाप के पास जा सकते हो।"

यहूदाह में भाई की मुहब्बत ने जुर्रत पैदा कर दी थी। वह झट बोल उठा, "मेरे आक़ा! अल्लाह के लिए मुझे खुलकर बात करने दीजिए। नाराज़ न हों। आप मेरे लिए बादशाह ही की मानिंद हैं।" उसने अपने दोनों हाथ जोड़कर हज़रत यूसुफ़ की तरफ़ आगे बढ़ा दिए।

हाकिमे-आला ने अपना सर इस तरह झुकाया जैसे वह उसकी हर बात ग़ौर से सुन रहा हो। दरअसल उसने यह अंदाज़ अपने जज़बात को छुपाने के लिए इख़्तियार किया था। उस में अब ज़्यादा देर तक यहूदाह की यह हालत देखने की सकत न रही थी। उसकी आँखों में आँसू उमडे चले आ रहे थे। फिर होंट फड़फड़ाने लगे। उन्होंने फ़ौरन अपना एक हाथ मुँह पर रख लिया। सिर्फ़ उनकी क़ुव्वते-इरादी ही लमहा बलमहा उनके छलकते आँसुओं को बहने से रोके हुए थी।

यहूदाह की काँपती हुई आवाज़ अब हज़रत यूसुफ़ को बिलकुल क़रीब से सुनाई दी। "आलीजाह! आपने हमसे पूछा था कि हमारा बाप या कोई और भाई है या नहीं। हमने आपको सच सच जवाब दिया था कि हमारा एक बूढ़ा बाप है और सबसे छोटा भाई भी है जो अल्लाह ने

हमारे बाप को बुढ़ापे में अता किया था। इस लड़के का भाई मर चुका है। चुनाँचे यह अपनी माँ की औलाद में से वाहिद है जो ताहाल ज़िंदा है। बाबा इससे वालिहाना मुहब्बत करते हैं।"

अब यहूदाह से रहा न गया और वह ज़ारो-क़तार रोते हुए कहने लगा, "मेरे आक़ा! आपने हमें हुक्म दिया था कि अपने छोटे भाई को यहाँ लेकर आएँ ताकि आप उसे देख लें। और हमने जवाब दिया था कि अगर उसे ले आए तो यह हमारे बाप की बरदाश्त से बाहर होगा। फिर आपने कहा था कि जब तक तुम्हारा छोटा भाई नहीं आएगा तुम मेरे हुज़ूर हाज़िर नहीं हो सकते।"

इतना कहकर उसके सीने से एक दर्दनाक कराह निकली, "जब हम वापस अपने बाप के पास पहुँचे तो आपने जो कुछ कहा था उन्हें बता दिया। ज़ाहिर है बाप का भी इसरार था कि हमें हर हाल में अनाज ख़रीदने के लिए मिसर जाना चाहिए। हमें उन्हें इस बात पर क़ायल करने में बहुत दिन लग गए कि हमारी वापसी की सिर्फ़ एक ही सूरत है, और वह यह कि हमारा छोटा भाई हमारे साथ चले।"

यहूदाह का साँस फूला हुआ था और उस में हिम्मत नहीं थी कि अपने बाप का जवाब हज़रत यूसुफ़ को बताए। उसने कनखियों से देखा कि हाकिम का सर पहले से भी ज़्यादा झुक गया है। लिहाज़ा हाँपते हुए उसने बयान जारी रखा, "आलीजाह! हमारे बाबा ने मालूम है क्या जवाब दिया? वह कहने लगे, 'तुम जानते हो कि मेरी बीवी राख़िल से

सिर्फ़ दो बेटे पैदा हुए थे। इन में से एक तो ... एक तो मुझे पहले ही छोड़कर जा चुका है। उसे जंगली दरिंदों ने फाड़ खाया है। अगर तुम बिनयमीन को भी मेरे पास से ले गए और ख़ुदा नख़्वास्ता इसे भी कुछ हो गया तो मैं तो सदमे से चल बसूँगा'।"

कमरे में हर तरफ़ मौत की-सी ख़ामोशी तारी हुई। यहूदाह की बातों का हाकिमे-मिसर के लिए तरजुमा करते वक़्त ख़ुद तरजुमान का दिल भी भर आया था। ताहम साहिबे-ख़ाना की आँखें हसबे-मामूल ज़मीन पर गड़ी थीं। भौंएं तनी हुई थीं, जैसे वह हमातन गोश हो।

यहूदाह ने अपनी फ़रियाद जारी रखी, "मेरे आक़ा! अगर मैं इस लड़के के बग़ैर अपने बाप के पास लौटकर गया तो ज्योंही उन्हें पता चलेगा कि बिनयमीन हमारे साथ नहीं है वह दम छोड़ जाएँगे। उनकी जान तो बिनयमीन में ही अटका है। और एक बात यह भी है कि मैं इसके बदले में अपनी ज़िंदगी की ज़मानत देकर आया हूँ।"

यहूदाह ने ख़ुद को हज़रत यूसुफ़ के आगे मुँह के बल गिरा दिया और उनके पाँव छूते हुए गिड़गिड़ाया, "मेरे आक़ा! मेरे इस भाई की जगह मुझे अपना ग़ुलाम बनाकर रख लीजिए। अल्लाह के वास्ते इसे भाइयों के साथ वापस जाने दीजिए। बाप की यह बदहाली मझसे देखी नहीं जाएगी।"

यहूदाह हज़रत यूसुफ़ के सामने झुका हुआ फूट फूटकर रो रहा था। हिचकियों के बाइस उसका पूरा वुजूद हिल रहा था। अब फ़ैसला हाकिमे-

मिसर के हाथ में था। सब निगाहें हज़रत यूसुफ़ पर गड़ी थीं। तरजुमान को अपनी आँखों पर यक़ीन नहीं आ रहा था। हाकिमे-वक़्त का चेहरा उनके हाथों में छुपा था। उनकी उँगलियों में से आँसू टपक टपककर ज़मीन पर गिर रहे थे। उनके दर्द से फटते हुए सीने में से एक ज़ख़मी की-सी कराह निकली। यहूदाह के अलफ़ाज़ उनकी रूह में उतर गए थे। अल्लाह की तारीफ़ हो! तमाम भाइयों की ज़िंदगी बदल चुकी थी।

हज़रत यूसुफ़ अपनी जगह से यकदम उठे और एक बार फिर अपने दिल को सख़्त करते हुए अपने मुलाज़िमों पर बरस पड़े, "सब बाहर चले जाओ, मैं अपने भाइयों के साथ तनहाई चाहता हूँ।"

नौकर-चाकर सब उस हॉल में से सर पर पाँव रखकर भागे। चूँकि हज़रत यूसुफ़ मिसरी ज़बान में बात कर रहे थे इसलिए उनके भाइयों को उनकी बात की समझ न आई। लेकिन नौकरों के यों भागने और हाकिमे-मिसर के रोने ने उन्हें इंतहाई ख़ौफ़ज़दा कर दिया कि अब क्या होगा।

हज़रत यूसुफ़ की ज़ोरदार हिचकियों ने फ़िज़ा के सुक़ूत को तोड़ दिया। अब वह उनके दरमियान खड़े हुए। आँखों से ज़ारो-क़तार आँसू बह रहे थे। उन्होंने बारी बारी एक एक भाई को देखते हुए इबरानी ज़बान में कहा, "मैं यूसुफ़ हूँ।"

वह भाई यकलख़्त यों पीछे हटे जैसे उन्होंने कोई भूत देख लिया हो। कुछ काँप उठे। बाज़ का साँस ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे रह

गया। उनकी भौंओं से शरमिंदगी के पसीने के क़तरे टपकने लगे। सिर्फ़ बिनयमीन की आँखें ख़ुशी से चमक उठीं। वह अपने भाइयों की परेशानी पर हैरान हुआ। आख़िर यह यूसुफ़ भाई से इतना डर क्यों रहे हैं?

उन्हें पुरसुकून करने के लिए हज़रत यूसुफ़ ने नरमी से पूछा, "क्या बाबा अभी तक ज़िंदा हैं?" लेकिन भाई इस क़दर सहमे हुए थे कि उनके मुँह से बात तक नहीं निकल पाई। अब उन पर क्या बीतेगी? ताहम उनके बिछड़े भाई ने बड़ी मुहब्बत से उन्हें क़रीब आने को कहा। जब वह झिजकते झिजकते उनकी तरफ़ बढ़े तो उन्होंने एक बार फिर भाइयों को यक़ीन दिलाया, "देखो! मैं तुम्हारा वही भाई यूसुफ़ हूँ जिसे तुमने मिदियानियों के हाथ बेच डाला था। अब तुम परेशान न होना। अल्लाह ने तुम्हारे बुरे फ़ेल को अपने फ़ज़्ल से हमारे घराने को बचाने के लिए इस्तेमाल किया है। यह तो कह्त का सिर्फ़ दूसरा साल है, अभी पूरे पाँच साल पड़े हैं जिन में न काश्त होगी न कटाई। अल्लाह ने बड़े हैरतअंगेज़ तरीक़े से तुम लोगों से पहले मुझे यहाँ भेजा है ताकि तुम और तुम्हारी औलाद यक़ीनी तौर पर बच जाए। ख़ुदा ही ने मुझे बादशाह का आलातरीन मंसबदार बनाया है। सारे मुल्क का इख़्तियार मेरे हाथ में है।"

हज़रत यूसुफ़ ने बेइख़्तियार होकर बिनयमीन को गले से लगाया। दोनों भाई काफ़ी देर तक रोते और एक दूसरे से लिपटे रहे। फिर हज़रत यूसुफ़ ने बारी बारी एक एक भाई को गले लगाया। उनको भी जिन्होंने

उन्हें रस्सियों से जकड़ा था, उनकी फ़रियाद का मज़ाक़ उड़ाया था और उन्हें तारीक गढ़े में फैंक दिया था। आख़िर में हज़रत यूसुफ़ ने आसनत और अपने बेटों को अपने भाइयों से मिलवाया। जब मनस्सी और इफ़राईम बारी बारी अपने चचा और तायों से मिले तो गोया इन मर्दों के दुख का इलाज हो गया।

फ़िरऔन और उसके अफ़सरान को यह सुनकर बहुत ख़ुशी हुई कि वज़ीरे-आज़म के भाई शहर में आए हैं। उन्होंने इनको अपने बीवी-बच्चों समेत मिसर में आकर रहने का सरकारी दावतनामा भेजा। अब उन्हें अपना असासा पीछे छोड़ने की ज़्यादा फ़िकर न रही क्योंकि वह बादशाह की दावत पर मिसर आ रहे थे।

जब भाई घर वापस रवाना हुए तो उन्हें यों लगा जैसे उन्होंने कोई ख़्वाब देखा हो। उनके गधे ऊपर तक लदे हुए थे। हज़रत यूसुफ़ ने सफ़र के लिए उन्हें वाफ़िर मिक़दार में अनाज दिलवा दिया था। कुछ गाड़ियाँ भी उनके साथ कर दी थीं ताकि औरतों और बच्चों को बहिफ़ाज़त मिसर लाया जा सके।

अब सिर्फ़ एक बात रह गई थी। काश उन्हें अपने किए का अपने बुज़ुर्ग बाप के सामने एतराफ़ न करना पड़े! वह कितने पशेमान थे! कितने शर्मसार!

बिछड़े मिलते हैं

हज़रत याक़ूब अब बहुत ज़ईफ़ हो चुके थे। वह बड़ी बेचैनी से अपने बेटों की राह देखते रहे। गरम सहराई हवा से उनके सफ़ेद बाल उड़ाकर उनके चेहरे पर गिर रहे थे। उन्होंने दुआ के लिए बड़ी मुलतजी अंदाज़ में अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठा दिए और काँपती आवाज़ में बोले, “ऐ क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा! तू जो मेरे बापदादा का ख़ुदा है, मैं अपने बेटों को तेरी मुहाफ़ज़त में देता हूँ, ख़ासकर बिनयमीन को। मैंने तुझसे कुछ भी बाज़ न रखा। ऐ प्यारे रब, मैं अपने बच्चों के लिए तड़प रहा हूँ। अपनी मुहब्बत की ख़ातिर मेरे बेटे मुझे वापस कर दे।” फिर उन्होंने ठंडी साँस भरकर कहा, “आजकल तो सब कुछ मेरे ख़िलाफ़ जा रहा है।” उसी वक़्त बादलों के पीछे से सूरज झाँकने लगा जैसे आसमान अल्लाह के महबूब पर मुसकरा रहा हो जो अपने ख़ालिक़ के अजीब मनसूबों से बिलकुल बेख़बर है।

कुत्तों के भौंकने की ख़ौफ़नाक आवाज़ उनकी दुआ में मुखिल हुई। दूर से उठते हुए गर्द के बादल में गधों और आदमियों का क़ाफ़िला नज़र आया। उन्होंने अपनी लाग़र उँगली से जल्दी जल्दी आदमियों को गिनना शुरू किया। क्या बिनयमीन उनके साथ है या नहीं? उनका दिल कितना हलका हो गया जब उन्हें यक़ीन हो गया कि "हाँ! हाँ! बिनयमीन भी साथ ही है।" लेकिन अगले ही लमहे वह चौंक गए। "मेरे बेटों के पीछे पीछे गाड़ियाँ कैसी चली आ रही हैं? उफ़ यह कुत्ते!" हज़रत याक़ूब उनके पीछे चल पड़े। "चुप करो, बंद करो यह शोर।" लेकिन कुत्तों ने उनकी एक न सुनी। इस ग़ुल-ग़पाड़े में हज़रत याक़ूब का पूरा घराना उनके पास आ जमा हुआ। बच्चे क़ाफ़िले की तरफ़ भागे। सब के चेहरों पर मुसकराहटें नाच रही थीं। बच्चों की मिली-जुली आवाज़ें सुनाई देने लगीं, "वह आ गए हैं! ढेर सारा अनाज भी आ गया है!"

हज़रत याक़ूब ने सुख का साँस लिया। "रब की तारीफ़ हो जिसने इनका सफ़र मुबारक किया है।"

बिनयमीन ने दूर से ही हाथ हिलाते हुए पुकारा, "बाबा! हम एक बड़ी ख़ुशख़बरी लाए हैं।"

उसके भाइयों ने उसे ख़ामोश रखने की पूरी कोशिश की। वह नहीं चाहते थे कि उन्हें अपना क़ुसूर सारे क़बीले के सामने मानना पड़े। ज्योंही वह घर पहुँचे सारा ख़ानदान उनके इस्तक़बाल के लिए उमडा चला आया।

हज़रत याक़ूब ने बिनयमीन को सीने से लगा लिया। अभी वह शुक्रगुज़ारी की दुआ करने ही वाले थे कि उन्हें यह ख़बर सुनाई गई, "यूसुफ़ ज़िंदा है। हाँ सच-मुच ज़िंदा है।" हज़रत याक़ूब ने अपने बेटों पर हिक़ारतआमेज़ नज़र डालते हुए कहा, "शर्म करो अपने बाप से मज़ाक़ करते हो!"

बिनयमीन ने अपने बाज़ू बूढ़े बाप के गिर्द हमायल करते हुए कहा, "बाबा! यह सच है। देखो यह जो गाड़ियाँ हैं ना यह ख़ास तौर पर भाई यूसुफ़ ने आपको और सारे घराने को मिसर लाने के लिए भेजी हैं। और इन पर लदे हुए अनाज को तो देखो। यह सब ग़ल्ला मिसर के बादशाह फ़िरऔन ने आपको तोह्फ़े के तौर पर भेजा है। क्या अब भी आपको यक़ीन नहीं आया? यूसुफ़ भाई आपसे मिलने के लिए तड़प रहा है। उसने हमें कहा कि जल्दी से जाकर बाबा को मेरे पास ले आओ।"

हज़रत याक़ूब उन गाड़ियों, गाड़ीबानों और मुहाफ़िज़ों को यों तकने लगे गोया ख़्वाब देख रहे हों। और फिर जैसे वह एक झटके से बेदार हो गए। ज़िंदगी की एक लहर उनके पूरे वुजूद में दौड़ गई। उन्होंने पलटकर अपने बेटों की तरफ़ देखा जिन में बाप से आँखें मिलाने की जुर्रत न थी। हज़रत याक़ूब की तेज़ आवाज़ की काट नाक़ाबिले-बरदाश्त थी। "मेरा यूसुफ़ मिसर में कैसे पहुँचा?"

भाइयों के लिए इस सवाल के जवाब से फ़रार नामुमकिन था। जब उन्होंने देखा कि सारा क़बीला उनके गिर्द इकट्ठा हो गया है तो उनकी

बेचैनी और बढ़ गई। जब उन्होंने मजबूरन वह दर्दनाक कहानी सुनाई तो किसी को यक़ीन ही नहीं आ रहा था कि ऐसा भी हो सकता है। भाई हसद में अंधे होकर इतना ज़ुल्म भी कर सकते हैं। कुछ लोग तो इस सानिहे के तसव्वुर ही से काँप उठे।

हज़रत याक़ूब ग़ुस्से में भड़क उठे, "तो तुम लोगों ने इतने सालों से मुझे धोके में रखा हुआ था? और तुम में इतनी हिम्मत कहाँ से आई कि यूसुफ़ के मातम के वक़्त तुम मुझे तसल्ली देते रहे और मिसर से वापसी पर ख़ुद को ईमानदार कहते रहे?"

अगर ऐसे में बिनयमीन उनकी सिफ़ारिश न करता तो न जाने हज़रत याक़ूब कब तक यों ही गरजते रहते। "बाबा! यूसुफ़ भाई ने अपने भाइयों को माफ़ कर दिया है। आपके बेटों को माफ़ कर दिया है। इसलिए आप भी इन्हें माफ़ कर दें। ख़ुदा हमारे घराने के ज़ख़्म ज़रूर भर देगा। अब तो सब कुछ ज़ाहिर हो गया है।"

अब हज़रत याक़ूब के आँसू बहने लगे, "मेरे बेटो! अगर ऐसा है तो मैं भी तुम्हें माफ़ करता हूँ।" उस ज़ईफ़ आदमी ने अपने बाज़ू ख़ुशी से फैला दिए और प़र्ते-मुसर्रत से मग़लूब होकर पुकार उठे, "मेरा बेटा यूसुफ़ अभी तक ज़िंदा है। मरने से पहले मैं ज़रूर जाकर उसे मिलूँगा।"

सारा घराना ख़ुशी से फूला न समाया। सवाल-जवाब और क़हक़हे बुलंद हुए। बच्चे बेक़रारी के आलम में हालात की तफ़सील जानने के लिए तड़पते रहे। आख़िरकार सब पर यह हक़ीक़त वाज़िह हो गई कि

यूसुफ़ ज़िंदा है और वह मिसर का हाकिम बन गया है। और यह भी कि जल्द ही ख़ैमे उखाड़ लिए जाएँगे। सब यूसुफ़ के पास चले जाएँगे जहाँ ग़ल्ले की कसरत है। अब कोई फ़ाक़ों नहीं मरेगा। ख़ुदा ख़ुदा करके क़ाफ़िला मिसर की तरफ़ रवाना हो गया। रास्ता भर हज़रत याक़ूब यह याद कर करके ठंडी आहें भरते गए कि मेरा सत्रह-साला बेटा यूसुफ़ इसी रास्ते से ज़ंजीरों में जकड़ा ठोकरें खाता गिरता-पड़ता गुज़रा होगा। साथ साथ वह अल्लाह का लाख लाख शुक्र करते रहे कि इस तमाम अरसे में तूने यूसुफ़ की ज़िंदगी को अपने हाथ में रखकर रास्ता हमवार किया है।

यहूदाह हज़रत यूसुफ़ को यह इत्तिला देने के लिए पहले जा पहुँचा कि वह जुशन के मक़ाम पर आकर अपने घराने से मिलें। हज़रत याक़ूब को यह सफ़र निहायत सुस्तरफ़्तार मालूम हो रहा था। उनके दिल की धड़कनें क़ाफ़िले की रफ़्तार से कहीं ज़्यादा तेज़ थीं। वह अपने लख़्ते-जिगर से जल्द मिलने के लिए बेताब थे। उनकी निगाहें रास्ते पर जमी रहीं और दिल मुसर्रत-भरे नग़मे गाता रहा, "यूसुफ़ मेरे बेटे, मैं आ रहा हूँ।"

आख़िरकार क़ाफ़िला जुशन पहुँच गया। अब सब की आस बँधी थी कि किसी भी लमहे यूसुफ़ आएगा। हज़रत याक़ूब का दिल बुरी तरह से धड़क रहा था। उनके अंग अंग से ख़ुशी फूट रही थी। फिर इंतज़ार की घड़ियाँ ख़त्म हो गईं। सबने देखा कि दूर मिसरी अफ़सराने-बाला अपने

रथों में उनकी तरफ़ बढ़े चले आ रहे हैं। घुड़सवार मुहाफ़िज़ उनके गिर्द घेरा डाले हुए थे। हज़रत याक़ूब गाड़ी में खड़े हो गए। उनकी मुतलाशी निगाहों ने अपने बेटे यूसुफ़ की शाहाना शख़्सियत को पहचान लिया। वह यूसुफ़ ही था। उनका अपना यूसुफ़ जो उनकी तरफ़ आ रहा था।

"बाबा!"

"यूसुफ़!"

और अगले ही लमहे दुनिया से बेख़बर वह एक दूसरे की बाँहों में लिपट गए। बिछड़े हुए मुद्दतों बाद आज मिले थे। फ़िज़ा में सिसकियाँ उभरने लगीं। अजब जज़बात-अंगेज़ मंज़र था। 25 बरस का करब, क़ल्बी अज़ियत और तड़प सब कुछ इसी में समो गया। भीगी आँखों से बाक़ी लोगों ने बड़ी संजीदगी से इस मंज़र को देखा। आख़िरकार हज़रत याक़ूब ने यूसुफ़ बेटे को सामने खड़ा करके कहा, "मैंने तुम्हें देख लिया है, अब मैं सुख से मर सकूँगा।"

जब हज़रत यूसुफ़ सबसे मिल चुके तो कहने लगे, "अब मैं चलकर बादशाह को बताता हूँ कि तुम सब आ गए हो।" फिर भाइयों से मुख़ातिब होकर बोले, "भाइयो सुनो! अगर फ़िरऔन तुमसे तुम्हारे पेशे के मुताल्लिक़ पूछे तो उसे बता देना कि तुम चरवाहे हो। जब उसे तुम्हारे पेशे का इल्म हो जाएगा तो वह तुम्हें जुशन में रहने की इजाज़त दे देगा।" ख़ुद अलहदा रहने में उनकी भलाई थी। यों वह बुतपरस्तों में शादियाँ रचाने से महफ़ूज़ रह सकते थे।

जुशन में ठिकाना करने से पहले हज़रत यूसुफ़ बड़े फ़ख़्र से अपने बाप को फ़िरऔन से मिलवाने के लिए ले गए। मिसर में मुमताज़ होने के बावुजूद हज़रत यूसुफ़ अपने चरवाहे बाप को फ़िरऔन से बरतर समझते थे। जब हज़रत याक़ूब ने फ़िरऔन को ज़िंदा ख़ुदा के नाम में बरकत दी तो दरबार में मौजूद हर एक ने महसूस किया कि यह अल्लाह का ख़ास परस्तार है।

हज़रत याक़ूब का घराना चरवाहों के मामूल के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने लगा। हज़रत यूसुफ़ अकसर अपने बीवी-बच्चों समेत उन्हें मिलने के लिए आया करते थे। मनस्सी और इफ़राईम के लिए तो खुले मैदानों में अपने रिश्तेदार बच्चों के साथ खेलना एक बहुत बड़ी तफ़रीह थी।

एक दोपहर को हज़रत यूसुफ़ और हज़रत याक़ूब दिल खोलकर आपस में बातें कर रहे थे जब कि आसनत औरतों में बैठी ख़ुश-गप्पियों में मसरूफ़ थी। उनके बेटों की पुरमुसर्रत आवाज़ें दूर से सुनाई दे रही थीं। हज़रत यूसुफ़ ने अनार के रस की एक चुसकी ली और अपने बाप पर नज़र डाली जो चारपाई पर बड़े सुकून से बैठे हुए थे। बेटे ने अपने 130-साला बूढ़े बाप के झुर्रियों-भरे हाथ को थपथपाते हुए कहा, “बाबा, सिर्फ़ वही मेरी कैफ़ियत जानता है जिसने अपने बिछड़े हुए भाइयों को दुबारा पा लिया हो। और सिर्फ़ वही मेरी हालत जानता है जिसे बाप से छीन लिया गया हो और वह दुबारा मिल गए हों।” मायूसी के उन ऐयाम का ज़िक्र करते ही हज़रत यूसुफ़ की आँखों में उदासी के गहरे

साय छा गए। फिर उन्होंने अपने सर को ज़ोर से झटका दिया, "अल्लाह ने सब कुछ मिटा डाला। उसने मुझे उस नफ़रत से नजात दिलाई और इस तरह मैं उसके नाम को जलाल देने और उसकी ख़िदमत करने के क़ाबिल हुआ।"

और फिर जैसे अलफ़ाज़ हज़रत यूसुफ़ के मुँह से फूट पड़े, "बाबा! मैं महसूस करता हूँ कि मुझे सिर्फ़ अपने घराने ही का ख़याल नहीं रखना बल्कि पूरे मिसर को ख़ुराक की ज़रूरत है। ताहम मिसरियों की रूह की प्यास बुझाने के लिए लाज़िम है कि वह ज़िंदा ख़ुदा को जानें। मेरा नाम और मेरा काम अल्लाह की गवाही देता है।"

हज़रत याक़ूब की आँखें भीग गईं। वह दूर फ़ासिले पर खेलते बच्चों को देख रहे थे। "मेरे बेटे! ख़ुदा के लिए तुम्हारी राहनुमाई करना आसान था। तुम में फ़रमाँबरदारी की रूह थी। लेकिन मैं ऐसा नहीं था। मैं तो बड़ा ख़ुदसर नौजवान था। मैं जो कुछ चाहता था जायज़-नाजायज़ तरीक़े से हासिल कर लिया करता था।" बाप ने बड़े दुख से सर हिलाया। "आख़िरकार अल्लाह ने मेरी अना और मेरी रान दोनों को तोड़ दिया। अब मैं उसके क़रीब रहकर उसकी पैरवी करने का मुतमन्नी हूँ।" हज़रत याक़ूब ने अपनी दुबली-पतली उँगली उठाकर बात जारी रखी, "इसलिए मैं इसकी तसल्ली कर लेना चाहता था कि हमारा मिसर का सफ़र रब की मरज़ी के मुताबिक़ है या नहीं। चुनाँचे मैं यहाँ आते वक़्त बैर-सबा के मक़ाम पर रुक गया। उसी जगह पर अल्लाह मेरे बाप हज़रत

इसहाक़ पर ज़ाहिर हुआ था। वहाँ मैंने क़ुरबानी गुज़रानी और अल्लाह की परस्तिश की। रात को अल्लाह मुझे रोया में दिखाई दिया और पुकारकर कहा, 'याक़ूब! याक़ूब!'

मैंने जवाब दिया, 'मैं हाज़िर हूँ'।

फिर रब ने कहा, 'मैं अल्लाह हूँ, तेरे बाप इसहाक़ का ख़ुदा। मिसर जाने से मत डर, क्योंकि वहाँ मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा। मैं तेरे साथ मिसर जाऊँगा और तुझे इस मुल्क में वापस भी ले आऊँगा। जब तू मरेगा तो यूसुफ़ ख़ुद तेरी आँखें बंद करेगा'।"

हज़रत यूसुफ़ मुसकरा दिए, "बाबा! मैंने कभी रोया नहीं देखा और न अल्लाह कभी मझसे बुलंद और वाज़िह आवाज़ में मुख़ातिब ही हुआ है। फिर भी उसका रूह मझसे हमकलाम होता है और अल्लाह की मरज़ी मुझ पर आशकार कर देता है। अल्लाह मेरे लिए एक ठोस हक़ीक़त है।"

अगरचे हज़रत याक़ूब बहुत बूढ़े हो चुके थे बल्कि कमज़ोरी के बाइस क़रीबुल-मौत थे, लेकिन यूसुफ़ की मौजूदगी ने गोया उनके मुरदा जिस्म में अज़ सरे-नौ ज़िंदगी की रूह फूँक दी थी। यही वजह थी कि वह मिसर में सत्रह बरस और ज़िंदा रहे। कह्त के इस संगीन दौर में भी हज़रत याक़ूब अपने क़बीले को बढ़ता और फलता-फूलता देखकर बहुत ख़ुश होते थे। अल्लाह उन्हें हर चीज़ कसरत से फ़राहम कर रहा था।

वक़्त गुज़रता गया और हज़रत याक़ूब का जिस्म ढलता चला गया। वह बार बार बीमार पड़ जाते थे। हर बार हज़रत यूसुफ़ फ़ौरन आकर

बड़े फ़िकर से उनकी चारपाई के पास बैठे रहते थे। एक दफ़ा यों ही अलालत के दौरान हज़रत याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत देकर उन्हें अपने बेटे बना लिया। इस तरह हज़रत यूसुफ़ मुल्के-मौऊद में दोहरे हिस्से के वारिस क़रार पाए। यों वह पहलौठा होने का दुगुना हिस्सा लेने के हक़दार ठहरे।

और फिर वह करबनाक घड़ी आ पहुँची जिसके इंतज़ार में सब थे। हज़रत याक़ूब का जिस्म बेजान होने लगा। तब उनकी रूह की बेचैनी बढ़ गई, और उन्होंने हर एक बेटे को नाम बनाम पुकारकर उसके मुस्तक़बिल से उसे आगाह किया। वह घड़ी कितनी मुक़द्दस थी जब यहूदाह का नाम पुकारा गया। उन्होंने अपनी वाज़िह आवाज़ में कहा कि "शाही असा यहूदाह से दूर नहीं होगा बल्कि शाही इख़्तियार उस वक़्त तक उसकी औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम यानी अल-मसीह न आए जिसके ताबे क़ौमें रहेंगी।" हज़रत याक़ूब ने यूसुफ़ को भी अपनी ख़ास मुहब्बत के हवाले से याद किया।

जब बुज़ुर्ग याक़ूब यह तमाम बातें कर चुके तो उनकी रूह परवाज़ कर गई। उनकी वफ़ात से पूरे ख़ानदान को यों महसूस हुआ जैसे घराने का मरकज़ी सतून गिर पड़ा हो। उन ही ने सबको मुत्तहिद कर रखा था। हज़रत यूसुफ़ के लिए तो बाप की जुदाई नाक़ाबिले-बरदाश्त थी। यह जुदाई जो पहले आरिज़ी थी अब दायमी हो गई थी। वह बाप के मुरदा जिस्म से लिपट गए और दीवानावार उनका मुँह चूमने लगे।

हज़रत याक़ूब ने मरने से पहले अपने बेटे यूसुफ़ से अहद लिया था कि उन्हें कनान की ग़ार में दफ़न किया जाए। फ़िरऔन ने हज़रत याक़ूब के लिए मातम करने का हुक्म सादिर किया। मिसरी सत्तर दिन तक इस बुज़ुर्ग के लिए नोहा करते रहे। फिर उनकी हनूत-शुदा लाश को कनान ले जाया गया। बादशाह के आला अफ़सरान और दरबार के मंसबदार इस ग़ैरसरज़मीन में तीन सौ मील का कठिन सफ़र तय करके पहुँचे।

जब जनाज़ा लियाह के पास ग़ार में उतारा जा रहा था तो हज़रत यूसुफ़ को बचपन की ख़ुशियाँ याद आईं। उन्होंने सोचा कि अल्लाह की राहें कितनी अजीब हैं। जब माँ राख़िल ज़िंदा थी तो वह अपने ख़ावंद के दिल पर हुकूमत करती थी। हाँ, हज़रत याक़ूब उस पर अपनी सारी मुहब्बत निछावर करते थे। लेकिन वह अरसा पहले उनकी ज़िंदगी से निकल गई और बैत-लहम के क़रीब रास्ते में दफ़न हुई। और अब हज़रत याक़ूब लियाह के पहलू में हमेशा की नींद सो रहे हैं।

जब सोगवार इस ग़ार से रुख़सत हुए तो हज़रत यूसुफ़ ने पलटकर एक नज़र बाप की क़ब्र पर डाली और सोचने लगे, "बाबा यहाँ बनी-इसराईल की वापसी का इंतज़ार करेंगे। वह यक़ीनन वापस लौटेंगे और अल्लाह उन्हें यह सरज़मीन विरासत के तौर पर अता करेगा।"

हज़रत याक़ूब की मौत और मातम के तवील अरसे ने पूरे घराने को मसरूफ़ रखा। लेकिन जब हज़रत यूसुफ़ के भाई बाप को दफ़नाकर घर लौटने लगे तो वह बहुत बेचैन हुए। वह एक दूसरे से कहने लगे,

"अब जब कि बाबा मर चुके हैं तो यूसुफ़ यक़ीनन हमसे बदला लेगा। सिर्फ़ बाप की वजह से उसने बरादराना उलफ़त का निक़ाब ओढ़ रखा था। अब वह हमें समझ लेगा। ऐसे ज़ुल्म को यों माफ़ कर देना जैसे बज़ाहिर यूसुफ़ ने किया है इनसान के लिए नामुमकिन है।" लिहाज़ा मिसर में पहुँचकर उन्होंने हज़रत यूसुफ़ को कहला भेजा कि "मरने से पहले हमारे बाप ने हमें कहा था कि हम आपसे माफ़ी माँगें। मेहरबानी से अपने भाइयों का जुर्म माफ़ कर दें जिन्होंने आपके साथ बहुत बुरा सुलूक किया था।"

जब हज़रत यूसुफ़ ने यह पैग़ाम पढ़ा तो वह रोने लगे। शिकस्ता-ख़ातिर होकर वह चिल्ला उठे, "वह अभी तक यही सोच रहे हैं कि मैंने मुहब्बत का ढोंग रचा रखा है। उफ़ ख़ुदाया, वह कब मेरी मुहब्बत को पहचानेंगे?"

आसनत ने जब उनकी यह हालत देखी तो वह चिलमची में पानी और तौलिया ले आई ताकि वह मुँह धोकर ताज़ादम हो जाएँ। उसने शौहर को प्यार से गले लगा लिया और बोली, "वह अपने भाई के प्यार-भरे दिल को बिलकुल नहीं जानते। बेहतर यही होगा कि हम उनकी दावत करें। इस तरह वह आपके साथ खुलकर बात कर लेंगे।"

हज़रत यूसुफ़ को आसनत का मशवरा अच्छा लगा। पस एक पुर-तकल्लुफ़ ज़ियाफ़त का एहतमाम किया गया। खाना बड़े अच्छे तरीक़े से तैयार किया गया। फूलों की ख़ुशबू और मौसीक़ी की मधुर तानें

फ़िज़ा में सहर घोलने लगीं। जब ऐसे में हज़रत यूसुफ़ के भाई घर पहुँचे तो सब के सब बुरी तरह सहमे हुए थे। परेशानी में वह फिर अपने भाई के क़दमों पर गिर गए। शमाऊन ने काँपती हुई आवाज़ में कहा, "हम आपके ग़ुलामों की हैसियत से आपके सामने हाज़िर हैं।"

आसनत फ़ौरन सतून के पीछे छुप गई। यह मंज़र उसके लिए नाक़ाबिले-बरदाश्त था। वह उन्हें इस तरह उस भाई के सामने गिड़गिड़ाते हुए नहीं देख सकती थी जो उनको दिलो-जान से चाहता था। उसने हज़रत यूसुफ़ को उन्हें बड़ी गरमजोशी से यक़ीन दिलाते हुए सुना। "मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! तुमने मुझे नुक़सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की। और अब इसका मक़सद पूरा हो रहा है। बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं। चुनाँचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को ख़ुराक मुहैया करता रहूँगा।"

"आमीन" आसनत ने धीरे से कहा। सबने मिलकर खाना खाया। दावत बड़ी कामयाब रही। यों लगता था कि आज मुद्दत बाद भाइयों को अपना भाई यूसुफ़ मिला है। चाहनेवाला, बेलौस भाई यूसुफ़।

वादे जो वफ़ा हुए

मिसर की शदीद गरमी में जुशन सुलग रहा था। हज़रत यूसुफ़ अपने छोटे बेटे इफ़राईम के साथ रहते थे। अब तो इफ़राईम भी दादा बन चुका था। उसने घर का सारा इंतज़ाम अपने बेटे को सौंप रखा था। अब वह आराम करता था और अपने पोते-पोतियों के साथ मिलकर लुत्फ़अंदोज़ होता था। ख़ूब मज़े में ज़िंदगी बसर हो रही थी। हज़रत यूसुफ़ इतने ज़ईफ़ होने के बावुजूद अब भी सुबह जल्दी उठते थे। आज भी वह तुलू होते हुए सूरज को देख रहे थे। उनकी उम्र 110 बरस थी और उनके ख़यालों में हर वक़्त आसमानी घर का ख़याल समाया रहता था। अल्लाह ने उनके साथ हमेशा भलाई की थी। उन्होंने अपने पोते-परपोते भी देख लिए थे। और उनको यों बढ़ते, हंसते-खेलते, लड़ते-झगड़ते और प्यार जताते देखना अल्लाह की तरफ़ से एक बहुत बड़ा एज़ाज़ था। मनस्सी और इफ़राईम के घराने के लोग हर वक़्त उन्हें मुहब्बत से घेरे रहते थे। इस ख़याल से ही बूढ़े यूसुफ़ के होंटों पर मुसकराहट फैल जाती थी।

हसबे-मामूल वह सुबह के वक़्त दुआ में झुक गए। अब भी अबदी जहान के ख़याल से उनका दिल इतमीनान से मामूर था। उन्होंने सोचा कि जल्द ही मैं भी अबदी जहान में आसनत और अपने वालिदैन से जा मिलूँगा। वह इस दुनिया से जाने के लिए बिलकुल तैयार थे।

घर में ज़िंदगी अपनी पूरी गहमा-गहमी के साथ रवाँ-दवाँ थी। आलीशान इमारत में ग़ुलामों के आते-जाते क़दमों की तेज़ तेज़ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। नाश्ता तैयार हो रहा था जिसकी ख़ुशबू से सारी फ़िज़ा महकी हुई थी। इसके साथ ही बरतनों के ठनठनाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। माली बाग़ को पानी दे रहे थे। हज़रत यूसुफ़ ने बड़े फ़ख़्र से माली को देखा जो बावरचीख़ाने में ताज़ा सब्ज़ियाँ लेकर जा रहा था। अरसे से लोग कह्त के तवील सालों को भूल चुके थे। इसके साथ ही हज़रत यूसुफ़ के अज़ीम कारनामे को भी भुला दिया गया था जिन्होंने कितनी ही ज़िंदगियों को बचाया था। अब जब कि वह छड़ी पर झुके हुए आहिस्ता आहिस्ता उसे टेकते हुए बाग़ की भीगी घास पर से गुज़र रहे थे सब कुछ याद करके उन्होंने ठंडी साँस भरी। लोग सब कुछ भुला देते हैं। इनसान ख़्वाह कितनी भी शोहरत क्यों न हासिल कर ले बहुत जल्द गुमनाम हो जाता है। जो लोग किसी के सामने कुछ देर सर झुकाए रहते हैं वक़्त गुज़रने के साथ उनकी कोई अहमियत नहीं रहती। लेकिन वाह! अल्लाह अपने लोगों को कभी नहीं भूलता। यही सबसे बड़ी बात है।

हज़रत यूसुफ़ के चेहरे पर दुख के साय लहराने लगे। अब उन पर बुरा वक़्त आनेवाला था। नया फ़िरऔन बनी-इसराईल को अच्छा नहीं समझता था। यह ग़ैरमुल्की मिसर के अच्छे हिस्से पर क़ाबिज़ थे। यह सोचते सोचते हज़रत यूसुफ़ खजूर के एक दरख़्त के नीचे रुक गए। उन्हें हदे-निगाह तक अपने लोग इंतहाई ख़ुशहाल मालूम हो रहे थे। जहाँ बनी-इसराईल की तादाद में बेशुमार इज़ाफ़ा हुआ था वहाँ हज़रत यूसुफ़ की मुहाफ़ज़त में उन्होंने बेपनाह तरक़्क़ी भी की थी। इसके अलावा अब मिसर की सरज़मीन में उनकी जड़ें बहुत गहरी हो चुकी थीं। अकसर लोग अल्लाह की मौऊदा सरज़मीन कनान को भुला चुके थे। अचानक हज़रत यूसुफ़ को ख़याल आया कि हो सकता है ख़ुदा लोगों के इस पुरसुकून घरौंदे को तोड़ने के लिए ईज़ारसानी का हरबा इस्तेमाल करे।

इसी लमहे उनके दो पोते उछलते-कूदते उस तरफ़ आ निकले। बड़ा बच्चा रोते हुए उनसे कहने लगा, "दादा-ाब्बू! इसे कहिए ना कि मेरी छड़ी मुझे वापस दे दे।"

लेकिन छोटा बड़ा शरीर था। उसने झट से हज़रत यूसुफ़ के ज़ईफ़ बदन के पीछे पनाह ले ली और चमकती हुई शरारत-भरी आँखों से देखते हुए बोला, "मुझे कुछ मिसरी हुरूफ़े-तहज्जी लिखने आते हैं। देखो मैं लिखता हूँ।" उसने जल्दी से झुककर कीचड़-भरी ज़मीन पर लिखना शुरू किया। ऐसे में उसकी लाल-बोटी ज़बान उसके होंटों से बाहर लटक रही थी।

उसके बड़े भाई ने बड़े तंज़ से कहा, “इन कीड़ों-मकोड़ों को तुम लिखाई कहते हो? हा! हा! हा! और इस पर तुम हाकिमे-मिसर बनने चले हो जैसे कभी हमारे बड़े दादा-अब्बू थे क्या?” हज़रत यूसुफ़ ने उस शैतान को ख़ामोश करवा दिया और उसके झुके हुए नन्हे सर को थपथपाते हुए कहने लगे, “बड़ा नाम और बड़ा ओहदा हासिल करना इतना ज़रूरी नहीं है। असल बात यह है कि हम वह काम करें जो अल्लाह ने हमें करने को दिया है और फिर इस काम को अपनी पूरी ताक़त से करें।”

फिर वह छोटे लड़के का हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोले, “बच्चो! यह बात कभी न भूलना कि मिसर हमारा वतन नहीं है। एक दिन हम ज़रूर कनान वापस जाएँगे। उस मुल्क में जिसे अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम, हज़रत इसहाक़ और हज़रत याक़ूब को देने का वादा किया है।” फिर उन्होंने बड़े हौसलाअफ़्ज़ा अंदाज़ में सर हिलाते हुए कहा, “उस दिन के लिए तैयार रहो। अगर तुम मिसर में रह गए तो अल्लाह के लोगों में शुमार नहीं किए जाओगे। ख़ुदा तुमसे मुहब्बत करता है। तुम्हें भी उससे प्यार करना चाहिए।”

इसके बाद जब हज़रत यूसुफ़ इफ़राईम के घरवालों के साथ बैठे नाश्ता कर रहे थे तो उनकी तशक्कुरआमेज़ निगाहें अपने बेटे के चेहरे पर ठहर गईं। अल्लाह ने उन पर और आसनत पर बड़ा फ़ज़्ल किया था कि वह अपने बेटों को बनी-इसराईल में शामिल करने के क़ाबिल

हो सके। हज़रत यूसुफ़ की उनके लिए यही सबसे बड़ी तमन्ना थी। आसनत ने बच्चों को अपने बाप के घराने के फ़रद बनने में उनकी बड़ी राहनुमाई की थी।

सिहपहर के ख़ुनुक और ख़ुशगवार लमहात में एक रथ इमारत के सामने आकर रुका। दो मिसरी मेहमान हज़रत यूसुफ़ से मिलने आए थे। जुमर जो कभी सरकारी अफ़सर हुआ करता था और उसके साथ उसका पोता।

"मेरे आक़ा" कहकर जुमर ने हज़रत यूसुफ़ को गले लगा लिया जब कि नौजवान ने अदब से झुककर सलाम किया।

हज़रत यूसुफ़ ने अपने पुराने दोस्त की ख़ूब आवभगत की। इस दौरान में वह अपने माज़ी को याद करते रहे जब दोनों की ताक़त उरूज पर थी।

जुमर ने दुख से अपने सर को झटका देते हुए कहा, "इतने आला ओहदों पर फ़ायज़ रहने के बावुजूद आज हम कहाँ हैं! बुढे-खूसट जो यह भी भूल जाते हैं कि हम क्या कहनेवाले थे। और बेवक़्त सो जाते हैं। इनसान की ज़िंदगी भी क्या है!"

जुमर के पोते ने लुक़मा दिया, "आलीजाह! मैं समझ रहा था कि आप मिसर के आला तबक़े के लोगों में रह रहे होंगे। लेकिन इस मुल्क में 93 बरस गुज़ारने के बावुजूद अभी तक आप कट्टर इबरानी हैं। बड़ी अजीब बात है! आपका नाम भी मिसरी है और ख़िताब भी। आपकी

शादी भी मिसरी दोशीज़ा से हुई। आपने मिसरी दरबार, सियासत और तिजारत में भी शिराकत की, फिर भी अपने ख़ानदान के दूसरे लोगों की तरह आप इबरानी ही रहे। ऐसा क्यों?"

हज़रत यूसुफ़ के चेहरे पर मुसकराहट फैल गई। "हमारा ख़ुदा ज़िंदा ख़ुदा है। वही ख़ुदा जो इनसान से हमकलाम होता है, उसने हमें अपनी ख़ातिर अलग कर रखा है।"

जुमर ने कहा, "जहाँ तक मैंने देखा है इबरानी भी उन ही देवताओं की परस्तिश कर रहे हैं जिनको हम पूजते हैं। मैंने ग़लत तो नहीं कहा?"

हज़रत यूसुफ़ से कुछ जवाब बन न पड़ा। उन्हें इसकी तसदीक़ करनी पड़ी। उन्हें इस बात से बड़ा दुख हो रहा था कि बनी-इसराईल अपने बापदादा के ख़ुदा की इबादत के साथ साथ बुतों को भी पूजते हैं। वह जानते थे कि रब ख़ुदा ग़यूर ख़ुदा है और वह किसी क़ीमत पर इस फ़ेल को बरदाश्त नहीं करेगा।

वह अभी इन ही ख़यालों में गुम थे कि जुमर की आवाज़ ने उन्हें चौंका दिया। "मेरे दोस्त! मैं तुम्हें ख़बरदार करने आया हूँ क्योंकि मुझे मोतबर ज़राए से इत्तिला मिली है कि नया फ़िरऔन तुम्हारे घराने का जानी दुश्मन है। जल्द ही तुम सबको ग़ुलाम बना लिया जाएगा और तुम लोगों से इमारतें और अहराम तामीर कराने का काम लिया जाएगा। या फिर खेतों और ज़मीनदोज़ कानों में ग़ुलामी करनी होगी। देवता तुम पर रहम करें।"

हज़रत यूसुफ़ जानते थे कि जुमर सच कह रहा है। जब उनका दोस्त चला गया तो उन्होंने अपनी तमाम फ़िकरें अल्लाह के हुज़ूर पेश कर दीं क्योंकि वही उनके लोगों का वाहिद सहारा था। उन्हें यक़ीन था कि जिस ख़ुदा ने उनकी ज़िंदगी के लिए एक कामिल मनसूबा तैयार कर रखा था उनकी औलाद के लिए भी उसने ज़रूर ऐसा ही मनसूबा बना रखा होगा। ताहम जुशन पर ख़ौफ़ के बादल गहरे होते जा रहे थे।

अब हज़रत यूसुफ़ की सेहत रोज़ बरोज़ गिरती जा रही थी और यहाँ तक कि वह बिलकुल ही बिस्तर पर पड़े रहते थे। तबीयत की ख़राबी ने उनकी रही-सही ताक़त भी ज़ाइल कर दी थी। दहशतज़दा होकर उनके घराने के लोग उनके गिर्द जमा होकर आहो-ज़ारी करने लगे, "बुज़ुर्ग यूसुफ़! हमारा क्या बनेगा? अगर फ़िरऔन ने हमें ग़ुलाम बना लिया तो वह हमें कोड़े मार मारकर मक्खियों की तरह मसल डालेगा। अब तो इतनी देर हो गई है कि इस मुल्क को छोड़ा भी नहीं जा सकता। फ़िरऔन का लशकर हमें कभी भी कनान वापस नहीं जाने देगा।"

हज़रत यूसुफ़ अगरचे नक़ाहत महसूस कर रहे थे ताहम अल्लाह पर ठोस ईमान की क़ुव्वत से उन्होंने ख़ुद को सँभाला और अपने लोगों को यों तसल्ली दी, "हम मिसर में मुसाफ़िर हैं। जब अल्लाह का मुक़र्ररकरदा वक़्त आएगा तो वह यक़ीनन तुम्हारे वतन कनान तक पहुँचने में तुम्हारी राहनुमाई करेगा। अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ ने मेरे बाबा

याक़ूब के साथ ख़ुद वादा किया था : 'मैं तेरे साथ मिसर को जाऊँगा और फिर तुझे ज़रूर लौटा भी लाऊँगा'।"

फिर बिलआख़िर हज़रत यूसुफ़ ने महसूस किया कि उनका आख़िरी वक़्त आ पहुँचा है। चुनाँचे उन्होंने अपने क़बीले से कहा, "मैं मरने ही वाला हूँ। लेकिन अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा और इस मुल्क से निकालकर उस वतन में ले जाएगा जिसके देने का वादा उसने हज़रत इब्राहीम, हज़रत इसहाक़ और हज़रत याक़ूब से किया है।"

हज़रत यूसुफ़ की आँखें अपने महबूब ख़ुदा से मुलाक़ात के तसव्वुर से ही चमकने लगीं। उस ख़ुदा के तसव्वुर से जिसके साथ वह चलते रहे थे। जिसकी उम्र भर उन्होंने ख़िदमत की थी। वह तो इसी लमहे के लिए जी रहे थे। फिर वह उनसे मुख़ातिब होकर कहने लगे, "मझसे वादा करो कि जब अल्लाह तुम्हें मुल्के-कनान में लेकर जाए तो तुम मेरा जसदे-ख़ाकी अपने साथ लेकर जाओगे।" फिर उन्होंने आख़िरी हिचकी ली और दम तोड़ दिया। अब वह उस शहर में चले गए थे जिसकी बुनियादें चटान पर रखी हैं। उनकी हनूत-शुदा लाश को ताबूत में रख दिया गया। मातम करते वक़्त उनकी तमाम नेकियाँ और मुहब्बत याद आईं।

हज़रत यूसुफ़ की मैयित को दफ़न न किया गया बल्कि इस तरह तैयार रखा गया कि ज्योंही अल्लाह की तरफ़ से बनी-इसराईल को ख़ुरूज का हुक्म हो उसे साथ ले जाया जा सके।

तक़रीबन 200 साल तक हज़रत यूसुफ़ की लाश उस घड़ी का इंतज़ार करती रही जब अल्लाह हज़रत याक़ूब की औलाद को अपने वादे के मुताबिक़ मुल्के-कनान वापस ले जाएगा। यह वादा उस वक़्त पूरा हुआ जब वह हज़रत मूसा की क़ियादत में मिसर से कूच करके अपने वतन वापस आ गए। अल्लाह कितना वफ़ादार है कि 200 साल के बाद भी अपना वादा पूरा करके छोड़ता है।

अंजामे-कार हज़रत यूसुफ़ की मैयित को सिकम में पहुँचा दिया गया जहाँ उनके बाप हज़रत याक़ूब ने हारान से आते हुए अपना पहला पड़ाव डाला था। हज़रत यूसुफ़ की बाक़ियात को उस ख़ित्ताए-ज़मीन में दफ़न किया गया जो हज़रत याक़ूब ने सिकम के बादशाह से ख़रीदा था। उनकी क़ब्र अल्लाह की वफ़ादारी का वाज़िह सबूत है कि उसने अपने सारे वादे पूरे कर दिए।